पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक 69–70 (संयुक्तांक) सितं0–दिसं0 2013

संरक्षक मण्डल–

जे.जे. राजपूत (गुजरात), तुषारकान्त उपाध्याय (बिहार), राजगुप्त एवं धीरा प्रसाद यादव (उ0प्र0)

प्रबन्ध संपादक

प्रगति द्विवेदी

उप–संपादक

विष्णुदेव तिवारी

सह–संपादक

हीरा लाल 'हीरा'

सान्त्वना, सुशील कुमार तिवारी

डिजाइन आ ग्राफिक्स

आस्था

कंपोजिंग

कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट, भृगु आश्रम–बलिया

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी

डा0 ओम प्रकाश सिंह

संपादक

डा0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन

अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

विशेष प्रतिनिधि

सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), डा० अरूण मोहन भारवि (बक्सर), रामयश अविकल (आरा), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), गंगा प्रसाद 'अरूण', अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० वशिष्ठ अनूप, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), आनन्द संधिदूत (मिर्जापुर), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), शशि प्रेमदेव (बलिया), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त (सलेमपुर, देवरिया), प्रशान्त द्विवेदी (कोलकाता)।

संपादन-कार्यालय :-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१

फोन– 05498–221510, मो0– 08004375093, 9919426249

e-mail :- ashok.dvivedipaati@gmail.com

एह अंक पर सहयोग– 50/–

सालाना सहयोग राशि (डाक सहित) 150/–

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में........

हमार पन्ना

- साहित्यिक नजरिया आ मूल्यांकन / 3
- भोजपुरी के सौभाग्य आ दुर्भाग्य / 3–4

सामयिकी

- बिहार भोजपुरी अकादमी के विवादित महोत्सव पर / 6
  रामजी पाण्डेय अकेला / 7, तैयब हुसैन 'पीड़ित' / 7–9
  बरमेश्वर सिंह / 10–12, डॉ0 अरूण मोहन 'भारवि' / 12–13

दखलंदाजी

- सेकुलर बाबा के छतरी / शिलीमुख / 5

विमर्श

- एक बेर फेर कबीर / डॉ0 गदाधर सिंह / 17–19

चिन्तन

- सोचे क बेरा / डॉ0 शैलेन्द्र कु0 त्रिपाठी / 16

कहानी

- जीवन संगीत / रामदेव शुक्ल / 20–22 , ● पाहुन / रमाशंकर श्रीवास्तव / 23–25 ,
- साँच के परतीति / अशोक द्विवेदी / 26–33, ●बिना ओरिचन के खटिया / विष्णुदेव तिवारी / 34–36
- ब्रह्मलूक / कृष्ण कुमार / 57–60, ● बाबा के टोपरा / अयोध्या प्रसाद उपाध्याय / 61–64,
- सइंचल सपना / रमेश चन्द्र श्रीवास्तव / 65–68, ● हम तबे बानी / तुषारकान्त उपाध्याय / 69–70

कविता/गीत/गजल

- आनन्द सन्धिदूत / 75, ● अशोक द्विवेदी / कवर–2 अक्षय कुमार पाण्डेय / 14
- शशि प्रेमदेव / 43, ● हीरालाल 'हीरा' / 47 ● रामयश अविकल / 19
- ललित बिहारी मिश्र / 22, ● ओमजी प्रकाश / 64 ● नवचन्द्र तिवारी / 14
- शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 56, ● कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' / 71,

लघुकथा

- संपति के वारिस / विनोद द्विवेदी / 70
- गान्ही जी के चश्मा / राजगुप्त / 74–75, आखिरी व्रत / विनोद द्विवेदी / 74

समालोचना

- समकालीन भोजपुरी साहित्य / डॉ0 तैयब हुसैन पीड़ित / 37–43
- समकालीन भोजपुरी कथा साहित्य आ नाटक / डॉ0 अशोक द्विवेदी / 48–56
- भोजपुरी लघुकथा सर्वेक्षण / अतुल मोहन प्रसाद / 44–47

हमार जनपद

- हमार सोनघाटी / अजय चतुर्वेदी 'कक्का' / 72–73

किताब–चर्चा

- 'अथ लुकाठी कथा अउर बोतलदास के बयान / विष्णुदेव / 76–77,
- बरमूदा तिकोन, अनसोहातो, पतझड़ के फूल, गाँव क बात, भंडार घर, लिखल बा / सुशील तिवारी / 77–78
- भोजपुरी संस्कृति रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल', भोजपुरी गद्य साहित्य के स्वरूप सामग्री,
- भारतीय आर्यभाषा भोजपुरी / सान्त्वना / 78–79 अंगना महुआ झरल, जब तोप मुकाबिल,
- मुठ्ठी भर मोह, 'कथा मंजूषा' / सुशील एवं हीरालाल / 79

सांस्कृतिक समाचार

- मध्यप्रदेश भोजपुरी साहित्य अकादमी / 80

[एक] साहित्यिक नजरिया आ मूल्यांकन

महानगरन में रहे आ जिये वाला हिन्दी, अंग्रेजी के कुछ कवि आलोचक अपना सुविधा आ समझ का अनुसार ,कवनो अवसर पर 'लोक', 'लोकजीवन' आ संस्कृति के बात करेला आ मन मुताबिक अपना खास नजरिया से ओकर इस्तेमालो अपना भासन में करेला।

लोकभाषा में वाचिक भा सिरजल–लिखित साहित्य के आधुनिक आलोचक दृष्टि से देखे क मतलब ई ना होला कि ओके ओकरा मूल समय–सन्दर्भ आ परिवेश से काट दिहल जाव। भोजपुरी भा कवनो लोक भाषा के कवि, तमाम बदलाव का बादो, अगर केहूँ, तरे अपना ओक आ जीवन–संस्कृति से आत्मिक रूप से जुड़ल बा; त खेत–बारी, ताल–तलैया, नदी–पहाड़, बन–बनस्पति से विलग ना होई। अइसहीं ऊ, महानगरन में शहरी ढंग से जिये वाला कवि आलोचक लेखा, गाँव–देहात के ऋतुचक्र, उत्सवधर्मिता आ संवेदनशीलता का प्रति निठोठ–बौद्धिक, कठकरेज आ उदासीन ना होई।

अगर शहरी –महानगरी कवि के भोजपुरी कविता आ साहित्य खाली 'वेदर रिपोर्ट' लागी त भोजपुरी भा दोसर लोकभाषाई गँवई कवि के, शहरी–महानगरी कविता बौद्धिक, बनावटी शुष्क आ संवेदनहीन काहें ना लागी? कविता में विचार समाये भर आ सांकेतिक रूप में आवे तबे अच्छा बा। घटना शहर में घटेले त गाँवों देहात में घटेले। संवेदना गँवई आ शहरी दूनो के होले। दूनों के माहौल, जीवन शैली आ ढंग–ढर्रा अलग हो सकेला। अइसहीं दूनों के अभिव्यक्तियो अपना समय–सन्दर्भ में, अपना अपना खासियत का साथे होई। सुभाविक आ बनावटी के पहिचान समझदार पाठक क लेला।

कुछ कवि–आलोचक लोगन का एतराज बा कि भोजपुरी कवि प्रकृति, ऋतुचक्र का अनुसार बदलत मौसम के 'कविता' से बहरियावत काहें नइखे ? एही तरे ई लोग अपना साहित्य में खाली 'गाँवे' कस्बा के नापत काहें रहि जाता ? एह लोग का जानकारी में इहे बा कि भोजपुरी में मजिगर गद्य लिखाते नइखे। खैर..... भोजपुरी गद्य भा निबन्ध– साहित्य

भोजपुरी पढ़े–लिखे वालन के पता होई, एह लोगन का ओतना पता नइखे, ना ऊ लोग भोजपुरी में गद्य लिखते पढ़त बा।

हमके कबो–कबो इहे बुझाला कि ई लोग भोजपुरी में भले बोल–बतिया लेव, बाकि भोजपुरी पढ़ला आ लिखला का पजरा एकदमे ना जाला। ओही से जब–जब भोजपुरी प' दया आवेला त ई लोग अपना अंग्रेजी–हिन्दी के पचल–अधपचल ज्ञान आ पढ़ाई का मोताबिक भोजपुरी साहित्य का मूल्यांकन में, अइसने मृदु बोल बोलेला। हम ए मजबूरी के बूझत, अपना भाषा पर, ओह लोग के एह 'वत्सल' 'कृपा दृष्टि' से सब्बुर करे क आदत डाल लेले बानी।

●●●

[दू] भोजपुरी के सौभाग्य आ दुर्भाग्य

भोजपुरी के सौभाग्य बा कि एम्मे एक से एक महात्मा संत, प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ, विद्वान, हुनरमन्द कलाकार, वैज्ञानिक आ समाज सेवियन क लमहर कतार बा। विशाल भू–भाग, नदी–पहाड़ आ कृषि संपदा बा। वाचिक संपदा का साथ सिरजल साहित्य बा बाकि भोजपुरी के दुर्भाग्य ई बा

कि सबकुछ का बादो एकर अपने कहाये वाला लोग जाने अनजाने एकर कुआदर आ उपेक्षा कइले बा। अपना मातृभाषा का दिसाईं लोगन में ऊ चेतना नइखे, जवना से एकर भाषिक अस्मिता सम्मानजनक स्थान पावे। हमनी के कूप–मण्डूक स्थिति से निकलतो बानी जा त अपना भाषा के 'बहता नीर' बनवला आ ओह नीर का महत्व बढ़वला से हिचकिचात बानी जा।

भोजपुरी क कतने समूह, संस्था, सम्मेलन, अउर अकादमी, बनली स, बलुक कुछ कथित रूप से राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीयो कहाये लगली स; बाकि स्वारथ, गोलबन्दी आ निजी एक्सपोजर से ऊपर उठि के रचनात्मक विस्तार के सोगहग उदाहरन ना बन पवली स। एकरा साहित्यिक सांस्कृतिक आ कला क्षेत्र के स्वयंभू नेतृत्व के पुछहीं के नइखे, ऊ 'अच्छा' के 'अच्छा' माने आ कहे के छोड़ीं, ओके उपेक्षित करे मे कवनो कोर–कसर नइखे छोड़त। 'पाती' बत्तीस बरीस से साहित्यिक मंच का रूप में अपना भूमिका निर्वाह का साथ सामाजिक आ सांस्कृतिको पक्ष के लेके सचेत रहल बिया। एह अंक में एही अस्मिता–चिन्तन का बहाने, ''बिहार भोजपुरी अकादमी'' का मौजूदा क्रिया कलाप पर भोजपुरी जगत के हलचल शामिल कइल गइल बा।

एह अंक के 'कथा–विशेषांक' कहला का पाछा कारन अतने बा कि बिना कवनो पूर्व घोषणा आ बिना कवनो विशेष आयोजन के आठ गो कहानी आ पॉच छव गो लघुकथा प्रकाशन खातिर आ गइली स। हर रचना के आपन खासियत आ सवाद रहे। साँच कहल जाव त कहानी–खिस्सा कहे क सभकर अलग अलग अंदाज होला बाकिर एह अंदाज में जब नया कथ, संवेदना के नया कोन भा जिनिगी के कवनो पक्ष क नया बिम्ब, नया भाषाई बिनावट का साथ सुभाविक मुहावरा आ शब्द– विधान का साथ उभरेला त कहानी पढ़े, सुने, गुने वालन क सवादो बदल जाला। एह अंक में शामिल कथाकारन क कोसिस कि 'कहानी', कहानी का साथ–साथ ब्यौहारिक सनेस (मेसेज) बनो। अंक में मँजल आ सिद्धहस्त रचनाकारन का साथ, कुछ नयो प्रयास वाला रचनाकार शामिल बाड़न। एह अंक में ''हमार जनपद / हमार गाँव'' स्तम्भ में 'सोनांचल' पर आलेख का साथ भोजपुरी के आदि कवि कहाए वाला कबीर पर डा0 गदाधर सिंह के सुचिन्तित आलेख पढ़े लायक बा।

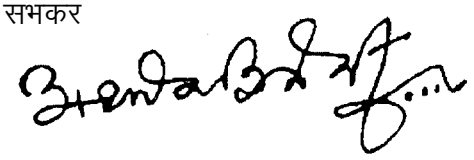

''सरधांजलि''

विश्व भोजपुरी सम्मेलन (देवरिया) के राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रखर समाजवादी – परमहंस त्रिपाठी

आ

बलिया जनपद के

वरिष्ठ कवि आ सम्मेलन इकाई के अध्यक्षः शम्भुनाथ उपाध्याय

के

'पाती' परिवार के विनम्र सरधांजलि...।

दखलंदाजी

सेकुलर बाबा क छतरी

❑ शिलीमुख

हमरा देस में आजादी मिलला का बाद बड़–बड़ुवा में 'सेकुलर' बनला के सवख जागल रहे। अंग्रेज बहादुर जात–जात एगो 'अंगरेजी भाखा' आ ई सवख दे गइल रहे । कई गो मानवतावादी बुद्धिजीवी लोग आपन चोला उतार के सेकुलरवाद के चोला पहिन लिहल लोग। राजनीति में, त जब–जब चुनाव आवेला नेता आ 'फालोवर' 'सेकुलर' बन जालन सऽ।

सेकुलर बनला में बड़ा फायदा बा। अब न जाति– जमात के बात होखे लागल हा, बाकि एह कुलि का बादो 'सेकुलर' ना बनी, त कुरूसी आ सत्ता छटक जाई। 'सेकुलर' बनते दंगा क दरद आ गरीबी क दुख भुला जाला। आतंक, अत्याचार, भ्रष्टाचार प परदा पड़ि जाला, बड़ बड़ घोटाला गल–पचि जाला। गरीबी का दुहाई का साथ–साथ अगर सेकुलर बनला क ढोल जोर–जोर से बाजे लागी त कुल्हि बदहाली, अशिक्षा, महँगाई, भुखमरी, बाढ़ भूकम्प अपना आपे फीका पड़ जाई।

एघरी, एक बेर फेरू सेकुलर बाबा के लहर चलल बा। जइसे सब बहती गंगा में हाथ धोवे खातिर दउरेला, ओइसहीं हर पार्टी–कामपंथी, नामपंथी, वामपंथी, समाजवादी, आधुनिकतावादी ओनिये भागल जाता समाजिक–बुद्धिजीवी कहाए वाला लोगन में मीटिंग, गोष्ठी आ भासन–वक्तव्य देबे के तत्परता बढ़ि गइल बा।

फजिरहीं दनदनात जात एगो बुद्धिजीवी भाई के रोकत हम पूछ बइठलीं, 'सबेरही–सबेरे कहवाँ भागल जात बानी? कवनो खास बात?

–'अरे, रउरा पता नइखे? फेलिन' ले बड़ तूफान आवे वाला बा!'

–'केने से भाई?' हम चिहात फेरू पुछलीं

–' गुजरात से, सम्प्रदायिकता के 'सुनामी' चलल बा। समाज आ देस प भयंकर संकट बा!' ऊ कइसन दो मुँह बनावत कहलें। हम टुकुर–टुकुर ताकत रहि गइनी। बुझइबे ना कइल। ऊ फेर समझवले, 'देखीं, संप्रदायिकता के शैतान के रोके खातिर दिल्ली में सेकुलर बाबा के छतरी बनत बा। हर पारटी आ दल बटुरात बा। एही कुल के लेके एगो मीटिंग राखल बा। रउवों चलीं ना, कुछ समाजिक काम कइल जाव!' ऊ हमार बाँह धरत उसुकवले।

हमरा समझ में कुछ आ गइल त कहलीं, 'महराज, हम त खुदे बाबा हो गइल बानीं फकीर चंद! जानत नू बानीं, फटकचंद गिरधारी, न लोटा न, थारी। कबो कुछ भेंटा जाला त खा–पी लेनी। ना घर रहि गइल न, खेत बारी, इहाँ साँझ उहाँ बिहान, जिनिगी क कवन ठेकान? आ सुनीं, रउवों सेकुलर बाबा के फेर में जिन पड़ीं, कुछ होखे–जाए वाला नइखे!'

'तूँ बैकवर्ड, पुरातनपंथी! तहार सोचे तोहके ऊपर नइखे उठे देत।' ऊ खिझियात चल गइलन पता ना कवन खिंचाव रहे ओह सेकुलर बाबा में? कुल महँगाई आ थुक्का–फजिहत भुला गइल। बुझला ई बुद्धिजीवी भाई कवनो पार्टी के तरफदार हउवन, हम सोचलीं। जनता से आपन कमजोरी, ऐब, असफलता आ डर छिपावे के तरीका ना नु हऽ ई सेकुलरवाद ?

चुनाव आवे वाला बा......जात होइहें कवनो बइठक में हवा बान्हे। ओइसहूँ हर तरह से पिछुवाइल एह शहर में हवा बन्हला का अलावा, दोसर कवनो मजिगर काम नइखे!

●●●

सामयिकी

बिहार भोजपुरी अकादमी के विवादित 'महोत्सव'

[भोजपुरी के लेके आजु ले जाने–अनजाने जतना राजनीति भइल बा, अंदरखाना जतना बनरबाँट आ आपुस के बीरपुजइया होत आइल बा, साइते कवनो लोकभाषा के साथ भइल होई। अइसन ना कि ई खतम हो गइल बा। ई नया–नया रूप लेके, नया नमूना संस्था आ गोल का जरिए अबहिंयों जारी बा, बलुक अब त मंत्रालय, अकादमी, विश्वविद्यालय तक में घुसर गइल बा। भोजपुरी के जतना स्वयंभू कर्णधार बाड़न साइते कवनो दोसरा भाषा में होइहें। समरथ लोगन के भाषा आ संस्कृति का दिसाईं सचेत भइला के मतलब कहीं न कहीं इहे लउकत बा कि ऊ लोग भाषा आ संस्कृति के बजाय खुद आपन 'एक्सपोजर' चाहत बा। नेकनीयती से गठित भइल बिहार भोजपुरी अकादमी के कुंभकर्णी निद्रा टुटला का बाद, हड़बड़ी में प्रादेशिक स्तर पर एगो आयोजन भइल जवना के अंतर्राष्ट्रीय संज्ञा देके, आपन पीठ अपने ठोंकला के साथ भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के एक बेर फेरू गरिमा घटावल गइल। एके लेके भोजपुरी के साहित्यकार, कलाकार आ रंगकर्मियन में जबरदस्त क्षोभ आ प्रतिक्रिया देखे के मिलल। 'पाती' मूक दर्शक बनला का बजाय, भोजपुरिहा सुभाव का मोताबिक,कुव्यवस्था आ अनेत के खिलाफ सहज, स्वतंत्र आ रचनात्मक हस्तक्षेप करे के समर्थक रहल बिया।

अकादमी आयोजन में बोलावल आ सम्मानित भइल 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' के अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव डॉ0 अरुणेश नीरन के कहनाम रहे कि अकादमी जेके 'भोजपुरी' खातिर महत्वपूर्ण मनलस, ओके सम्मानित कइलस, बाकि सम्मानित होखे वालन में उनका साथ खुद अकादमी के अध्यक्षो रहलन। सम्मान–पत्र पर उनहीं के हस्ताक्षरो रहे। सम्मानित कइला का बाद, सम्मानित होखे वालन के मंच प एके साथ पाछा खड़ा करा के, आगा कुर्सियन पर उहाँ के अतिथि लोग विराजमान हो गइल, सम्मानित होखे वालन खातिर ई अपमानजनक स्थिति रहे। अगर हम पहिले से जनितीं, त उहाँ ना जइतीं।

मालिनी अवस्थी के 'ब्रांड अम्बेसडर' घोषणा विवाद प डॉ0 नीरन के प्रतिक्रिया कुछ अलग रहे। ऊ कहलन कि 'भाषा कवनो उत्पाद ना हऽ कि ओके बेचे आ प्रचारित करे खातिर 'ब्रांड अम्बेसडर' बनावल जाय।' शारदा सिन्हा आ मालिनी अवस्थी के लेके क्षेत्रीय विवाद पर उनकर टिप्पनी रहे कि 'भाषा आ भाषा के बिच्चे संवाद आ साहचर्य करे वालन के सम्मान होखे के चाहीं। जइसे शारदा सिन्हा क देवकी माई मैथिली आ जशोदा माई भोजपुरी हईं ओइसहीं मालिनी क देवकी माई अवधी आ जशोदा माई भोजपुरी बाड़ी। दूनों के आपन जोगदान बा।'

आयोजन में सम्मानित होखे वाला भोजपुरी के वरिष्ठ सेवी आ साहित्यकार डॉ0 गदाधर सिंह, जवन भोजपुरी अकादमी के सदस्यो बाड़न, उनके कुछ बात के बुरा लागल। एक त आयोजन का पहिले सदस्यन से कवनो राय ना लियाइल, दूसर ई कि गायक कलाकारन का आगा, भोजपुरी के समर्पित साहित्यकारन के घोर उपेक्षा कइल गइल। भोजपुरी भाषा साहित्य के उठावे में अमूल्य जोगदान करे वाला संपादकन आ वरिष्ठ साहित्यकारन के अनदेखा ना होखे चाहत रहे।

इहाँ भोजपुरी के कुछ निष्ठावान समर्पित रचनाकारन के एही संदर्भ में आइल प्रतिक्रिया जस के तस क्रमवार दिहल जा रहल बा। एकर उद्देश्य खाली अतने बा कि अब्बो से 'भोजपुरी' का नाँव पर अइसन मनमाना आ निरर्थक काम ना होखे जवना से भोजपुरी के 'गरिमा' घटे]

●●●

बानर के हाथे नरियर

❑ **रामजी पाण्डेय 'अकेला'**

'बिहार भोजपुरी, अकादमी (पटना)' के हाल का पूछे के बा? ई अपने नियर आपन पोसुआ खरखाहा खोजि लीहें। कमाई धोती वाला, खाई टोपी वाला.... ई त कहिए से चलल आ रहल बा। एमे नया का बा ? केकर–केकर धरीं नाँव, कमरी ओढ़ले सगरी गाँव। आन्हर गुरू, बहिर चेला; माँगे गुर, उठावे ढेला। फेंड़ से होलरी ना खेलल जाला, रेंड़ से होलरी खेलल जाला। अब प्रधानता त रेंड़े के बा। फेंड़ टुकुर–टुकुर ताकी आ रेंड़ मजा काटी। जे राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर होई, ऊ राजनीति ना करी त का साहित्य के बस्ता ढोई? 'भोजपुरी' कुछ लोग खातिर आपन छबि बनावे वाली हो गइल।

जी हँ ! दूबे जी के कार्यकाल में भलहीं कवनो साहित्यकार के पुस्तक अकादमी से ना छपल, भलहीं पत्रिका (अकादमी पत्रिका) ना निकललि, बाकिर इनकर अम्बेसडर गाड़ी ऊपर लालबत्ती आ अँग्रेजी में ''चेयरमैन, भोजपुरी अकादमी'' के बोर्ड लगा के पूरा बिहार के दौरा करे में मशगूल रहल। भोजपुरी के नाँव पर पइसा खइले, मउज उड़वले। इनका भोजपुरी भाषा के विकास ना करे के रहे, विनाश करे के रहे। जब अध्यक्षे अइसन, त अकादमी कइसन होई, अंदाजा लगावल जा सकता बा। शुक्र बा पिंड छूटल। अब आगे का होला, देखल जाव।

●●●

मरम पर चोट पहुँचावत 'भोजपुरी अकादमी' के अअकादमिक प्रदर्शन

❑ **तैय्यब हुसैन 'पीड़ित'**

बिहार में 'भोजपुरी अकादमी' के सरकारी गठन 1978 में भइला ना त ओकरा पहिले स्व0 केदार पाण्डेय (पूर्व मुख्यमंत्री, बिहार आ तत्कालीन केन्द्रीय रेलमंत्री, भारत सरकार) के सहयोग से कई बरिसन तक शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी के अध्यक्षता आ हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' का सचिव रूप में एकर खानगी संचालन होत रहल। 1978 से लेके अबहीं ले सर्वश्री देवेन्द्र प्रसाद सिंह, शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, रामेश्वर सिंह काश्यप, श्रीमती कंचनबाला, अशोक कुमार तिवारी आ डॉ0 रविकांत दुबे के क्रमशः मनोनयन अध्यक्ष रूप में सरकार का ओर से भइल। कुछ समय ई खाली सरकारी शिक्षा निदेशकों के हवाले रहल बा। जइसे सर्वश्री पी0एन0 ओझा, चितरंजन प्रसाद, गोपाल जी आदि का साथे।

एह पंक्तियन के लेखकोके खानगी संगठन से लेके देवेन्द्र प्रसाद सिंह, शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी आ अशोक कुमार तिवारी के अध्यक्षता–काल में तीन बेर कार्यसमिति के सदस्य होखे के गौरव मिलल बा। एह से चश्मदीद गवाह का हैसियत से कहल जा सकेला कि अकादमिक काम (जइसे–पुस्तक–प्रकाशन, विभिन्न भोजपुरी विषयन पर विद्वानन के गोष्ठी, अकादमी से शोध–प्रत्रिका के प्रकाशन, भाषा एकरूपता के प्रयास आ समसामयिक समस्यन पर चिंतन–गोष्ठी) जादेतर शुरूआत से शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी के अवधि में भइल, ना त चितरंजन जी आ गोपालजी के निदेशकीय–काल में।

वर्तमान भोजपुरी अकादमी–अध्यक्ष डॉ0 प्रो0 रविकान्त दुबे (21 अगस्त 2010 से लेख लिखे जाये तक) के कार्य–काल में देखे में ई आइल कि सरकारी लाल बत्ती वाली कार पर या, त भोजपुरी अकादमी मंत्री लोगन के दरबार कइल भा हवाई जहाज से मॉरिशस आदि के बिदेश–यात्रा। बड़ा खिसिया के सरकारी पइसा से विभिन्न पसंद के

जिला मुख्यालयन में काव्य–गोष्ठी भा विचार–गोष्ठी का बहाने अपना आदमी के तुष्टीकरण आ सरकारी पइसा के बंदर–बाँटो एकर उल्लेखनीय कारनामा रहल, जेकर चरम स्थिति बीतल 21 जुलाई 2013 के सम्पन्न कथित 'अन्तरर्राष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव' का रूप में देखे के मिलल ह। एकरो पीछे के उद्देश्य साफ ना जनाइल, बाकिर मुँहा–मुँही बात पसरे लागल कि ई सब उपक्रम दोबारा अध्यक्ष मनोनीत भइला खातिर आ अपना गइला का बदला में, बिदेसियन के, भारत बोला के उपकृत कइला का मकसद से कइल जा रहल बा। सरकारी–अनुदान खरच करे के नाटकों एह में निहित माने के चाहीं। प्रकाशन एह अध्यक्ष का कार्य–काल में शून्य रहल। पत्रिको के कवनो अंक ना निकलल।

समारोहो में कवनो अकादमिक कार्यक्रम ना रहे। मसलन, भोजपुरी विषयक् विचार–गोष्ठी, भा कवनो विद्वान के भाषण आदि कुछ ना। मुख्य रहे भरत शर्मा व्यास, मनोज तिवारी, मालिनी अवस्थी आदि के लोकगीत–गायन, जे लोग भोजपुरी के अश्लीलता का ओर ले जाए खातिर बदनाम बा। जवन भोजपुरी अकादमी स्व0 गोपाल जी (निदेशक, उच्चत्तर शिक्षा विभाग, बिहार सरकार) के समय अश्लीलता के खिलाफ गोष्ठी क के एह लोग के लानत–मलामत कइले रहे, ऊहे अकादमी ओह दिन अश्लील गीतन के प्रस्तुतिकरण से गंदा भोजपुरिया सिनेमा आ दुमानिया गीतन के समर्थन करत मिलल।

जवन कुछ लोग के सम्मानित करे के काम भइल, ऊ जाँच के विषय होखे के चाहीं कि ओह नामन का पीछे चुनाव के आधार का रहे ? कवन चयन–समिति के सिफारिश पर एह लोग के चयन भइल ? काहें कि सुने में ईहो आइल कि कार्य–समिति ना त कवनो बइठक में अइसन कार्यक्रम के प्रस्ताव लिहल आ ना ओकरा सहमति से एह पर खर्च के बजट बनल। सम्मानित होखे वालन में जात–विशेष के वर्चस्व रहल रहे, कुछ के संबंध त भोजपुरी–साहित्यिक–सृजन से कहीं जुड़ले ना रहे। जइसे– कुमार नयन, अजीत दुबे, शिवजी सिंह, कुलदीप कुमार, भाई जी भोजपुरिया आदि। निमंत्रण–कार्ड हिन्दी में छपल रहे। कार्डे पर प्रवेश के प्रावधान रहे। स्थानीय भोजपुरी साहित्य सेवकन के निमंत्रण तक ना रहे। संचालन से महामहिम राज्यपाल के उद्घाटन–भाषण मुख्य अतिथि माननीया रेणु कुशवाहा (उद्योग मंत्री, बिहार) आ श्री जितेन्द्र प्रसाद (शिक्षा–निदेशक) तक धन्यवाद–ज्ञापन ले हिन्दी में पढ़ल गइल। बैनर पर पृष्ठभूमि में माननीय मुख्यमंत्री जी नितीश कुमार आ शिक्षामंत्री माननीय पी0के0 शाही के तस्वीर लगावल गइल रहे। खुद भोजपुरी अकादमी अध्यक्ष के सम्मान मंच पर कवनो बाहरी आदमी का तरफ से होत लउकल। विदेशी आ दिल्ली के व्यक्तित्वन के भरमार रहे जबकि भोजपुरी अकादमी, बिहार के दायित्व, बिहार राज्य में भोजपुरी के अकादमिक विकास का नीयत से कइल गइल बा। जइसे दिल्ली के 'मैथिली–भोजपुरी अकादमी' के दिल्ली राज्य खातिर केन्द्रित बा। कुछ बाहरी विशेषज्ञ विद्वान आ सकेलन बाकी एक सीमा तक। बाकिर इहाँ त खुद बिदेश जाए खातिर गइला का एवज में बड़ संख्या में विदेशियन के भारत–भ्रमण करावल मनसा लखाइल। एह समारोह में दूगो भोजपुरी कहाउत सत्–प्रतिशत् चरितार्थ होत रहे। एक तऽ 'सालभर मिमियानी आ एक बच्चा बिआनी' आ दोसर, 'अंधा बाँटे रेवड़ी, फेर–फेर अपने ले'व।

एह अवसर पर लगभग 80 हजार के बजट में जवन स्मारिका निकलल, ऊ 60 पृष्ठ, ड्राइंग पेपर पर, मल्टीकलर में छपल बिया, काहें कि ओकरा 7–8 पेज में भोजपुरी अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष के व्यक्तिगत क्रियाकलाप (विदेश भ्रमण, भाजपा मंत्री भा बइठक लगे गइल आदि) के रंगीन तस्वीर छपवावल बहुते जरूरी रहे। एके दृष्टि में आत्मप्रशंसा, सरकार के आँख में धूर झोंकल आ ओकर चमचेबाजी के ई एगो नफासती तरीका मतिन भासत बिया। रचना के नाम पर कुछ ऊहे रचना छापल गइल बा, जवन बहुत पहिले 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' खातिर लेखक लोग से मांगल गइल रहे। स्मारिका में देबे खातिर, लेखक के अनुमति ले जरूरी ना समुझल गइल। प्रूफ के भूल छोड़ीं, हद त ई बा कि एह 60 पेज में 'स्मारिका' कहूँ लिखलो नइखे।

शुभकामना–संदेश आ तस्वीर के नीचे निर्देश के भाषा हिन्दिये बा।

कहे खातिर ओह में प्रधान सम्पादक, प्रबंध सम्पादक, कार्यकारी संपादक, संपादक, सहसंपादक, संयोजक आ सम्पादक–मण्डल में कुल मिला के तेरह नाम बा, जेह में कुछ लोग स्वनामधन्य बाड़न, तबहूँ अकादमी के एह अदना प्रकाशन में कुछ अइसन तथ्यगत भूल भइल बा, जवन माफी के काबिल नइखे। काहें कि अकादमी के प्रकाशन प्रामाणिक मानल जाला। उदाहरण नीचे दिहल जा रहल बा –

1. "दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती के उपन्यास 'जिनगी के टेढ़ मेढ़ राह' भोजपुरी के पहिलका उपन्यास हऽ बाकिर ओकरा बाद से भोजपुरी में सशक्त उपन्यासन के रचना आरंभ हो गइल!" (लेखः 'समकालीन भोजपुरी में कथ्य आ शिल्प', लेखक– डॉ0 शिववंश पाण्डेय, पृ0सं0 : 20।

अब तक के मान्यता में श्री रामनाथ पाण्डेय के 'बिंदिया' भोजपुरी के पहिलका उपन्यास ह, जवन पहिल बेर 'शेखर प्रकाशन, रतनपुरा, छपरा' से 1956 ई0 में प्रकाशित भइल रहे।

2. "1894 में भोजपुरी के राष्ट्रगीत लिखेवाला नायाब लेखक श्री रघुवीर नारायण के आगमन भइल, जे सिवान (बिहार) के रहली हाँ।"

('मारिशस में अकादमी–अध्यक्ष के संबोधन', : प्रो0 रविकांत दुबे, पृ0सं0 : 24।

सर्वविदित बा कि 'बटोहिया' गीत के रचयिता (जेके भोजपुरी के राष्ट्रगीत कहल जाला) रघुवीर नारायण के जनम 'नया गाँव' (सारन) में भइल रहे, सीवान में ना। 'नया गाँव' आजो सारने में बा।

3. "बाकी अतने से गांव समाज में पेट चलावल ना हो पावत रहे। तब ऊ आसाम गइलें।... ओही आसाम में एगो पंडित जी रहन। ऊ रोज रात में कथा कहत रहन।... ओही पंडित जी से भिखारी चिट्ठी चपाती भा लिखे–पढ़े सिखलें। अब पंडित जी उनका खातिर एगो गुरूओ बन गइलें।"("भिखारी ठाकुर भोजपुरिया मंच के पहिलका सूत्रधार" लेखक – शमाशाद, प्रेस, पृ0 42।

जबकि भिखारी ठाकुर खुदे लिखले बाड़न कि –

"नौ बरस के जब हम भइलीं, विद्या पढ़न पाट पर गइलीं।
बरिस एक तक जबदल मती, लिखे ना आइल रामऽगती।
मन में विद्या तनिक न भावत, कुछ दिन फिरलीं गाय चरावत।
जब कुछ लगलीं माथ कमाये, तब लागल विद्या मन भाये।
बनिया गुरू नाम भगवाना, उहे ककहरा साथ पढ़ाना।
ललसा रहे जे बहरा जाईं, छुरा चलाके दाम कमाईं।
गइलीं मेदनीपुर के जीला, ओहिजे कुछ देखलीं रमलीला।"

'बहरा' तब कलकत्ता (आज के कोलकाता) के कहल जात रहे। मेदनीपुर जिला आ कोलकाता बंगाल में! उनकर शिक्षक उनका गाँव लगे के स्थानीय रहस, नाम रहे– भगवान साहु, आ जाति रहे–बनिया के।

आखिर में पृष्ठ–34 पर छपल प्रतिमा भारद्वाज के एगो कविता नमूना मतिन पाठकन के सामने राखे के चाहत बानीं, जेह से पता चली कि तुक, छन्द आ भाव का दृष्टि से रचना के चुनाव में अकादमी के नजर केतना अकादमिक बा ?

"बदलल समाज बाकि टूटल ना रिवाज,
ऊहे रीत, प्रीत बांटत बड़ुए बोली भोजपुरी,
तोर–मोर–जोर–शोर सबके बटोरी के,
सांचो में पाटले बा, समुन्दर के दूरी।
सोंधी सुगन्ध से बनल बा दुनिया के दूरी,
दुबे बोल के देखीं त बिदेशिया भी समझ जइहें।
इहे 'भोजपुरिया' भाई जी भोजपुरिया सबके
खातिर बा जरूरी।"

एह टिप्पणी के केहू व्यक्ति विशेष पर आक्षेप मत मानल जाव। एह से एगो सरकारी संस्था के दुरगति भा दुरूपयोग के पता चलता। समय रहते हर ईमानदार भोजपुरिया के सावधान हो जाए के चाहीं। काहें कि जइसे–जइसे भोजपुरी के बढ़ंती होत जाता, एह में सही विकास बदे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, महापंडित राहुल सांकृत्यायन आ डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा कम, लूटे खातिर नटवर लाल अधिका पैदा होखे लागल बाड़न। गलत के प्रश्रय दिहल भविष्य खातिर घातक सिद्ध होई। चाहें ऊ संगठन होय भा सरकार..।

●●●

हाथी हाथी सोर कइले.....

❑ बरमेश्वर सिंह

बिहार भोजपुरी अकादमी पैंतिस बरिस के हो चुकल बा। बाकिर, ई अबहीं बालिग नइखे भइल। पता ना, ई बालिग होखबो करी कि ना ! सुने में आवेला कि ई बालिग होखे से पहिलहीं रोगिया गइल बा। बतियो ठीक बुझाता। एह संस्था के उद्घाटन सन् 1978 ई0 में तत्कालीन उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम जी आ पटना उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति के0 पी0 एन0 सिंह जी संयुक्त रूप से कइले रहलीं। ओह अवसर पर मारीशस के राजदूत विशिष्ट अतिथि का रूप में उपस्थित रहलीं। तत्कालीन बिहार सरकार का ओर से, ओ अवसर पर प्रस्तुत प्रारूप पत्र में भोजपुरी के राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिवावे खातिर शोधकार्य के बढ़ावा देवे, भाषा व्याकरण आ शब्दकोष के निर्माण करवावे, लोकगीत–संस्कारगीत के संग्रह तइयार करवावे, आ भाषाई संस्कृति के बढ़ावा देवे के वचनबद्धता व्यक्त गइल गइल रहे। बाकिर ई कुल्हि बतिया ओइसहीं ढाक के तीन पात लेखा हो के रहि गइल, जइसे अपना किहाँ के लोकतांत्रिक कहाये वाली सरकार आ जनसेवक कहाये वाला नेतन के बात ढाके के तीन पात हो के रहि जाला। नतीजा ई भइल कि 'हाथी अइली, हाथी अइली, हाथी कइली टीं...!'

बिहार भोजपुरी अकादमी सुचारू रूप से संचालित होके आपन घोषित लक्ष्य प्राप्त करि सको, एकरा खातिर अध्यक्ष आ निदेशक समेत कुल तेइस पद सृजित बा। बाकिर, एह सृजित पद का विरूद्ध आज एह अकादमी में महज चउदह बंदा कार्यरत बाड़ें। उहो बेचारू लोग अभी चउथे वेतनमान में खटे खातिर अभिशप्त बाड़ें। अन्य महकमन के कर्मचारियन खातिर जहाँ सातवॉ वेतनमान देवे खातिर आयोग के गठन के घोषणा हो चुकल बा, उहवाँ चउथा वेतनमान में खटे खातिर मजबूर बिहार भोजपुरी अकादमी के कर्मचारियन का कार्य के प्रति लगन के सहजे अनुमान लगावल जा सकेला, बाकिर खीसा अतने नइखो। एह अभागा कर्मचारियन के मजदूरी के भुगतान आज तक कबो समय पर नइखे भइल। एक ओर ई कुल्हि कर्मचारी फटेहाली के स्थिति में बाड़ें, दोसरा ओर एह लोग खातिर पेंशन आ ग्रेच्युटी के बतियो कइल गुनाह बा। दरअसल, बिहार भोजपुरी अकादमी शुरू से आज तक कंगाली के स्थिति में जी रहल बा। भोजपुरी भाषा–संस्कृति के संवर्द्धन–संरक्षण आ उन्नयन के मंशा के, बिहार सरकार सुनियोजित ढंग से गर्त में ढकेल दिहले बा। इहे कारण बा कि ई संस्था अपना पैंतिस बरिस के कार्यकाल में कूँख–पाद के महज बयालिस पुस्तक के प्रकाशन करि सकल बा। इहो उपलब्धि एह संस्था के शुरूआतिये दौर के बा। बाद में त संस्था सोरहो आना ऊसरे रहल बा। हालत इहवाँ तक पहुँचि गइल बा कि ई संस्था पिछला–पाँच–छव बरिस से आपन मुख्य पत्र 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के एको अंक नइखे निकालि पवले। संस्था के अध्यक्ष आ निदेशक के पौ बारह बा। ऊ लोग खातिर सरकार का ओर से प्रति माह पन्द्रह हजार रूपया के मानदेय बा। ऊ लोग मजे–मजे हवा–गाड़ी में घूमि रहल बाड़ें।

बिहार भोजपुरी अकादमी के प्रति, सरकार के घनघोर उपेक्षा नीति समझे खातिर, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के कार्य–कलापो पर एक नजर डालि लिहल ठीक रही। सन् 1970 ई0 से संचालित बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी अब तक चार सौ से बेसी स्तरीय पुस्तकन के प्रकाशित करे में सफलता पवलस। देश–विदेश में अपना लोकप्रियता के झंडा गाड़े में सफल भइल। एह संस्था से प्रकाशित एक सौ से बेसी पुस्तक

विदेशी शिक्षण–संस्थान, के पाठ्यक्रम में लागल बाड़ी स। कारन ई बा कि एह संस्था के अध यक्ष हिंदी के अधिकारिक विद्वान होलन, बिहार भोजपुरी अकादमी लेखा कवनों राजनीतिक दल के छोटभइया नेता ना। एकरा अलावा, एह संस्था के भारत सरकार का ओर से प्रकाशन मद में चालीस–पचास लाख रूपया हर साल मिलेला। एह संस्था का प्रति बिहारो सरकार सुर्खुरू बा। बिहार सरकार का ओर से एह संस्था के स्थापना मद में सलाना अस्सी लाख रूपया मिलेला। बाकिर, बिहार भोजपुरी अकादमी के नियति ई बा कि एह अभागी के केनियों से एगो फूटल कउड़ियो ना भेंटाय। कबो–कबो ऊँट के मुँह में जीरा लेखा कुछ चुचुर–माचुर भेंटा जाला।

बिहार भोजपुरी के गढ़ बा। बाकिर बिहार भोजपुरी अकादमी अपना गढ़े में मेमियात बा। केहू पुछवइया नइखे। दिल्ली भोजपुरी अकादमी अपेक्षाकृत अच्छा काम करि लहल बा। हाले, मध्यप्रदेश सरकार अपना किहाँ भोजपुरी अकादमी के गठन कइलस ह। ओकरा शुरूआती रूझान से अइसन लागि रहल बा कि उहो अच्छा काम करीं। बाकिर, बिहार त शंकर के त्रिशूल पर बा ! इहवाँ 'सामाजिक–न्याय' वाली सरकार में असामाजिक तत्वन के पौ–बारह रहेला। 'सुशासन' वाली सरकार के कुशासन देखते बनेला। अब एह कुल्हि लीला का बीच बिहार भोजपुरी अकादमी लंगो–चंगो भइल बिया, त केहू के अचरज ना करे के चाहीं।

दरअसल, बिहार भोजपुरी अकादमी सरकारी राजनीतिक दलन के अनचलुआ कार्यकर्त्तन के जीये खाये के अड्डा हो के रहि गइल बा। फिलहाल एह संस्था के अध्यक्ष पद पर डॉ0 चन्द्रभूषण राय जी आरूढ़ बानी। इहाँ के मनोनयन सरकारे द्वारा हाले भइल ह। साहित्य भा कला से इहाँ का दूर–दूर तक कउनों संबंध नइखे। इहाँ का राजनीति विज्ञान के पढ़ाई कइला का बाद से बेराजेगारे चलत रहीं। सत्तारूढ़ जद (यू) में लागि गइलीं। फिर जद (यू) इहाँ का बेरोजगारी पर तरस खाइके, बिहार भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष बना दिहलस। अब ई सोचल कि डॉ0 चन्द्रभूषण राय जी भोजपुरी भाषा–साहित्य–संस्कृति में सुरखाब के पाँख लगा देइबि, मूर्खते बा। हालांकि, डॉ0 चन्द्रभूषण राय जी आपन प्रेस से बतियावत खानी आकाश से तरेंगन तूरि के ले आवे के दम्भ भरलीं, बाकिर देखीं, आगे–आगे होता है क्या ? पहिले, बिहार भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष पद पर डॉ0 रविकान्त दूबे जी आरूढ़ रहीं। उहों का ना खाली राजनीति विज्ञान के पढ़ाई कइले रहीं, साहित्य आ कला में चन्द्रभूषण राय जी लेखा उहों का पोंगा पंडित रहीं। बाकिर उहाँ का बक्सर के एगो कॉलेज में लागल रहीं। ई उहाँ के राजनीतिक पहुँच के कमाल रहे कि उहाँ का दुतरफा फायदा उठावे खातिर, भाजपा कोटा से, बिहार भोजपुरी अकादमी के छाती पर सवार हो गइल रहीं। हालांकि, उहाँ के टीम बड़ा भारी–भरकम रहे। एह से भोजपुरिया समाज में कुछ आस जागल रहे। बाकिर, बुझा गइल कि– 'हाथी हाथी शोर कइले, गदहो ना ले अइले रे...!'

दरअसल, डॉ0 रविकान्त दूबे जी भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के अर्थ 'नाच–गाना' बूझि लिहले रहीं। उहाँ का बिहार भोजपुरी अकादमी के गौरवशाली बनावे खातिर जबे–तब नचनियन–बजनियन के गोल जुटावत रहीं। बिहार भोजपुरी अकादमी के लगभग मर चुकल मुख्य–पत्र, 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के फेरू जियावे, आ संस्था में सड़ि रहल पाण्डुलिपियन के प्रकाशन करावे का ओर, ध्यान देबे के सवाले ना रहे। तलुक लीं ! 21 जुलाई 2013 के पटना में उहाँ का, बिहार भोजपुरी अकादमी के धूमिल पड़ि चुकल चेहरा में चार चाँद लगावे का नीयत से, अइसन नाच नचवलीं, कि सगरी थू–थू होखे लागल। भाजपा–जद (यू) गठबंधनों टूटि चुकल रहे। से, डॉ0 रविकान्त दूबे जी के मनमसोस के कहे के पड़ल रहे – 'बड़े बेआबरू होकर तेरे कूंचे से हम निकले !'

बिहार भोजपुरी अकादमी में डॉ0 रविकान्त दूबे जी के सिंहासनारूढ होखे से पहिले, एह संस्था के निदेशक गोपाल जी रहीं। उहाँ का कउनो राजनीतिक दल के छोटभइया नेता ना होके, बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारी रहीं। उहाँ का कार्यकाल में, बिहार भोजपुरी अकादमी अपना सीमित साधन का बादो, राह पर आवे लागल रहे। अकादमी पत्रिका नियमित हो गइल रहे। वर्ग चार से मैट्रिक तक के विद्यार्थियन (भोजपुरी के) खातिर पाठ्यक्रम तइयार करे के कार्ययोजना हाथ में लिहल गइल रहे। एह दिसाई वर्ग चार आ वर्ग पाँच खातिर होखे वाला काम त करीब–करीब पूरे हो चुकल रहे। व्यवहार कुशलता आ अपना सोच समझ के चलते लोकप्रिय हो चुकल गोपाल जी के आकस्मिक निधन हो गइल। फिर उजियावे खातिर डॉ0 रविकान्त दूबे जी के पदार्पण भइल। बिहार भोजपुरी अकादमी आज चूँ–चूँ के मोरब्बा हो गइल बा। बाकिर, इहवाँ एगो अहम सवाल उठत बा! कि आखिर भोजपुरिया समाज गूँग बनि के ई कुल्हि सरकारी खोवा–खेल देखत काहें बा ? भोजपुरिया संस्कृति त "पट देना राँड़ ना त भर बाँह चुरिया" वाला रहल बा ? फिर मौन, हतप्रभ, हतचेता बनि के भोजपुरिया समाज टुकुर–टुकुर ताकत काहें बा ? आज बिहार भोजपुरी अकादमी के ई ठहरल पानी सड़हूँ लागल बा। का अइसना में भोजपुरिया समाज के ई कर्त्तव्य नइखे बनत कि ऊ एगो अइसन ढेला मारो कि पानी में हलचल मचि जाव!

सभे चुप बा। भोजपुरिया समाज खामोश बा। साइत बोलल बेवकूफी बा ! खिलाफ में कुछ लिखलो बेवकूफी बा ! ना, अइसन बात नइखे। 'जहाँ तोप मुकाबिल हो, वहाँ अखबार निकालो'। अइसहीं नइखे कहल गइल। वोटो के राजनीति के आपन एगो महत्व बा। कउनों सरकार खातिर वोट के मार सबसे बड़ मार होला। ए से, एह ठहराव का खिलाफ, सरकारी अनीति का खिलाफ, भोजपुरिया समाज का प्रति सरकारी उपेक्षा भाव का खिलाफ, भोजपुरिया समाज के गोलबन्द हो जाये के चाहीं। ●●●

'अन्हरा बँटलस रेवड़ी....'

❑ **प्रो0 (डॉ0) अरुणमोहन भारवि**

एक बेर फेनु बिहार भोजपुरी अकादमी अपना अध्यक्ष डॉ0 रविकान्त दूबे के कार्य प्रणाली आ मनमौजीपना के कारण चरचा में बिया। इलेक्ट्रानिक मीडिया भा प्रिंट मीडिया में एह घरी भोजपुरी अकादमी के विवाद सुर्खियन में बा। देश के सबसे पुरान, रजिस्टर्ड 'भोजपुरी संस्था–भोजपुरी साहित्य मण्डल, बक्सर' के कहनाम बा कि 21 जुलाई 2013 के पटना में आयोजित 'भोजपुरी महोत्सव' में नियम–कायदा के जम के ठेंगा देखावत अध्यक्ष द्वारा अपना निहित स्वार्थ खातिर गैर भोजपुरी–साहित्यकारन आ कलाकारन के अकादमी द्वारा बिना अपना कार्यसमिति के सहमति के ही बड़ा पैमाना पर 'अन्हरा के रेवड़ी' अस सम्मान बाँटल गइल बा। अतने ना बलुक, बिना कार्य समिति के बैठक बोलवले 'महोत्सव' के नाम पर लाखो रूपया नाजायज खरच कइला के उच्चस्तरीय जाँच के मांगों कइल गइल बा। अकादमी–पुरस्कार त विवाद में बड़ले बा, संगही भोजपुरी अकादमी का ओर से सांस्कृतिक राजदूत (ब्रांड एम्बेसडर) के पद पर लोकगायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी के बहाली से त विवाद आउर परवान चढ़ल बा। मजेदार सवाल ई बा कि का भाषा आ साहित्य के निर्माण आ विकास कबो ब्रांड एम्बेसडर कइले बाड़न? साहित्य के निर्माण साहित्यकार के बदले ई लोग करे के माद्दा राखत बा ? अइसन सोच त ओकरे होई जेकरा साहित्य से कवनो

रिश्ता ना होई।

बिहार के चर्चित भोजपुरी लोकगायक आ फिल्मी हीरो मनोज तिवारी 'मृदुल' आ भरत शर्मा व्यास भोजपुरी अकादमी का ओर से सांस्कृतिक राजदूत के रूप में अवधी लोकगायिका के बहाली के जोरदार विरोध करत आपन–आपन अकादमी पुरस्कार लौटा देले बाड़न जा। ई सब के मांग बा कि एह पद पर लोकगायिका श्रीमती शारदा सिन्हा के बहाली होखे के चाहत रहे आ उनका नकरला के बादे आउर कवनो दोसर भोजपुरी कलाकारन के नाम पर विचार होखे के चाहीं।

सवाल उठत बा कि का भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष के बिना कार्य समिति के सहमति के थोक भाव में भोजपुरी के नाम पर गैर भोजपुरियन आ असाहित्यिकन के पुरस्कृत करे के अधिकार बा ? जवना अकादमी के कर्मचारियन के वेतन आ भत्ता के खुद लाल पड़ल होखे ओकरा सचिव या अध्यक्ष के सांस्कृतिक राजदूत के बहाली के अधिकार के देले बा ? भोजपुरी अकादमी के संविधान में त अध्यक्ष के अइसन कवनो अधिकार नइखे।

लाख टका के सवाल ई बा कि आर्थिक बदहाली के मार झेलत भोजपुरी अकादमी के ओर से सांस्कृतिक राजदूत के बहाली पर आइल खरचा के जोगाड़ कहाँ से होई आ के करी ? सांस्कृतिक राजदूत के यात्रा भत्ता, प्रचार खातिर प्रवास, कार्यक्रम के खरचा आ ओकर विज्ञापन के खरच के उठाई ? संगहीं ई बात बक्सर के जनता के दिल के कचोटता कि अध्यक्ष दूबे जी अपना के जब खुद बक्सर के मानेलन तब बक्सर के बेटी श्रीमती शारदा सिन्हा जेकर बाबूजी श्री सुखदेव ठाकुर बक्सर हाईस्कूल में 1936 से 1947 ई0 तक हेड मास्टर रहीं– के नाम पर सांस्कृतिक राजदूत खातिर काहें ना विचार कइलन ?

सवाल इहो बा कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास खातिर निछावर साहित्यकारन– सर्वश्री डॉ0 विवेकी राय, पाण्डेय कपिल, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, प्रो0 ब्रजकिशोर, जगन्नाथ, डॉ0 तैय्यब हुसेन पीड़ित, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, डॉ0 नन्द किशोर तिवारी, रामजी पाण्डेय अकेला, सभाजीत मिश्र, डॉ0 अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि के नामन पर विचार करे के जहमतो ना उठवनी? भा उहां कवना आधार पर गैर भोजपुरी साहित्यकारन के पुरस्कार दिहलीं ? अनिल कुमार त्रिवेदी आ अन्य भोजपुरी साहित्यकारन के सोझ आरोप बा कि चूंकि अध यक्ष खुद गैर भोजपुरी सेवक हउवन हईं एही से ऊ गैर भोजपुरियन के रेवड़ी बांट के आपन कुर्सी के दोसर टर्म के जोगाड़ बइठावल चाहत रहन।

बतावत चली कि बिहार भोजपुरी अकादमी के स्थापना पूर्वमंत्री केदार पाण्डेय का ओर से 1976 ई0 में खानगी रूप से भइल रहे, जेकरा के मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर के कार्यकाल में 16 जून 1978 ई0 में सरकारी रूप दिहल गइल। अगर अकादमी के 78 से 87 तक के कार्यकाल के स्वर्णकाल मानल जाई त 2010 के कार्यकाल के 'कलंक काल' भा 'विवाद काल' मानल ठीक होई। भोजपुरी का प्रति निष्ठा राखे वाला आ ओकरा बढन्ती खातिर निरंतर रचनात्मक काम करे वाला लोगन के जगला क जरूरत बा, 'भोजपुरी' का नाँव पर कमाये–खाये वाला आ झुठिया आपन बाँहि पुजवावे वाला खौरखाहन के चीन्हि के बहरियवला के साथ 'भोजपुरी' अस्मिता के अपमान आ उपेक्षा करे वाला लोगन के सबक ना सिखावल जाई, त 'भोजपुरी' के भलाई का नाँव पर लोग मलाई काटत रही।

●●●

आग लागल

❑ अक्षय कुमार पांडेय

आग लागल;
बच सके जे कुछ बचावल जाव घर में।

मेज पर चश्मा
कलम टोपी घड़ी बा,
आज कोना में पड़ल
सोचत छड़ी बा,
थेघ देहलीं थाह हम अपना समय के,
हो गइल बेकार बानीं एह उमर में।

दियरखा कऽ बगल में
ऐना टंगल बा,
भइल अब आन्हर
ई आपन भागफल बा,
दाग चेहरा पर लहू के उभर आइल,
तन गइल तलवार अपना अंश–हर में।

जर रहल गीता
जरत कुरआन बाटे,
जर रहल सँइचल
सकल सामान बाटे,
बन्द बा पिंजरा तनी खोलऽ झपट के,
मर रहल बा नेह कऽ सुगना लवर में।

मर्सिया फिर लोग
काहें गा रहल बा,
ई चिराइन धुआँ,
काहें छा रहल बा,
डार पर बइठल कबूतर सोच में बा,
फूल ना लागल असों एह गुलमुहर में।

कहऽ केकरा प' करीं बिसवास...

❑ नवचन्द्र तिवारी

कहऽ केकरा प' करीं बिसवास भाई।
भइलीं सगरो से हम तुऽ निरास भाई।

अपने फेरा में तऽ सबही इहाँ परल बाटे।
कइसे होई भला सबकर बिकास भाई ?

केहू मुँहताज बा बस एकटूक रोटी के।
केहू सबखे रहेला इहवाँ उपास भाई।

सीखि लऽ तुँहऊ एह शहर क चलन
साटि लऽ ओठ प' नकली हुलास भाई।

चान क मुखड़ा बा पियर लउकत
लगे द तनिकी भर हावा–बतास भाई।

दोहा द्वादस

❑ शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'

छेड़ीं जनि कुदरत कबो, राखीं एकर ध्यान।
नाहीं तऽ बनि आपदा, ले ली राउर जान।।
बद्री आ केदार के, धाम भइल शमशान।
भगत लोग सब बहि गइल, चुप रहलन भगवान।।

खेले में आसान बा, राजनीति के खेल।
कथनी–करनी में कहीं, नइखे इचिको मेल।।
लोटा डगरत बा चलत, बिन पेनी के आज।
एही पर जनतंत्र के, बड़ुए बहुते नाज।।

बइठल चानी बा कटत, बरिसत बाटे माल।
नोकर हलुआ खात बा, मालिक बा बेहाल।।
माँ के नोंचत खात बा, भारत माँ के लाल।
रोवत बाड़न स्वर्ग में, लाल, बाल आ पाल।।

बहुमत ना चाहीं इहाँ, गठबंधन अहिबात।
लूटि खजाना देश के, आज विदेशे जात।।
जेड सुरक्षा लगल बा, मंत्री के चहुँओर।
जन–जन रोज पिटात बा, टूटल पोरे–पोर।।

का खाई, पहिरी भला, पावे पाँच हजार।
दे के सिच्छा शिक्षको पीटे रोज कपार।।
पद चपरासी के भलो, टेजरी हो या कोर्ट।
मुहर मराई में मिले, दस–दस के सौ नोट।।

मँहगी मुँह बवले इहाँ, सुरसा लेखा खाय।
सभकर इज्जत, खेत, घर, सँउसे गइल समाय।।
चौराहा पर बा परल, प्रजातंत्र के लास।
गिद्ध नोंचि के खात बा, केहू नइखे पास।।

●●●

सोचे के बेरा

❑ डॉ0 शैलेन्द्र त्रिपाठी

कई दिन से सोचत रहलीं हँ, जे अब लिखला पढ़ला के का माने बा ? अइसन अइसन लोग अब खाँव खाँव करे खातिर तइयार बा' जेकर पढ़ला लिखला से कवनो मतलब नाहीं बा। अम्बेडकर भा गाँधी क खेल खेले वाला बुद्धिजीवी होखें भा राजनेता। कबीर, तुलसी, मंदिर–मस्जिद आऊर अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक, ऊँच–नीच, ओ.बी.सी. जइसन ना जाने केतना बाति बाड़ी सन, जवना पर दिमाग भाँजल जा सकेला लेकिन अभागा लोगन के ई पता बा कि नाहीं कि एह सबके आड़ लेके ऊ लोग थोड़ी देर खाती चाहे जवन फायदा उठालेव, लेकिन बबुआ तब का होई जब ओकर आखिरी हो जाई।

देश के भाड़ में झोंके वाला एगो पीर फकीर एँतरे मरि गइले जे केहु जानियो ना पावल छोट रहलीं त बुढे बाबा जी कहीं जे हमनी का गाँधी महतमा की कहला पर राधोदास बाबा की साथे सार्वजनिक सफाई में लागल रहलीं जा। एमें टट्टी ले साफ करीं जा अँगरेजवन क, जवन दलाल रहलें ऊ तब ई कहें की बाभन होके टट्टी साफ करत बा। खनदान के नाँव डुबा दिहलस। अजादी पवला की बाद इहे दलाल चनियो काटत बानऽस। बाबा कहैं जे देश गुलाम रहे आ दलालन के हाल ई रहे जे कहें सन की अरे ! ए बिसुनाथ जीनिगियो अकारथ हो जाई, लेकिन अँगरेज ईहाँ से ना जाई। अचरज त ई बाटे की अँगरेज त चलि गइलें, लेकिन दललवन के कमी ना आइल आ अब त अइबो ना करी। जानतारऽ इनहनी क खनदान बहुते बढ़ि गइल बा। ऊ त सेनानी रहले। बहुते स्वाभाविक ढंग से, सौ बरिस से अधिका जीयला की बाद ऊ त चलि गइलें, लेकिन ई सोचे खातिर हमहन के छोड़ गइले जे आजु सज्जी ओर हमके दलाले दलाल लउकत बाड़न स। कब्बो कब्बो मोती बी0ए0 क लाइन इयाद आवेले ''गुटबाजियां गुंडागिरी जहरीली हवाएं/फैला रही हैं देश में विधान सभाएं।'' हमरे त ई लागत बा जे देश के संसदो में इहे देखात बा।

अदिमी अपना रहन सहन से बड़का केतरे आ कबले बनल रही, जो ऊ आचार विचार ना सुधारी। संस्कृत में एगो सलोक बाटे की पइसा जो गइल त राउर कुछऊ नाहीं गइल, लेकिन आचरण गइल त सज्जी गइल। पर नेता लोगन भा साहित्यकार लोगन के आचरण तनी देखीं आ सोचीं। ई दुनियाँ के का सुधारी लोग ?

कई जने त जब पोल खुलेला त अपना पुरान देश सेवा के अपना ढाल नीयर समने क लेले। सोचे वाला बाति बाटे की फाँसी पावे वाला कवनो बलिदानी इहे देश सेवा के सोचि के अपना परिवारी में लागि जाइत त इतिहास केतना बनित भा बिगड़ित के जानता! हँ ई त कहल जा सकेला कि अगर देश के आम अदिमी माने गँवई किसान भा भुच्च देहाती ना जागी त देश त छोड़ी दीं, जवन भीतर के भाव मरत जाता जिनिगी के, ऊहो नाहीं लवटी ! रचनाकार कहेला जे भाषा नाहीं भाव होखे के चाहीं। त का भाव मरले क गंध नइखे मिलत ! अगर नइखे मिलत त सोचीं, आ पुरहर सोचीं, जे रहता रहते, देर ना होखे। अगर जादा देरी हो जाई त राहो भुला जाई।

●●●

एक बेर फेर कबीर

❑ डॉ0 गदाधर सिंह

हर सच्चा मनुष्य अपना युग के वाहियात से लड़ेला आ अपना सामरथ भर, स्वविवेक से ओकर सही विकल्प देबे के कोशिश करेला। कबीरो एकर अपवाद नइखन। एक तरह से हर रचनाकार आदर्शवादी होला। आदर्शवादी एह अर्थ में कि ऊ अपना परिवेश से असंतुष्ट होला। ओकरा पाले एगो सपना, एगो आदर्श जरूर होला, जेकरा के ऊ अपना देश–काल में खोजेला, बाकिर ऊ मिले ना। एह से अपना आदर्श के ऊ अपना रचनन में परोसत खुद के तोष देबे के ईमानदार जतन करेला, स्वान्तः सुखाय। श्रेष्ठ रचनाकार के जीवन आ रचना में इचिको फरक ना रहे आ ओकर आदर्श, यथार्थ के कोखी उपजेला, कवनो 'यूटोपिया खोह' से ना। कबीर सच्चा मनुष्य आ श्रेष्ठ रचनाकार दूनो रहले। ई संजोग आज दुर्लभ बा।

कबीर के समय में मनुष्यता पर खतरा रहे आ धर्म के आडंबरी जीभ सत्य के लील जाये खातिर लपलपात रहे। ओ घरी धर्म के अइसन रूप के जरूरत रहे जे संकीर्ण रूढ़िवादिता से ऊपर होखे। कबीर के द्रष्टा भाव वर्तमान के अनदेखी कइला से ना बनल रहे। उनका में अपना युग के नब्ज आँके के जतना समझ रहे, ओतने सच कहे के निर्भयतो रहे। ऊ घोष कइले...

साँच ही कहत और साँच ही गहत है,
काँच कू त्याग कर साँच लागा।
कहै कबीर यूँ भक्त निर्भय हुआ,
जन्म और मरन का मर्म भागा।

मनुष्यता सबसे ऊपर होला। चंडीदास गवले –

शुनह मानुष भाई !
शबार उपरे मानुष सत्य ताहार ऊपर नाई।।

कबीरो अपना के कवनो विभाजन के कवनो घेरा में, बन्हाये देबे खातिर तइयार नइखन। ऊ धर्म के संकीर्णता के झपिलावत निर्भयता से मुखरित बाड़े–

(क) हिन्दू कहो तो मैं नहीं,
मुसलमान भी नाहिं।
पाँच तत्व का पूतला,
गैबे खेलै माँहि।।

(ख) हम बनी उस देस के,
जहाँ जाति बरन कुल नाहिं।।

कहै कबीर एक राम जपु रे
हिन्दू तुरक न कोई।।

XX XX

जो खोदाय मसजीत बसतु है, और मुलुक केहि केरा
तीरथ मूरत राम निवासी, बाहर करै को हेरा ?

कविता तबे व्यापक होले जब ऊ 'आत्म' के साथ 'अन्य' के संवाद स्थापित करेले। अइसन संवाद जे सीधे मत होखे, कडुवो होखे, तींतो होखे, प्रखर आ तेजस्वियो होखे। कबीर के कविता प्रखर संवाद के नेवता देले.. जेमे प्रेम के अंतर्धार अउर प्रखर, अउर गहिर होला।

डॉ0 नामवर सिंह लिखले बाड़े कि कबीर के प्रिय पद ऊ हवन स जवना में ऊ एगो भारतीय नारी अस नइहर आ ससुराल के बात करत बाड़े।

कबीर प्रेमी हवन। नारी हवन। ऊ प्रेम के हुलास आ विरह के वेदना के नारी के दृष्टिकोण से देखत बाड़े, महसूस करत बाड़े। उनकर वेदना खाली दलित आ दमित वेदने तक सीमित नइखे रहत बलुक ऊ विखंडित सामाजिक स्थिति आ चेतना से टकरात बिया। कबीर जग के जंजाल से मुक्त होखे के सहज उल्लास के दुलहिन बनिए के उठावत बाड़े...

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो
चंदन काठ के बनल खटोलवा, तापर दुलहिन सूतल हो

आय जमराज पलंग चढ़ि बैठे, नैनन आँसू टूटल हो
चारि जने मिलि खाट उठाइल, चहुँदिसि धू–धू उठल हो
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत से नाता टूटल हो।।

कबीर के नारी विमर्श आज के नारी के दृष्टिकोण से एकदम अलग बा। उनका नजर में नारी के तेजस्वी रूप एगो सती के रूप में प्रगट होत बा, जब ऊ अपना सत के परीक्षा देबे खातिर अग्नि के वरण करत बिया।

कबीर के कविता ओह अमर लोक के सपना देखत बिया जहाँ न शेख बाड़े, न सैय्यद, न मोमिन, न ब्राह्मण, शूद्र। ई एक तरह से 'नास्टेल्जिया'हऽ –

जहवाँ से आये, अमर वह देसवा।
ना धरती ना अकसवा, चाँद न सूर न रैन दिवसवा
बाह्मन, छत्री, न सूद, बैसवा, मुगल पठान न सैय्यद सेखवा
जोगी न संगम मुनि दरबेसवा, सार सबद गहि चलै वहि देसवा।

कबीर मानवीय चेतना के बाँटे के पक्षधर नइखन। उनका ई कहे में कवनो संकोच नइखे कि –

'हम तो जाति कमीना, मैं कासी का जुलाहा।।'

कबीर के खोज अपना भीतर के खोज ह, 'गहरे पानी पैठ'। यदि प्रेम आ भक्ति से परमात्मा मिल सकत बा त जाति, कुल, वर्ण आदि के दंभ काहें ? कबीर में खाली दलित के खोजे वाला उनका के ना पढ़े। ऊ कबीर के अपना अनुसार गढ़े के आत्महंता चेष्टा करेला। कबीर ई बात जानत बाड़े कि लोग सत्य के अपना–अपना जेंवर में बान्हें आ ओकरा के ठठरा के मुआ घाले के जतन सोरहो घरी कर रहल बा, बाकिर बेकार। सत्य के बहुत देर तक विरूपित क के नइखे रखल जा सकत। कबीर के कहनाम बा कि सही कार्य कइल जाउ। अधिया प ढेला ठोअला से कुछ उजियाये के नइखे –

सन्तो सबद साधना कीजै।
जाहि सबद सो राम प्रगट भये, सोइ सबद लिख लीजै।।

कबीर एह संसार के 'मुरदन के गाँव' कहत बाड़े–

साधो यह मुरदो का गाँव
पीर मरे, पैगम्बर मरि गए, मर गए जिन्दा जोगी।
राजा मर गए, परजा मर गए, मर गए बैद और रोगी।।
(शब्दावली : भजन 343)

कबीर अनेक बाड़े... जीवन में, मृत्यु में, किंवदन्तियन में आ होली के हुड़दंग में आ सबसे सच्चा, सबसे ऊँचा। उनका विचारन के उहनिए लोग से बेसी क्षति पहुँचल बा, जे लोग उनकार नाँव लेत थाके ना। इहन लोग में कबीर पंथी से लेके वामपंथी आ धर्म–निरपेक्षपंथी तक शामिल बा। कबीर के संगे ऊहे चल सकत बा, जे आपन 'घर जरावे खातिर तइयार बा' बाकिर ई लोग आपन ना, कबीर के लुकाठी छीन के दोसरा के घर जरावे खातिर, डाँड़ कसले, तइयार बइठल बा।

कबीर पोथी से अधिका अनुभव के महत्व देले बाड़े। बुद्धो इहे कहले रहले। बुद्ध कहले रहले कि कवनो बात एह से मत मानऽ कि ई बुद्ध के कहल ह। तूं अपना अनुभव से सत्य आ झूठ के पहचान करऽ। हर चीज के संदेह से देखऽ। भगवान महाबीरो एही सत्य के 'स्याद्वाद' के रूप में कहले रहले। 'अनुभूति बनाम विचारधारा' ई विषय हो सकत बा विचार के।

हर विचार के एगो सांस्कृतिक परिवेश होला। एही परिवेश के अभाव के कारण 'प्रजातंत्र' आ 'मार्क्सवाद' दूनों विफल सिद्ध हो रहल बा।

मार्क्सवाद आ अउरी दोसर दर्शनन में अंतर ई बा कि अन्य दर्शन जहाँ जगत के व्याख्या करत बाड़े ओहिजे मार्क्सवाद जगत के बदले के बात करत बा। अइसना स्थिति में मार्क्सवाद एक प्रकार के 'ध र्म' बन जात बा आ 'आस्तिक' हो जात बा। धर्म खातिर ई एकदम जरूरी नइखे कि ईश्वर पर विश्वास कइल जाव। बुद्ध आ महाबीर कबो ईश्वर के ना मनले। मार्क्स से मोर्चा लेबे खातिर पूँजीवाद धर्म के आश्रय लिहलस। अनीश्वरवाद के जवाब कट्टर सम्प्रदायवाद। मार्क्सवादियन के सबसे बड़ कमजोरी ई बा कि ई लोग कबीर अस कट्टर संप्रदायवाद से लड़े के कूबत नइखे राखत। ई लोग हिन्दुत्ववादी तत्वन से आतंकित बा बाकिर

कठमुल्लावादियन संगे गोटी खेलत बा। कबीर त न पंडितन से डेरातारे, न कठमुल्लन से। ऊ अपना युग के शक्तिशाली धार्मिक समुदायन से निर्भय लड़त रहले। आज के राजनेता अउर धर्मनिरपेक्षतावादी लोग के हर स्तर पर प्रत्येक अलगाववादी प्रवृत्ति के विरोध करे के चाहीं बाकिर अइसन हो नइखे पावत। कबीर अपना जीवन में (1398–1518 ई0) त सफल रहबे कइले, मुअला के बादो जस–जस समय बीतत बा, उनकरा सफलता के ग्राफ निर्बाध बढ़ले जात बा। ऊ हर युग के पथ–प्रदर्शक बाड़े। उनका साथे सत्य बा, एह से धर्म बा, एह से जय–बिजय बा... यतो धर्मस्ततो जयः। कबीर घृणा, दुष्प्रचार आ हिंसा के मार्ग पर चले वाला संहारक ना, प्रेम के कठिन कठोर राह पर चले वाला सर्जक रहले। ऊ सामाजिक स्तर पर मानवतावादी रहले। अपना विचारन आ सदाचार के बल पर ऊ आजीवन सत्ताधारियन आ धर्माचार्यन से टक्कर लेत गइले।

खाली हदीसे ना, हिन्दुओ संहिता बहु–विवाह के समर्थन करेला बाकिर जवना दिने 'भारतीय कोड बिल' ना बन के 'हिन्दू कोड बिल' बनल, ओही दिने ई साफ हो गइल कि भारतीय संसद के खाली हिन्दुअने के विषय में कानून बनावे के अधिकार बा, काहें कि ई देश खाली हिन्दुअने के ह। ई ह हिन्दुअन के अधिक हिन्दू आ मुसलमान के अधिक मुसलमान बनावे के चाल, जेसे समाज साफा दू फाँक में बनल रहे आ बीच राह से सत्ता आ शासन के विषयी चालबाज आ विषधर बे–रोक–टोक विचरत रहसु।

बुद्ध (563–483 ई0पू0) के बाद जाति व्यवस्था के जबरजस्त चुनौती कबीर से मिलल। पहिला हाली दलित आपन लड़ाई अपने लड़त रहले। खाली कबीरे ना, मये संत। संत मत के प्रचार आ प्रसार के श्रेय रामानंद के दिहल जाला जिनकर जन्म प्रयाग के एगो कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में भइल रहे। नाभादास अपना 'भक्तमाल' में लिखले बाड़े कि इनकरा शिष्यन में कबीर, पीपा, धन्ना आदि प्रसिद्ध रहले।

संत लोग आत्म–गौरव से भरल रहले। कबीर पोंगा पंडितन के ई कह–कह ललकारत रहले कि 'तू बाभन मैं कासी का जुलाहा, बूझहु मोर गियाना'।

●●●

गज़ल

❑ राम यश 'अविकल'

का जाने का भइल बा आजु हमरा गाँव में।
हर आदमी लउकत इहाँ, बाटे तनाव में।

केकर असर भइल अउर कइसन हवा बहल
बदलाव कइसे आ गइल अतना सुभाव में?

कहँवाँ गइल अपनन नियर, ऊ अपनापन के भाव
सब केहू लगल बाटे आजु अपने दाँव में।

ना फगुआ के अबीर रँगे, चैत के न राग
ठनके न कहीं बिरहा अब, पीपर का छाँव में।

कहानी

जीवन-संगीत

❑ **रामदेव शुक्ल**

भइया ! एह पुकार में बहेलिया के तीर से घाही होके मरत हरिना के दरद भरल रहे। दुखसुख से बहुत उप्पर उठि गइल रहलें गौतम। तब्बो एह पुकार के बोलावा उनके आंखि उघारि दिहलसि। मुहे की भरे अपने गोड़ पर गिरल अदिमी के कान्हे पर हाथ धइलें। पुछलें– 'तू के हउव भाई ! कवने दुख में परल बाड़ ? हमसे का चाहत बाड़' ?

उठि के बतावऽ... गौतम आपन बात बिचवे में छोड़ि दिहले जब आवे वाला के चेहरा देखलें। उठि के खाड़ हो गइले। उनके बांहि पकड़ि के बगल में बइठावे के कोसिस करत करत पुछलें – 'सोना भइया ! का भइल ! अपने के का हो गइल ? राजपाट ठीक चलि रहल बा न ?' पुछले कि सथहीं गौतम के खेयाल भइल कि सोना भइया का राजपाट से कवन मतलब ? इनका मतलब त बढ़िया खाइल, बढ़िया से बढ़िया शराब पीयल भा रोज रोज नई नई सुन्नर मेहरारू के कोरा में दाबल एतने से रहेला। उमिर में गौतम आ शोण बराबर रहलें। सुन्नर एतना रहलें शोण कि लोग उनकी ओर ताके त ताकते रहि जाव। गौतम उनके कहें, 'सोना भइया !' जइसे आगी में तपल कंचन। जवने के कुंदन कहल जाला। गौतम के सुभाव सोना भइया के उल्टे रहल। कब्बो उनके मन न शराब की ओर झूकल न सुन्नर मेहरारू कोर। ओहर एह सोना भइया के मन ओह दूनो के छोड़ि के अउरी कवनो चीज में नाही लागे। ऊहे सोना भइया आजु गौतम की चरन में गिरल बानें। उठवले की बादियो बोलि नाही पावत बानें। गौतम सोना भइया के खींचि के बगल में बइठा लिहलें। उनकी आंखि में आंखि डारि के पुछलें – 'बतावऽ तहरा कवन एइसन दुख बा जवने से तूं आपन सुभाव छोड़ि के दुखी हो गइल बाड़ऽ ?'

सोना भइया के बोली निकलते नाहीं रहल। गौतम के बहुत समुझवले बुझवले के फल भइल कि सोना भइया फेरू उनकी चरन में भहरा गइलें। गौतम फेरू उठा के खाड़ कइले। कहलें 'तूं आपन दुख बतावऽ।' सोना भइया हाथ जोरि के कहले – 'तथागत! हमके अपनी सरन में ले लऽ। हमके आपन चेला बना लऽ'। गौतम, सोना भइया के दुख समुझि गइले। ऊ त देश दुनिया के इहे समुझवले रहलें कि इंद्री के सुख बहुत थोर होला आ ओकरे बाद ओसे जनमल दुख बहुत जियादा होला। एकर मतलब ई भईल कि सोना भइया के राति–दिन चले वाला भोग विलास इनके दुख के समुंदर में बुड़ा दे, ओसे पहिलहीं इनका चेत हो गइल बा।` गौतम के नीक लागल कि एगो आत्मा अब सही राह पर चले के तइयार बा। कहलें– 'सोना भइया, हमन के बराबर के भाईं हईं जा। भाइयो से जियादा मीत हईं जा। जब तूँ हमार चेला हो जइबऽ त हमार हर बात माने के परी। जवन तहार शौक सिंगार बा, ओह सब के तेयागि देबे के परी। एक बेर खाए के परी। काठ के आसन पर सूते के परी। तहरा नीनि कइसे आई? ई कुल सोचि ल। ओकरे बाद कहबऽ त हम तोहके चेला बना लेबि।'

सोना भइया गौतम के हाथ पकड़ि के कहले– 'देखऽ गौतम। हम सब कुछ सोचि समुझि के, गुनि गाँथि के तब तहरी लगे आइल बानीं। तूं जानत बाड़ऽ कि भोग विलास के हम ओर लगा दिहले बानीं। अब ओह जिनगी के नरक से हमके निकारल तहरिए हाथ में बा।' गौतम कहले – 'तूँ तइयार हो जा त, सब कुछ हो जाई, बाकि अपने मन के पक्का क लिहले कि बादे धरम की सरन में आइल ठीक रही। पहिली बाति त ईहे कि दिन भर तहरा खइले पियले के

आदत बा। जब भिक्खु हो जइबऽ तब एक बेर दुपहर में खाए के परी। बतावऽ कइसे रहबऽ ?' सोना आकुल बेआकुल होके कहलें– 'भइया ! एक बेर अपने सरन में लेके देखि लऽ। हम एक्के बेर खा के रहि जाइबि। केहू के कौनो बात नाहीं टारब, बस हमके धरम के परसाद देके हमके बचा लऽ। हमके बचा लऽ।'

सोना भइया के हठ देखि के गौतम उनके एगो दिन बता दिहलें। कहलें कि ओहि दिन ले अपना के जांचि परखि लऽ। जब तहरा पक्का विसवास हो जाई कि एह रस्ता पर चलले में तहरा कवनो दिक्कत नाहीं होखी, तब हम तहके धरम की सरन में ले लेबि। गौतम एक जने से कहि दिहले कि सोना भइया के रहन सहन पर निगाह रखले रहे। तिसरे दिने ऊ अदिमी आके बतवले कि सोना भइया सब सिंगार पटार फेकि दिहले बानें। दुपहर में एक बेर सादा भोजन करेलें। ओकरे बाद कुछ नाहीं खालें। चुपचाप आंखि मूनि के बइठल रहेलें। कब्बो कब्बो उनकी दूनू आंखि से लोर झरत रहेला। केहू से बोलल बतियावल उनका नाहीं सोहाला। ई कुलि सुनिके गौतम बुद्ध के भरोसा हो गइल कि अब सोना भइया के मन बदलि गइल बा। जवन दिन पक्का रहल ओहि दिन सोना भइया के बुद्ध, धरम अउर संघ की सरन में ले लीहल गइल। चीवर पहिरले कपार छिलवले सोना भइया के देहिं दमकति रहे। उनके चेहरा पर कवनो भाव नाहीं रहल। सबसे पहिले उठल, नहा धो के तथागत की आसन की समने बइठि के अगोरल। जब संघ के भिक्खु लोग जुटि जांय, तथागत के परबचन होखे लागे, त एह नवका भिक्खु के आसन अडोल बनल रहे। सबके उठि गइले की बाद उठें। शांत रहें। भोजन के बाद आंखि मूनि के पेड़ के नीचे ध्यान लगवले रहें। केहू से बोलत, बतियावत, घूमत–टहरत उनके केहू नाहीं देखे।

भिक्खु लोग एह बात पर धेयान दीहल कि नवका साधक एक दिन अँतरा देके भोजन करें। एक दिन एक जने बिरघा साधक पूछि परलें, 'तूं रोज भोजन काहें नाहीं करे लऽ?' सोना साधक धीरे से कहलें – 'पहिले दिन रात भोजने करत रहलीं। अब धरम की सरन में आइल बानी त ओह समय के कसर निकारे के कोसिस करि रहल बानीं।' एक दिन तथागत भिक्खु लोग से पुछलें– 'सोना भंते कहां बाने ?' लोग बतावल कि बिहार से बाहर एकांत में पटाइल बानें। कई दिन बाद केहू ले जाके खिया देला त दू चारि कवर खा लेलें। अपने देह के एतना सिझा दिहले बाने कि चले फिरे के सकती नाहीं रहि गइल बा। तथागत कश्यप के बोला के कहलें– 'जाके उनके दसा देखऽ। उनके समुझाव कि जइसे सब लोग खात पीयत बा, ओही लेखा ऊहो खाए पीएं आ साधना करें। कश्यप जी कई बेर सोना भिक्खु की लगे जा के बइठले। उनके तथागत के सनेस दिहलें।' अपनी बुद्धि भरि समुझवलें। सोना भिक्खु एक्के रट लगवले रहलें– 'हम एह देहि से भोग के अंत लगा दिहले रहनीं। अब ओह समय के रकत मासु सुखा के मानबि। तब्बे हमार पराछित होई।' कश्यप मुनि तथागत की लगे आके कहलें– 'अब आपे कुछ करीं। एह लेखा रहिहें त सोना भंते कुछुए दिन में देहिं छोड़ि दीहें।'

तथागत के आपन तपेस्या मन परि गइल। चुपचाप उठलें आ कश्यप मुनि की साथे उनके खोज में चललें। जरत रेती पर लोटाइल सोना भंते के देहिं जरत रहल। तथागत कश्यप मुनि के सहारा से सोना भंते के उठा के पेड़ की छांहे ले अइलें। पतई के बिछौना पर उनके सुता दिहलें। पानी से उनके मुंह पोछलें, दू चारि घोट पानी पियवलें। उनके कपार पर हाथे से सुहुरावे लगलें। कुछ देर बाद सोना भंते के आंखि खुलल। तथागत के चीन्हि के उठे के कोसिस करे लगलें। बाकि एतना सकती नाहीं रहल कि उठि

के बइठें। तथागत उनके सहारा देके बइठवले। कश्यप मुनि अपने हाथे उनके रोकले रहलें कि एक ओर ढिमिला न जायँ। तथागत पुछलें– 'सोना भइया ! अपने वीणा बजवले में बहुत गुनी रहल हईं।' सुन के, सोना भिक्खु के चेहरा पुरनकी बात से तनीए –सा हरिअराइल। कहलें –'ऊ सब अब भुला गइल बानीं।' तथागत कहलें–' रउवा से वीणा बजावे के नाहीं कहब। रउरा एतना बता दीं कि वीणा में त तार कसल रहेलें। सबसे नीमन बाजे खातिर तार खूब कसि देबे के चाहीं?'' सोना भिक्खु कहलें– 'खूब कसि दिहले पर नीमन संगीत नाहीं निकरी।' तथागत पुछलें– 'तब का खूब ढील राखे के चाहीं ?' सोना भिक्खु कहलें– 'तब त वीणा बजबे नाहीं करीं।' तथागत पुछलें– 'त ई कइसे मालूम होई कि वीणा के तार नीमन राग बजावे लायक हो गइल बा।' सोना भिक्खु कहलें– 'तथागत, एह मरम के ऊहे जानि पाई जे वीणा बजावे के जानत होखे।' तथागत कहलें– 'जब रउवा एह बात के जानत बानीं त अपने जीवन वीणा के तार एतना कसि के काहें तानत बानीं कि ऊ टूटि जाव ? पहिले राउर जीवन–वीणा के तार एतना ढील रहल कि कवनो राग नाहीं निकलत रहे। अब रउवा एतना तानि दिहले बानीं कि टुटही वाला बा। जब सांसे नाहीं चली, त साधना कइसे होई। जीवन–वीणा के मध्यम तार से संगीत के सिरजना होखी। रउवां खूब ढील कइके देखि लिहलीं। भा खूब तानि के देखि लिहनीं। अब हमार कहल मानीं एके बिच्चे में राखीं। देखीं एकरा में केतना मधुर राग बाजत बा।'

●●●

आत्म व्यंग

कउड़ी ना पइसा

❑ ललित बिहारी मिश्र 'सुहाग'

गाँव भले सुन्दर
बाकि सुख–शान्ति बाहर
बिचवे में घर बा
गइलो में डर बा
खेत चरे भइंसा, का कहीं कइसा?
कउड़ी ना पइसा, हाल बा हमार अइसा।

सभ खेती करेला, इहें जिए मरेला
नहाय भले नदी में, अपने नेकी–बदी में
बाग–बगइचा घूमेला, धूर–माटी चूमेला
पोखरा से नहर ले, उखड़त बनत डहर ले
कउड़ी ना पइसा, हाल बा हमार अइसा।

फगुआ के हाला में चइता गवाला
आवेली दीवाली, छूँछ खाली–खाली
ढोवे के परंपरा, का करसु बसुंधरा?
कउड़ी ना पइसा, हाल बा हमार अइसा।

सोच आ बिचार छोड़ऽ, प्रेम के व्यवहार छोड़ऽ
रीति आ रेवाज मुअत, जाति बीरखि बीज बोअत
छूँछ धरा–गगन बा, गाँव तबो मगन बा।
कउड़ी ना पइसा, हाल बा हमार अइसा।

●●●

कहानी

पाहुन

❑ रमाशंकर श्रीवास्तव

मंगल सिंह के आँख, अभी झुलफलाहे रहे तले खुल गइल। पुकरले, ऐ बलिराम! उठ भाई, देर हो गइल। माल गोरू के खिया पिया के अलगा कर। रेलगाड़ी के टाइम हो गइल बा, आठ बजते गड़िया आ जाले। दूनू चाचा भतीजा जल्दी गाय–बैल के सानी–पानी कइल लोग। बलिराम खरहरा से दुआर बहरले। तले मुँह से गारी निकलल– देखीं ना चाचा, गइया त आज फेनू छेरले बिया। मंगलसिंह देखते, उबलले– बताव ना, हमरा घरे जब केहू पाहुन के अवाई होला, त ई छेरे लागेले। जल्दी हटाव भाई, एकरा के ले जाके दखिनवारी ओसारा के नाद पर बाँन्ह द। हमार इज्जत ई गइये ले ली।

बलिराम घर दुआर के सफाई में लगले। मंगलसिंह घर के भीतर तनी कड़गेरे आवाज में पुकरले– नए आज अपने लोगिन जल्दी उठीं। गोविन्दनगर वाला पाहुन चहुँपही चाहत बाड़े। घर के लोग जाग गइल– कपड़ा लता भी बदल लिहल। सास के इयाद पड़ल– पिछला बेरी मझिला पहुना टोक देले रहले– अम्मा जी, एह गाँव में धोबी नइखे का, साड़ी गंदा पेन्हले बानी ? सास त लजा के भीतरी चल, गइली, दोसर साड़ी बदल के अइली। आज पहिलही से भेष भूषा ठीक क लेहली। अपना पति मंगलसिंह से पुछली– निरंजन के घरे तनी संदेश ना पेठा देहनी हं अपना खेत में से नीमन–नीमन मकई के बाल तूर के चहुंपा जास। बड़का पहुना के बाल बहुत अच्छा लागेला।

अच्छा, खबर पेठावे में केतना देरी लागी। पहुना आवते ना नू चल जइहें। तीन साल पर ससुरारी आवत बाड़े। दुइयो तीन दिन त रहिहें। घंटा बीतल। नीम के अलोता उगल सुरुज महाराज बहरा आ गइले। चारो ओर धूप चमके लागल। तले दुआर पर रेक्शा आके लागल। पहुना आ गइले। छोट लोग दउड़–दउड़ के उनकर गोड़ छुअल। पहुनो अपना सास–ससुर के गोड़ छुअले। बड़ सरहज के देखते बढ़के उनकरो पॉव छु के प्रणाम कहले।

–आरे, हई अँगुरी में का हो गइल बा पट्टी बन्हवले बानी ?

– कुछू ना, रात के आन्ही में जल्दी–जल्दी जंगला बन्द करत रहनी तले अंगूठा कुँचा गइल।'

– आरे त, दवा–वोआ लगवनी किना कि हम डाक्टर के बोला दीं। अब त ऊ अपना दोकानी में आ गइल होइहें। एगो पट्टी लगइहें घाव दू दिन में सूख जाई।' सास के चिन्ता पर पहुना कहले– ना अमां जी, इहो पट्टी डॉक्टरे के लगावल ह। अउर कहीं लोगिन, आपन हाल चाल। घर–दुआर के रूप तनी बदलत बुझाता। मंगलसिंह बोलले– हं रोज–रोज के कुकरहट में फुर्सत मिलल। सात साल से जमीन झगड़ा में पड़ल रहल। नाहियो त दसो गो अमीन नाप जोख गइल होइहें। पिरथवीचंद के केतना बार समझावल गइल। माने के तइयार ना, आखिर में हमहीं एक हाथ जमीन छोड़ के आपन छरदिवारी बनवा लेहनी हं। –एतनो पर उ टेंट बेसाहे से बाज ना अइले, गाछ काटे के तइयार रहले। गाँव के लोग केहूं तरे समझावल। –सास के सूचना पर पहुना के सांस गरमा गइल। कहले– 'अमां जी रउआ, हमरा के खबर काहे ना देहनी। एगो मोबाइल मार देतीं त हम नापी के टाइम में आके खड़ा हो जइतीं। हमरा के देख के बड़–बड़ अमीन लोग के धोती सरके लागेला। ठोंठ पकड़ के हम आपन जमीन पर कब्जा करतीं। आ अमीन लोग के का लेले बानी। रूपया–पइसा के गुलाम ह लोग। जेब में नोट रखते–पुतवो मीठ, आ भतरो मीठ होखे लागेला। तले बलराम सिंह

आके कहले – ''इ सब बात बादो में होत रही। पहुना रेलगाड़ी के सफर क के आइल बानी। पहिले हाथ मुँह धोईं–जलखई करीं भर दिन पड़ल बा बतियावे के।''

एह घर के इज्जत के जोगावे में विनोद सिंह के फिफटी परसेट हाथ रहे। जबसे उ एह परिवार के दामाद बनले विनोद सिंह हर झगड़ा–लड़ाई में आके फैसला करवले। आइ. ए. तकले पढ़ले रहले– बगंलोर में रहत –रहत अंगरेजियो के ज्ञान हो गइल रहे। चार साल पहिले घर में हथियार मिलला के केस में जब मंगलसिंह के नाम थाना में चहुँपल त विनोद सिंह आके थाना के दरोगा से हन के अंगरेजी में बतियवले। दरोगवो चकपका गइल। बुझाइल जे केस गलत थमा गइल बा। कहीं ऊपर ले नाम चहुँप गइल त नोकरियो जाई। मंगलसिंह घरे आ गइले। गाँव टोला के लोग पहुना के एह धरम कार्य पर एगो थपरिये ना बजावल दुआर पर आके उनकर खूब तारीफ कइल। एक जना कहले– हँ त अइसन पाहुन भागने जोगन मिलले। श्रीरामपुर के ई भाग बा जे अइसन पाहुन मिलल बाड़े। पहुना से दरोगो डेरा गइल ह। सुने में आइल कि उनकर अंगरेजी में बात सुन के ऊ तुरंते एगो कासेंटेबिल के चाय लियावे के भेजले। चाय बिस्कुट से विनोद सिंह के स्वागत भइल।

सांझ के महेन्दर बाबा लाठी टेकत दू आदमी के साथे आ गइले। कहले–बड़ा भाग से अइसन पाहुन से भेंट होला। रउरा शादी के जहाँ तकले हमरा इयाद बा चौदह साल बीत गइल। रउओ त कमे आइले एने। तीन साल पर आइल बानी। ना मालूम हमनी से कवन अइसन चूक भइल जे रउआ ससुरारी आइल भुला गइनी।

– ना चाचा, अइसन मत सोचल जाव। हमार मन त आवे खातिर हमेशा करेला मगर छुट्टी मिलल मुश्किल बा। आजकल आदमी के भगवान मिल जइहें मगर बंगलौर में छुट्टी मिलल इम्पासिबुल बा। हमरा फैक्ट्री के बीरमानी साहेब कबो जे हमरा से हिन्दी में बोलस। हमरा के देखते बोल पड़ेले– हेलो भिनोद! हाउ आर यू।

आ हम का बताई उनकरा से, केतना बेर कहले होखब, नो सर, आइ एम नॉट भिनोद ।आइ एम विनोद। हमरा बतिया पर उ हँसे लागेले।– ''से त बात बा बाबू। फैक्ट्री में राउर प्रताप बा। सभे राउर बात के भैलू जरूरे करत होई देखल ना जाव हमार पोता दू साल से बी.ए. क के बेकार बइठल बाड़े। अब रउए उनकर जोगाड़ बइठाईं। बंगलोर में उनकर नौकरी लगा दीं, चाहेब त उ रउआ लगहीं रह जइहें। कवनो परसेंट बइठाइल जाव। रात दिन राउर सेवा करिहें।' आरे चाचा, वह बात छोड़िए। हं उनकर एगो बायडाटा दे दीं, हम कोशिश करेब।

बुढ़ऊ के साथे एगो युवक आइल रहले। बुढ़ऊ कहले, ए हरिशंकर, ताकत का बाड़े रे। परनाम कर पहुना के। इहां के तोहार फुफा लागेब। हरिशंकर तपाक से गोड़ छू के परनाम कइले। लगहीं रखल लोटा से हाथ के झटका लाग गइल। भरल लोटा के पानी धरती पर गिर गइल। बुढ़ऊ कहले– ए पाहुन, देखीं कइसन जतरा बा। भरल लोटा के पानी जमीन पर गिर गइल। सब शुभे बूझीं। पारबती जी के बियाह होखे के पहिले भरल घइला के पानी ढिमला गइल रहे। अइसन शुभ साइत बनल कि शिवजी से बियाह होइए के रहल। तब पहुना एहिजा अपने कबले बानी? तनी हमरो घरे चलके जूठने गिरा देतीं। हम कवनो बाइली ना हईं। हमार बुढ़ियो कहत रहली ह– बियाह के दुआपूजे में हम उहां के देखले बानी। आरे हमरो जनाना अब असी–बयासी के माथ धइले बाड़ी। तनी अपने आ जइतीं त उनकरो मन के साध पूर हो जाइत।'

ठीक बा चाचा, हम

आएब, बाकिर अगिला जातरा में। चले के बेर साहेब छुट्टी ना देत रहले –कहले मस्ट कम बैक भेरी सून। का दो अपने कहतानी, तनी खोल के कहीं।

–आरे, उ इहे कहले कि जल्दी से जल्दी लौटिये।

पहुना दू दिन रहले। बहुत लोग आपन–आपन समस्या लेके आइल। दुआर पर भीड़ लगले हे। पहुना के नाश्ता खाना के टाइम ना मिले पावे। उ बलराम सिंह अइसन आदमी रहले जे उनका के कुरसी पर से उठाके अंगना में ले जाके जबरदस्ती नाश्तापानी करा देस। पहुना हर समस्या के दवा रहले। काम करे से केहू के इन्कार ना कइले। लोग तारीफ करे कि पाहुन के लइकवो सुनत बानी कि हिन्दी कमे बोले ले सन। बाप महतारी के डेडी कहेले सन। बंगलोर में बड़का से केहु तकिया मांगल त उ कहलस पिलो कहिए। अइसन अंग्रेजिया लइका हे गाँव में अधसी। ई कवनो कम बात नइखे कि पहुना एतना जानते हुए भोजपुरी बोल लेत बाड़े, आपन धरती के भाषा ना भुलाए के चाही। मगर आगे के जमलका भोजपुरी से परहेज करत बाड़े सन। भोजपुरी के तीत खीरा नियर चीख के छोड़ देत बाड़े सन। गाँव भर में लोग के मालूम हो गइल कि मंगलसिंह के पहुना आज बंगलोर लउट जइहें। भोरहीं तीन चार आदमी परनाम करे अइले।

– तब विनोद बाबू, आज त जवाई बा? एक जाना पूछले।

–हं ,अब का कइल जाव। नौकरी मे आजादी कहाँ बा। बंगलोर से साहेब के तिल तिल फोन आवत बा 'कम भेरी सून।' हमूं जवाब दे देहनी– 'दिस इज माई भिलेज माइ भिलेजर्स आर गुड। दे डोन्ट वान्ट दैंट आई शुड गो बैक टू बैंगलोर।' सामने खड़ा लोग एक दोसरा के चिहा के देखे लागल। जइसे कहत होखे लोग–बाप रे बंगलोर में रहत –रहत पहुना सब बतिये अंगरेजी में बोले लगले।

'तब पहुना, हमार बतिया इयाद बा नू। हम अपना सार से कह देले बानी– कवनो फिकिर कइला के काम नइखे।' पहुना से सब बात कहा गइल बा। परसेंट लगला के बात बा। ठीक बा, हमरा के लउटे दीं। कवनो जोगाड़ बइठाइब। का कहल जाव समूचा देश बंगलोर पर टूट पड़ल बा। आरे पाहुन, लाज संकोच मत कइल जाई। नौकरी खातिर चालीस–पचास हजार खर्चो करेके पड़ी त हमरा करे में कौनो दिकदारी नइखे। एहसाल धान नइखे मराइल आ ऊँखो मजबूत बा। पहुना उठे लगले। अभी अटैची– बेग संभारे के बाकी रहे। हड़बड़ी में कवनो चीज छुट जाव त रास्ता में दिकदारी होई। आखिरी बार सभ के परनाम क के उठले तले दहिना पैर के चप्पल गायब रहे। सभे चप्पल खोजे लागल। मंगलसिंह के मुँह में गारी फुरफुराए लागल, लेकिन पहुना के आगे तनी कंट्रोल रखहीं के पड़ी। एतने कहले– तनिको सा हमरा दुअरा केहू आ जाला त जलेसर के लइका आके झुक जाले सन। जइसे आदमी देखलहीं ना होखऽ सन। ओही में कवनो चपलवा उठा ले गइल होई। एक आदमी जलेसर के घरे दउड़ल। बाकिर चप्पल के पता ना चलल।

पाँच मिनट में बलराम सिंह हाथ में चप्पल लटकवले अइले। ओह टोला के करियकी पिलिया बड़ा चोट्टिीन हियऽ! भुसउल के लगे बइठ के चपलवा चबावे शुरू कइले रहल हिय कि हम चहुंप गइनी हँ। एके इंटा में कूंकूं करत भगली ह। एह कुतवन के भी एतना खेयाल नइखे कि गाँव में आइल पाहुन के बकस दीं।' पहुना चप्पल पेन्ह के अन्दर गइले– कहत गइले अपने सभन निसखातिर रहीं। हम मोबाइल पर खबर देत रहेब।' पहुना के गइले सवा साल हो गइल। अभी तकले मोबाइल पर कवनो खबर ना आइल। लोग इन्तजार में बा।

●●●

कहानी

साँच के परतीति

❑ अशोक द्विवेदी

सांझ गहिरात रहे। 'लेबर' काम बन्न क चुकल रहलें स ऽ। मजूरी क हिसाब करत करत राघवेन पसेना–पसेना हो चुकल रहे। ओकरा पास ओघरी, पाकिट में साढ़े सात हजार ले रूपया रहे आ हिसाब लमसम आठ नौ हजार ले हो गइल रहे। मजूरन क मेठ बटेसर कबो हिसाब आ कबो राघवेन के चेहरा प चढ़त उतरत बेचैनी के देखत–पढ़त रहे। राघवेन के उलझन आ अउँजाहट के खतम करे खातिर करे खातिर ऊ धीरे से टोकलस, 'हिसाब त होइये गइल बा, रउरा लगे जवन बा, ऊहे दे –ले के खतम करीं, बाकी दुसरा दिने दिया जाई!'

–' हमके त पूरा मजूरी चाहीं! बहिन क बिदाई बा!' अधीर होत रबिन्दर बोलल। –'हमरा त तहरो ले ढेर अकाज बा........ हमार लइका बेमार बा! धिरजा बिच्चे में कूदि परल। राघवेन दूनों के घूइरत, हिसाब के कापी चपोतत खिसियाइल, ''तहन लोग क मजुरिया लुटात नइखे, ना हमहीं भागत बानी। एकदमे अगुता गइल बाड़ ऽ जा जइसे अजुए कुल्हि ओरियात होखे।' –

'हँ हँ, अउँजइला से थोरे काम चली, सबकर पेमेन्ट होई। हमहीं आज आपन मजूरी ना लेब. ..... सात दिन काम भइल बा, एकाध ा जना के दू दिन क मजूरी आज ना मिली त कुछ बिगरि ना जाई, दीं जी राघवेन बाबू, जवन बा तवन एकट्ठे दे दीहीं!' बटेसर बिच्चे में टोकत बोलल, तोहन लोग ई देख ऽ जा कि राघवेन बाबू अउरी ठीकेदार लोग लेखा चालबाज आ फितरती ना हउवन!

–' छोड़ ऽ भाई इ प्रबचन. .... हई सात हजार रूपया बा आ हई मजूरी–, आपन देत–लेत रहिह ऽ। हम काल्हु जे.ई किहाँ जाइब. ...... पेमेन्ट मिलते सबकर पाई–पाई चुक्ता हो जाई!' राघवेन बटेसर के रूपया देत उठि गइल। – हम कूल्हि बूझत बानी मालिक........... आठ बरिस से एह ठीकदरिये में बानी, बटेसर रूपया लेत बोलल रउवां घरे जाईं, हम ए लोग के सम्हार लेबि।'

राघवेन के कपार टनटनात रहे। उठ के मोटरसाइकिल स्टाट कइलस आ मेहराइल मन लेले चल दिहलस। मन में उधेड़– बुन लागल रहे, चल के नहाइ–धोइ के खाइल पियल जाव आ ठीक से सूतल जाव फिर फजीरे देखल जाई। दिन भर क तीखर धाम, गरमी आ ऊमस से दे`ह चटर–चटर करत रहे, मोटरसइकिलिया प हवा लगते कुछ राहत मिलल। गाँव के मोड़ वाली चट्टी लउकत रहे'। दुकान गुमटी बन हो गइल रहली स ऽ। चाह पकौड़ी वाली दुकान प अँजोर लउकत रहे। राघवेन मोटर साइकिल रोक के खड़ा कइलस आ बहरी धइल बेन्च प बइठत, पानी आ चाय मँगलस। एगो छोट लड़िका मग में पानी दे गइल। आँख मुँह पर छपाकी मारि के मुँह धोवलस राघवेन, तब तनी राहत भेंटाइल। अबे गमछी से मुँह पोछते रहे, तले चाय के गिलास आ गइल। ऊ चाय के गिलास उठा के मुहें लगवते रहे कि केहू पाछा से सलाम कइलस। पाछा तकलस त 'चन्द्रदीप' रहे सुखराम चौधरी क लइका, दू बरिस पहिले कलासफेलो रहि चुकल रहे। चिहाते पुछलस,–'का हो चन्द्रदीप कब अइले भाई? तूँ त बम्बे रहले हा नू? –' काल्हुये अइलीं। आज तनी घर के काम से जिला प गइल रहलीं हँ। टेम्पू से उतरलीं त तूँ लउकि गइल ऽ। हमरो सुतारे भेंटा गइल... अब तहरे गाड़ी से गाँवे चल चलब, ना त पैदल जाहीं क रहल हा...।'

'आवऽ, बइठऽ! चाय पीयऽ!' अब्बे चलते बानी! चन्द्रदीप बइठि के चाह सुरूके लागल, ''अउर सुनावऽ, एघरी का करत बाड़ऽ? '' ऊ पुछलस –' अरे भाई तोहन लोग लेखा नोकरी त मिलल ना, बस ठीकेदारी करत बानी! ब्लाक का जरिये एगो सड़क क काम मिलल बा ऊहो बुझाता कि घरहीं से गँवावे के परी, हमरा से

तीन–पाँच सपरी ना.....' राघवेन के ब्यथा जबान प आ गइल फिर मुड़ी झटकलस आ उठ के चाय वाला के पइसा देत, बोलल, 'चलऽ भाई अब चलीं जा,! '–ना भाई राघवेन! ठीकेदारी खराब थोरे बा. .... एक एगो ठीकेदार बाड़न सऽ कि साले–दू साल में लाखों कमा लेत बाड़न....... गाड़ी, मोटर, पावर, पइसा सब मिल जाता, कुच्छे बरिस में का से का हो जात बाड़न।' चन्द्रदीप कहलस।

राघवेन का समझ में ना आइल कि चन्द्रदीप कवना दुनियां, कवना सपना क बात करत बा। गाँव आ गइल रहे, बहरवार चौधुरटोला प गाड़ी रोकत चन्द्रदीप से बोलल, ' अच्छा भाई चलऽ, फेर भेंट होई.... अभी दू चार दिना रहबऽ नू?'
चन्द्रदीप उतर के नमस्कार बोलो, एकरा पहिलहीं राघवेन के मोटरसाइकिल ओकरा टोला–का ओर मुड़ि गइल।

●●●

दुसरा दिने, दस बजे जब राघवेन जे. ई. का क्वाटर प पहुँचल त ओकरा ओसारा में दू गो पुरान ठीकेदार बइठल पान कचरत रहलन सऽ। उनहन का सोझा टेबुल प खाली कप–प्लेट आ गिलास धइल रहे। सलाम बंदगी का बाद राघवेनो एगो कुर्सी घींचि के बइठ गइल। गर्मी से एही बेरा ओकर गंजी भींजि गइल रहे। –' का हो, काम धाम कइसन चलत बा? पहिल ठीका हऽ, तनी सम्हारि के चलिहऽ भाई ,ना त फँसान हो जाई।' गर में लटकत–सोना के मोट सिकड़ी धुमावत एगो ठीकेदार नसीहत दिहलस –' पेमेन्ट खातिर जे.ई. साहब से साइन करावे के बा नू? देखिहऽ ईहो एघरी रेट बढ़ा के बीस पर्सेन्ट के देले बाड़न!' दुसरका मरिचा क धुँकनी दिहलस राघवेन के मिजाज पहिलहीं गरम रहे। ऊ बोलल... 'भइया सब धान बाइसे पसेरी ना होला..' ऊ अँटकि गइल। पर्दा हटाइ के जे. ई. बहरा निकलि आइल । 'सलाम साहेब!' राघवेन अचकचाइले खड़ा हो गइल।
–' का हो बाबू साहब, रोड त बड़ा बढ़िया फेंकवावत बाड़ऽ! जे. ई. मुस्कियाइल, फेर हाथ का इशारा से भितरी बोलावत भितरिया गइल।
–' जा भाई जा... हमहन के त साइट पर लिया जाये के पड़ी, साहब तोहार काम पहिलहीं देख देख लेले बाड़न, जा..... साइन करावऽ!' दुसरको बोलल। राघवेन पाकिट से मजूरी चार्ट आ बिल क लिफाफा निकालत जब भितरी ढुकल त सोफा प आराम से बइठल, जे.ई. बड़ा मोलायमियत से उनके बइठे के इसारा कइलस, ' दस्तखत करावे के बा नऽ? ले आवऽ कागज...... हमार पर्सेन्टेज त ले आइले होखबऽ, द भाई आज बी.ड़ी.ओ. के पइसा देबे के बा..... ।' –आँय, कइसन पर्सेन्टेज? राघवेन अचकचाइल पुछलस। – अनजान मत बनऽ भाई। सब जानत बा कि बीस पर्सेन्ट लागेला. ...... तूँ नया बाड़ऽ, कामो बढ़िया करवले बाड़ऽ बाकि ईहो जरूरी रसम बा.....हम आपन हिस्सा छोड़ियो देब तबो ऊप्पर ले देत लेत पन्द्रह पर्सेन्ट होइये जाई। तहार नब्बे हजार क बिल बा, तुँही जोरि लऽ.....।' जे.ई. बेझिझक कहलस।
–' अरे सरकार हमके ई कुलि ना मालूम रहल हा, हम त घरे से बीस–पचीस हजार लगा चुकल बानी। विधायक जी रउरा किहाँ भेजले रहीं, बी. डी. ओ साहेब से उहें का बतियवले रहीं....'' राघवेन एकदमे अउँजा गइल। ओकरा बुझाते ना रहे कि ऊ कवना मायाजाल में फँसि गइल। ऊ उठि के खड़ा हो गइल, 'रूकीं, तनी हमरा के समझ लेबे दीं, विधायक जी से हम पूछि लेत बानी, आ हम एबेरा रूपयो नइखीं लेके आइल।'
–' देखऽ भाई हमहूँ समझत बानी तोहार मजबूरी...खैर हम आज दस्तखत करे में दिक्कत होई! जे. ई. झुँझलाते तीनों कागज पर अनाधुन के, दस्तखत कइला का बाद राघवेन का ओरी कागज बढ़ावत बोलल..... लऽ तूँ चेक बनवा लिहऽ....' आ गुरमुसाईले बहरा निकल गइल। राघवेनो कागज आ बिल उठावत, ओकरा पाछा–पाछा बहरा आइल।
–'लीं साहब, हई मगही पान लीं पहिले जतरा बनाईं! पहिलका

ठीकेदार पान क ठोंगा जे.ई. के बढ़वलस ।

–'चलऽ भाई, चलल जाव, साइट पर!' पान के बीड़ा मुँह में डालत जे.ई. दनदनाइले बहरा निकल गइल। राघवेन मुँह लटकवले, देखलस कि जे.ई. कइसे उनकर उपेक्षा करत बोलेरो में आगा बइठि गइल। ऊ नमस्ते कइल चहलस बाकि जे.ई. तकबे ना कइलस। दूनो ठीकेदार मुस्की काटत गाड़ी में ओकरा पाछा बइठलन सऽ आ गाड़ी धुआँ–धूरि उड़ावत गायब हो गइल।

राघवेन खड़े खड़े सोचे लागल कि ऊ पहिले ब्लाक पर जाव, कि बिधायक जी किहाँ। उनहीं से पूछि लिहल ठीक रही। आखिर बिधायके जी का सिफाारिस पर नू ऊ इहाँ काम पवलस..... आ इहवाँ खुलेआम धाँधली बा... डेढ़ लाख क काम ऊ करा चुकल बा, अब पर्सेन्टेज देबे खातिर बीसन हजार लागी... ना ना... पहिले बिधायके जी से बतियावल ठीक रही। बहरा निकल के ऊ बिधायक जी के फोन मिलवलस घंटी बाजे लागल

–' हेलो, के ह भाई? जल्दी बोलऽ!!

– परनाम विधायक जी, हम राघवेन बोलल बानी, ब्लाक से.....

–अच्छा बोलऽ का बात हऽ, काम होत बा नू?

– जी, काम त बढ़ियाँ से करवले बानी, बाकि इहाँ जे.ई. साहब पनरह पर्सेन्ट माँगत बाड़न । घरहीं से अबले लगवले बानी, रउवें बताई, कहाँ से देइब? राघवेन खुलासा कहलस

–अरे भाई जब काम करे के बा त जवन दस्तूर बा, ऊ निभवहीं के परी नऽ? तुँहू देलेके भुगतनवा करा लऽ! फेरू भेंट करिहऽ काल्हु, हमहूँ ओह लोगन के समझा देइब, अभी हम बाझल बानी... बुझलऽ कि ना. ...? कट्' फोन कट गइल बिध ाायक जी के। राघवेन का भीतर ऊभ–चूभ होखे लागल। बिधायक जी के बारे में ऊ का सोचले रहे. ...मन मरले मोटरसाइकिल स्टाट कइलस आ ब्लाक पर जाये का बजाय गाँव का ओर घुमा लिहलस। ओकर दिमाग दउरत रहे.... बाबू जी सुनिहें त अउर बोले लगिहें आ इहाँ फँस गइल बानी, माइये से अरज गरज कहा सकेला। अब त कइसहूँ फँसल गाड़ी निकालहीं के पड़ी, ऊ सोचलस, बाकि असमंजस में मन अउरी दोचित होत चलि गइल।

आखिर ऊहे भइल, जवन सोचले रहल। मुँह बनवले, आपन दुखड़ा जब माई से कहलस त ऊ ओकर उड़ल चेहरा, पंसेनियाइल देहिं आ रोवाइन बोली सुनि के बहुत कुछ समझ गइली। चुपचाप भितरी गइली आ एगारह–बारह हजार ,जवना चोरउधा धइले रहली ले आके राघवेन के दे दिहली। चले का बेर अतने कहली......'' बेटा जवन करिहऽ, सोच समझ के करिहऽ, धन जाव त जाव, बाकि ईजत आ मान सम्मान ना! अपना बाबूजी के जनते बाड़ऽ, ऊ पहिलहीं तोहके ई काम करे से मना कइले रहले, बाकि तूँ बिध ाायक जी का कहला में परि गइलऽ!'' राघवेन चुप, बस माई के कहल एक एक बात प गौर करत रहे।

ब्लाक पर पहुँचत दू बजे लागल बी.डी.ओ. त ना, बाकि बड़े बाबू से भेंट भइल। उहाँ कर्मचारियन के सँगे भूजा आ चाय पानी का बाद अपना साइट प गइल। बटेसर काम ओरियावे खातिर लेबरन के ललकारत रहे ''बस दसे दिन के काम बाकी बा. . अतना में सड़क बना देबे के बा, परसों बोल्डर क गिट्टी परी फेर माटी बालू देके रोलर चलवा देबे के बा एकरा बाद तोहन लोग के दावत रही।''

–कइलन दावत देत बाड़ऽ बटेसर? राघवेन फेड़ तर मोटरसाइकिल खड़ा करत चिचिया के पुछलस।

– आईं आईं बबुआ जी, एह बेरा कहाँ से? बटेसर निगिचा आवत पुछलस।

–ब्लाक पर चेक कटवावे गइल रहनी हाँ....। जे. ई. ससुरा पन्द्रह पर्सेन्ट माँगत बा। बी. डी. ओ. भेंटइबे ना कइले, समझ में नइखे आवत कि का करीं? सरकारी बजट में एतना लुटहाई होई तब त कमवे पूरा भइल मोस्किल बा, गाँव जवार क रोड हऽ, छोड़लो ठीक नइखे.. बाँची का, घरहूँ क गँवावे के नउबत आ गइल! राघवेन रूमाल से मुँह क पसेना पोंछत मेहराइले कहलस. अभी ले बटेसर गम्भीर होके सुनत

रहे, फेरू जोश बढ़ावत कहलस, कमवा त पूरा होइबे करी.... आ मानो–सम्मान बनल रही, बस अब माटी ढेर ना फेंकाई। एइजा से सड़क तनी खलाह हो जाई, एही पर बोल्डर के बड़की गिट्टी पड़ी। रउवाँ अब बढ़ियाँ बढ़ियाँ के चक्कर में ढेर मत पड़ीं!' बटेसर आपन राय देत ढाढस दिहलस। राघवेन कुछ बोलल ना, पनरह सौ रूपया बटेसर के देत कहलस, 'इनहन क बकाया मजूरी दे दिहऽ आ कहि दिहऽ कि अब पेमेन्ट मिलला का बादे इनहन क हिसाब होई!'
–ठीक बा, जाईं। आ सुनीं सब समझत बा.. इमनदारी आ अच्छाई छिपेले नहीं। चिन्ता जिन करीं हमनी का हर तरह से रउरा साथे बानी जा....।' बटेसर बिना कहले बहुत कुछ समझ गइल रहे। राघवेन गाड़ी स्टाट कइलस आ जे.ई. से मिले ओकरा क्वाटर का ओर चल दिहलस।

रात के खाना खियावत खा माई धीरे से पुछलस, का भइल बबुआ राघवेन,काम भइल कि ना? राघवेन का जबाब देसु साँझि के जे.ई. के दस हजार देत खा, उनकर आत्मा रोवत आ धिरकारत रहुवे अतनो पर ऊ मुँह कइसन दो कइले रहुवे, बस अतने कहुवे कि काल्ह चेक कटवा दीही. ..अब बिधायक जी से अमना–समना बतियवला का बादे कुछ कहल जा सकेला। मुँह के कवर बरियाईं घोंटत, ऊ बस अतने कहुवे...... उमेद बा माई...... कि काल्हु काम हो जाई!' बिछौना प गिरला का बाद, देर राति ले, राघवेन के नीन ना आइल..... कबो बाबू जी के समझावल मन परे.... कबो बिधायक जी के कान्ह प' हाथ ६ ाइ के बतियावल कि बबुआ, तोरा प हाथ ध देले बानी त देखत जो, तोरा लगे कुलि हो जाई। त का इहे मिली आगा... बेइमानी आ लुटहाई में शामिल होके? बाबूजी कहेलन कि सचाई आ ईमान के सूखल रोटी नीमन बा, बाकि दोसरा के हक लूटि के, अतमा दुखाइ के, बेइमानी आ चालबाजी का कमाई में.... दुख दुर्दशा आ आखिरस लांछना मिलेला।'..... उठि के बइठ गइल राघवेन...अइसन दोराहा प आ गइनी कि एकोर कुआँ बा एकोर खाई... ऊ खटिया से उठल आ एक लोटा पानी घटर–घटर पी गइल ,फेर लवटल आ सुते के कोसिस करे लागल। बाबूजी फेर ओकरा आँखि में घुमरियावे लगनन. आजु ले कबो गलत आ बेइमान का पच्छ में ना खड़ा भइलन। ठाकुर जाति में होइयो के, रोब–रुतबा कुच्छू ना जमवलन। कबहूँ कमजोर के दबवलन ना... केहु आपन दुख बीपत लेके फरियाद कइल त उठि के ओकर मदते कइलन.... सउँसे गाँव जवार उनकर इज्जत करेला, आ हम उनहीं के बेटा होके गलत राह धरब त....सांझ खा जे.ई. के दस हजार कमीशन दिहल इयाद आ गइल। ऊ फेर उठि के बइठि गइल ...ऊ तय कइलस काल्हु जरूर बिधायक से मिली आ साफ–साफ बताई....।

बिहान दिने चढ़ि आइल तब राघवेन क नीन टुटल, ऊहो माई तेहरउवां आइल रहे....' का हो गइल बा तहरा? बाबूजी दू बेर पूछि चुकलन, लिलार प हाथ ६ ारत कहलस.. तबियत ठीक बा नू!
– ना माई..... मन ठीक नइखे काल्ह धाम लाग गइल आ रात खा बहुत देर तक जागल रह गउँईं।' करवट बदलि के रहि गइल –ठीक बा, मुह हाथ धोइ के चाह पानी क के आराम करिहऽ! हम तहरा बाबूजी से कहि देत बानी कि तबियत।
– ना ,ना रहे दे, हम उठत बानी! आ राघवेन उठि के सरसराइले बहरा निकल गइल। डेढ़ घंटा बाद टीबुल का ओर से नहाई धो के, भीजल गमछी ओढ़ले लवटत खा राघवेन के भरटोली में कुछ मेहरारून के बतकही सुनाइल....
–कुछऊ कहऽ ए काकी, बाकि अच्छा अच्छे होला। रघवेन्दर बबुआ के कुल्हि लच्छन बड़के बाबू साहब के बा..... चन्नर बो बात खतमे कइली कि राघवेन सोझा आ गइल
– ए बबुआ जी, तहरा से गरीबन में बड़ा उमेद जागल बा, तुँही तनी चल्हांक–चलबीधर आ मयगर निकलल बाड़ऽ गाँव में, तूँ जरूर हमन के भलाई करबऽ! राघवेन मूड़ी घुमवलस त एगो बुढ़िया निरीह लेखा ताकत रहे

– का ए बूढ़ी, कवन काम बा तहार? राघवेन पुछलस ।
–देखऽ ना बबुआ, हमार दसा। हमार विरधा पिन्सिन दियावे खातिर परधान सिकेटरी आठ सौ रूपया लिहलस कर्जा लेके दिहनी, महीनन बीति गइल बाकि पिन्सिन ना मिलल, बुढ़िया बोलल
– त परधान से काहें ना पुछलू हा?
– मरकिनौना सोझ जबाब देइत तब नऽ, कबो कहेला कि बैंक जा, कबो कहेला कि पाँच सौ अउरी लागी तब मिली। बैंको दउर के गइनी, ऊहो डाँटत बाड़न स..... कि लिस्ट में नाँवे नइखे... अब तोंहई कुछ कर सकेलऽ ए बाबू!' बुढ़िया एकदम आरत होके घिघियाइल।
–चुप रहु रे सबितरी काकी,अब बूझि ले कि तोर काम हो गइल'' चन्नर बो टोकली –' हम परधान से पूछब आ जरूरत पड़ी त बिकासो भवन जाइब।' राघवेन ढाढस दिहलस
–ए बाबू तनी बलाक पर हमनी के अवासो वाला कमवा पता करिहऽ। एही टुटही मड़ई में गुजर करत बानी जा। सिकरेटरी नॉव डलले रहे, एक हजार माँगतो रहलन ... पता ना बीस कि तीस हजार मिलित आवास खातिर। कई जना दू–दू हजार पहिलहीं दे देले बा... चन्नर बो आपन पचरा गइती, ओकरा पहिलहीं हाथ उठा के राघवेन रोकलस,... का करबू जा, कुल्हि कमी हमहने के न बा...लालच में घूस देतानी जा। तहरो काम होई, हमसे जवन बन पड़ी करब!' कहि के राघवेन फलगरे घर का ओरि भागल। ...पता ना ए लोगन के कतना अपेक्षा बा हमसे...हे भगवान हम त खुदे दल दल में फँसल बानी, अब ईजत तूँ ही बचावऽ!' राघवेन का भीतर से केहु जइसे दुखी होके कुहुँकल।

●●●

साँझ के राघवेन जब विधायक जी किहाँ पहुँचल त उहाँ क मजमा देखे जोग रहे....ठीकेदारन आ अधिकारियन के त गाड़ी लगले रहली सऽ, अउर न जाने कतना मोटरसाइकिल रहली स। बरामदा क कुर्सी, मेज, कूल्हि भरल रहे। ऊ बरामदा से दलान होत जब मीटिंग वाला कमरा का ओरी बढ़ल तले केहू टोकल, 'रुकऽ अभी ओने मत जा..... ।'दिनेश सिंह बरिजलन । ऊ बिधायक जी के खासमखास रहलन।
–'भइया हमके बिधायक जी खुदे बोलवले रहलन!' राघवेन सफाई दिहलस।
–' अरे अभी ब्लाक क अधिकारी लोगन क मीटिंग चलत बा।
–' त ओही खातिर न हमहूँ मिलल चाहत बानी।' राघवेन बोलल!' राघवेन मनेमन खुस भइल कि ऐन मोके पर आइल बानी, सोझा–सोझा कहब कि कमीशन मागँल जाता ऊ मीटिंग रुम क पर्दा तनी सा हटवलस। जे0ई0 सोझा एगो मोट लिफाफा धरत कहत रहे, ई पचासे हजार बा सर! अउरी पहुँच जाई. .....हँ ऊ राउर चेला राघवेन्द्र...'
– हँ हँ, ओकर फोन आइल रहे परसों, हम ओके साफ–साफ समझा दिहनी कि जवन रसम बा, ऊ करहीं के पड़ी। चिन्ता मत करऽ जल्दिये लाइन पर आ जाई. .. आखिर कहाँ जाई? कहीं बी. डी. ओ. साहब? बिधायक जी मुस्कियात कहलन। राघवेन पर्दा छोड़ के सुन्न खड़ा हो गइल ओकरा अब भितरी जाये के हूब ना रहे। भीतर से बी. डी. ओ साहब के बोली सुनाइल...' काम हो रहल बा बिधायक जी, राउर पर्सेन्टेज पहुँच जाई। बस निगाह बनवले रहीं आ बजट भेजवावत रहीं। बिकास करे खातिर राउर सहजोग जरूरी बा...। 'राघवेन चुपचाप लवटे लागल। –'का हो,भीतर ना जइबऽ? दिनेश सिंह निगिचा आवत पुछलन।
–ना भइया बहुत गम्हीर मीटिंग चलत बा...हम बाद में भेंट क लेइब. ..।' राघवेन आगा बढ़ि गइल। दलान से बहरा निकलत एक बेर फेरू पाछा तकलस, दिनेश सिंह मुस्कियात ओकरे के ताकत लउकलन। राघवेन चुपचाप बहरा निकलि आइल। अब साँच पूरा उघार हो गइल रहे आ कुल्हि भरम टूटि गइल रहे। ऊ सोचलस. ..काम अधूरा छोड़ला पर अउर बदनामी होई, ओके केहू तरे पूरा करवहीं के पड़ी। चाहे जवन होखो।

दुसरा दिने ब्लाक से चेक लेके राघवेन सीधे बैंक पहुँचल।

उहाँ परधान आ सिकरेटरी दूनों भेंटाइ गइलन स। ऊ परधान से बुढ़िया सबितरी का पिन्सिन का बारे में पुछलस। परधान हँसल... 'ए भाई पनरह सौ में, साते सौ देले बिया बुढ़िया, हम त खाली पाँचे सौ अउर मँगलीं, बिकास भवन क खरचा। तूँही बतावऽ हम कतना लोगन का सन्ती घर से रूपया देत रहबि!'

—अच्छा तूँ पाँच सौ हमरे से ले लिहऽ, बाकि ओकर पिन्सिन हो जाये के चाहीं...ना त मजबूरन हमरे कुछ करे के पड़ी...।'

— ठीके बा हम अब्बे थोड़ी देर में बिकास भवन जाइब... परधान पीछा छोड़वलस।

—राघवेन जी तुहऊँ त एह लाइन में आइये गइल बाड़ऽ जे. ई., बी. डी. ओ, परमुख आ बिधायक से भेंटे होत होई, सिकरेटरी कुछ उघटे सुरू कइलस, तले राघवेन हाथ उठा के रोकलस, ''बस बस सिकरेटरी साहब ज्यादा समझदार मत बनीं।'' आ बैंक का भीतर घुस गइल। राघवेन के भितरी क ताजा घाव फेरू खुरचा गइल रहे। चेहरा पर टीस उभरे का पहिलहीं ऊ दाबि दिहलस। एकाउन्टेन्ट बड़ा आदर से पुछलस का हाल बा ठाकुर साहेब के, महीना भर से लउकनी हौँ ना....उहाँ के पेन्शन आ एरियर आइल बा, बता देइब उहाँ के.....'

— जी, अच्छा.....राघवेन चेक क जमापर्ची भरत बोलल बाबूजी अपना मर्जी के मालिक हईं, बाकिर हर बात के धेयानो रहेला उहाँ के। खाता में चेक जमा क के राघवेन, एकाउन्टेन्ट के हाथ जोरलस 'काल्हु अगर एकर 'क्लियरिंग' हो जाई त हमार काम बहुत आसान हो जाई।'

दूपहर होखे में अभी तनी समय बाकी रहे बाकि, बहरा घाम के तितछाह गरमी से देंह चुनचुनाए शुरू हो गइल रहे। हवा के नाँवो—निसान ना रहे। तब्बो राघवेन जब साइट प पहुँचल त देखलस हरखू का डेरा ले सड़क प माटी फेंका चुकल रहे। मजूर हारा हूँसी से जोर लवले रहँ स। बुझात रहे कि एह हिसाब से काल्हु सांझ ले प्राइमरी स्कूल तक माटी फेंका जाई। राघवेन हरखू का पलानी का लगे मोटरसाइकिल खड़ा कइलस आ जोर से बटेसर के आवाज दिहलस, 'का हो, आज दुपहरिया क सतुआ ना सनाई का?' बटेसर फरुहा धके दउरत आइल, 'कहाँ से एह घामा में आ गइनी? हम सोचते रहनी हाँ कि जलखाव क बेरा हो गइल बा...।' राघवेन पलानी में धइल चउकी प बइठत, हाथ में क पैकेट बटेसर के धरावत बोलल, 'एम्मे दू किलो सतुआ आ चटनी, पियाज बा, बैंक से लवटत खा, तोहन लोग खातिर ले लेनी हाँ!

—रउवो धन्न बानी, अरे कुल्हि आपन रोटी ले आइल होइहें सऽ। फेर काम करत मजूरन का ओर मुँह क के जोर से बोलल, ' अब काम बन्न करऽ जा...हई मलिकार सतुआ लेके आइल बानीं।'

—अच्छा, अब तोहन लोग सतुआ सानऽ जा, हम तनी ब्लाक पर जाइब! एगो बात कहे चाहत रहनी हाँ... कि हमरा से आगा अब कमीशन पर काम ना होखी, बाकि, तूँ एकर उपाइ सोचऽ!

—'हम सोच चुकल बानी..तब्बे नू अब कमे माटी कटाता, एइजा से इस्कूल ले सड़क तनी खालो हो जाई त ना बुझाई आ सात आठ दिन के मजूरियो बाँच जाई.. फेर बोल्डर गिट्टी गिरावहीं के बा...। बटेसर अइसे समझवलस जइसे राघवेन के मजबूरी पहिलहीं से बूझत होखे।

—'चलऽ ठीक बा जवन तूँ समझ. करऽ' राघवेन कुछ सोचत आपन फिकिर जतवलस ना मलिकार, कवनो माई क लाल रउरा पर अंगुरी ना उठइहें...झुठहीं चिन्ता मत करीं, ई बजट ले ढेर काम भइल बा! हम अब राउर मेहनत आ पइसा डाँड़ ना जाये देब।'बटेसर राघवेन के भीतर एगो जबर्दस्त भरोसा आ इतमीनान पैदा क दिहलस।

लेबर आ चुकल रहलन स आ हरखू का चाँपाकल पर हाथ—गोड़ धोवत रहलँ स ।

—राघवेन उठल 'तुहऊँ हाथ मुँह धोके खा पियऽ!' फेरु ओकर मोटरसाइकिल सोझे बी. डी. ओ साहेब का क्वाटर पर रूकल। साहेब , ओसारा में बइठि के कवनो फाइल उलाटत रहलन। राघवेन हाथ जोरि

के नमस्ते कइलस त उछाह में चहकलन–'आवऽ आवऽ राघवेन्दर जी , तहरा काम के बड़ा चर्चा बा!
–'का साहेब, कवनो गल्ती भइल बा का? राघवेन चिहाते पुछलस
–ना भाई हमार चपरासी नरायन तहरे गाँव का ओर क हऽ। ऊ तोहार आ तोहरा बाबूजी क सुबह शाम तारीफे करत रहेला आ काल्हु हम जे. ई. साहब का सँगे लौटत खा तहार साइट देखनी, वाकई बढ़िया रहे, ओह घरी आसपास क लोग जुटि के एह सड़क खातिर हमने के तारीफ करे लागल... बी.डी. ओ खुलासा कइलन, अच्छा के सब अच्छे ना कहेला, बाकि का जाने काहें, तोहार सभे बड़ाइये करत बा!'
–हँ साहेब हमार अहोभाग बाकिर सचाई आ लगन के ए जमाना में कहाँ कदर बा? राघवेन उदास हो गइल– बाह, कदर काहें नइखे, कवनो परेशानी होखे त खुल के कहऽ। जे.ई साहेब से हम साफ कहि देले बानी कि एकाध घर डाइनो बकसेले...अब एह काम में एक्को पइसा कमीशन ना लियाई, जरूरत परी त हम बजट बढ़ावहूँ के उपाइ करब। तूँ चिन्ता जिन करऽ!....अरे नरायन! भीतर से दू गिलास ठंढ़ा पानी आ चाय भेजिहऽ त....।' तुरन्ते भीतर से पर्दा हटावत नरायन झँकलस आ राघवेन के देखि के मुस्कियाइल। राघवेन ओकरा हमदर्दी प, आँखिये–आँखी कृतज्ञ भाव दरसवलस। फेर भीतर से प्लेट में मीठा आ दू गिलास पानी क ट्रे आ गइल। राघवेन पानी पियत सोचलन कि ई चमत्कारे नू बा.. भगवानो के लीला गजब ह. .. कुल अन्हारे छाँट दिहलन। पानी पीके उठहीं क चाहत रहे तले गाँव के सेकरेटरी पहुँचि आइल। एगो फाइल बी.डी.ओ के देत बोलल, 'आवास के लिस्ट हऽ सब फाइनल हो गइल, खाली टाइप करावे के बा...। 'बी. डी. ओ. फाइल उलाटि के देखे लगलन। राघवेन सिकरेटरी का ओर मुँह क के धीरे से पुछलस, 'हमरा गाँव के भरटोली में चन्नर बो बाड़ी, ओकर नाँव बा किना? ओकर नाँव रहे के चाही, जवन खरचा लागी हम देइब, देखत बानी नऽ कइसे गुजर करत बिया ऊ? –ठीक बा, रउवा कहत बानी त फाइनल लिस्ट में ऊहो रही।' सिकरेटरी फुसफुसाइल।
– राघवेन बी.डी.ओ के सलाम करत उठे लागल त ऊ फाइल बन्न करत बोललन, 'अरे भाई, चाय त पी लऽ नरायन ले आवत होई! अउर कवनो काम कवनो दिक्कत होई त निसंकोच हमसे बतइहऽ! राघवेन मूड़ी नीचे कइले सकुचात बइठि गइल। सेकरेटरी, राघवेन के ई आदर देखि के हरान रहे। बी. डी. ओ ओके फाइल देत कहलन, अबहिएँ एक्के टाइप करावे के बड़े बाबू के दे दऽ, काल्हु डी. डी. ओ साहब का आफिस में भेजाइ जाये के चाहीं।' ऊ फाइल लेत, सलाम कइलस आ चलि गइल।
– अरे, हमके त पते ना रहल कि तूँ मेजर साहब क लड़िका हउवऽ, उहाँ का परसों जिला विकास अधिकारी किहाँ भेंटाइल रहलीं बलुक उहें के प्रस्ताव पर ए डी एम साहब तहरा गाँव का इस्कूल का लगे, लड़िकन खातिर, प्लेग्राउन्ड, शेड आ जल–टैंक बनावे के मसौदा तइयार करवले बानी। बहुत गंभीर आ समझदार लगलीं मेजर साब! नरायन झुठहूँ तारीफ थोरे करेला...–बी.डी.ओ

कहलन ''हमहूँ उनका देखावल राह प चले क थोर बहुत कोसिस कर रहल बानी।'

राघवेन कहलस 'चाय पी के राघवेन जब बी.डी.ओ किहाँ से चलल त ओकरा भीतर क चिन्ता फिकिर अउँजाहट कम हो गइल रहे। ओह दू गो अभागत दुखियन के हित करे क भावना आ दुख मेटावे के कोसिस में कतना सुख छिपल बा...राघवेन के महसूस भइल। ए लुटहाई, चालबाजी आ अन्हेर का माहौल में, साँच के राह कतना कठिन आ दुखदाई बा झुठिया दिखावा के राजनीतिक रुतबा आ करिआ कमाई के का कहल जाव? मजबूर असहाय लोगन के आँखि से छलकत कातर, कृतज्ञ भाव का आगा, राघवेन के ई रोब, रुतबा आ कमाई बहुते ओछ बुझाइल। सड़क के माटी इस्कूल तक फेकाइ चुकल रहे। पत्थर वाली बड़की गिट्टी जहाँ–तहाँ टेक्टर से गिरा दिहल गइल रहे। राघवेन जे.ई का क्वाटर प जब दुसरा बेरी मजदूरी चार्ट आ दोसर बिल लेके सत्यापित करावे पहुँचल त ऊ बिना मीन

मेख के दस्तखत करत कहलस, ' अब तोहके पर्सेन्टेज नइखे देबे के, काम बढ़िया हो जाव इहे अपेक्षा बा तोहसे, तहरे काम के बढ़िया मान के हमनी का कमिश्नर का मोआयना में डलले बानी जा, तूँ छर्री आ कोलतार गिरवा के बढ़िया से पिच करवावऽ! अभी दस पन्द्रह दिन बाकी बा मोआइना में।...अगिला बिल आ काम के चार्ट जहिये ले अइबऽ हम साइन करा के ओही दिने चेक कटवा देइब। हम जानत बानी कि तोहार नुकसान भइल बा, बाकि हम अब आगा नुकसान ना होखे देब, एकर गारंटी देत बानी।'

साँझ खा, राघवेन जब सबितरी का पिन्सिन खातिर पाँच सौ रूपया परधान के देबे लागल,त ऊ हाथ जोड़ लिहलस ''भइया, अब बस करऽ! बहुत हो गइल, तीने महीना बाद हमके फेरू परधानी लड़े के बा। हम ओकरे ना, बलुक ओह टोला के तीन गो अउरी बुढ़ियन के चेक कटवा देले बानी, सूची में नामो दर्ज करा देले बानी। उन्हनी के खबर देबे गइलीं हाँ त, ऊ हाथ धोइ के तोहरे नाँव जपत बाड़ी स। सबितरी त चिचिया–चिचिया के कहत बिया, राघवेन बबुआ का चलते ई पिन्सिन मिलल हा।'

– बस बस बहुत नाटक भइल परधान जी रउवा घाटा काहें सहब? बलुक हई एक हजार अउरियो मिला देत बानी, राघवेन गम्हीर होत कहलस ।

– ना ए बबुआ,हम तोहसे एगो पाई ना लेबि...अब त तहरा से डरो लागत बा कि हमार परधानी बाँची कि....– ''ना ना परधान जी, रउवा एहू बेर लड़ीं, हम राउर समर्थन करब, बस एह अभागत गरीब–दुखियन के अनभल से बाँचल रहीं अतने कहब...राघवेन उनके दिलासा दिहलस आ घरे लवटि आइल।

घर में डेग डलते माई कहलस, 'ए बेटा तनी बाबूजी से भेंट क लऽ, दिनही से ऊ तीन बेर पूछि चुकलन। राघवेन डेराते सहमत उत्तरवारा ओसारा से होत बाबू जी का कमरा में ज्योही लात धइलस'' बाबूजी के धधाइल बोली सुनाइल 'आवऽ आवऽ राघवेन तोहार काम कइसन चलत बा, सुने मे आइल हा कि तूँ एघरी बहुत परेसान बाड़ऽ!'

– ना बाबूजी, रउवे कहीला कि कतनो संकट आवे, बिचलित आ निरास ना होखे के चाही! साँच का राह चलला में परेसानी होखबे करेले। अब अइसन कवनो बात नइखे। रउरा असिर बाद आ प्रेरना से बहुत बल मिलल हा। राघवेन जइसे आपन अनुभव कहे के कोसिस कइलस। मेजर साहब राघवेन के एकटक ताकत रहलन उनके बुझाइल कि राघवेन अब बहुत बदल गइल बा। ऊ कहलन, 'सच्चा फौजी आखिरी दम ले लड़ेला। बेटा आज का समय में अपना के बँचावले बहुत कठिन बा. ..बाकि खेत–बधार आ बहरवार घुमत फिरत हम तहार बड़ाइये सुनलीं हाँ। पता चलल कि तूँ घर से पइसा लगाइ के ठीका क काम करा रहल बाड़ऽ! एही से तोहार परेसानी कम करे खातिर बोलवाइ के पूछ लेनी हाँ।

–बाबूजी रउवा ठीके सुनले बानी बाकि अब हम हर अझुराहट के सझुरा चुकल बानी, हमके बस अतने समझ में आइल हा कि अच्छाई, हमेशा अच्छाइये होले....' राघवेन का मुँह प एगो खास चमक उभरल. ...मेजर साहब ओह चमक का भीतर छिपल साँच का आँच के महसूस कइलन आ उठ के राघवेन के कान्ह थपथपावत कहलन , ' तूँ आपन राहा बनावऽ हम तोहसे कुछ ना कहब! जा ना त, तहार माई बेचैन होइहें।'

कमरा से बाहर निकलत राघवेन के अपना कान्ह पर बाबूजी का हाथ का ओह गर्मी के परतीति भइल, जवन कान्ही से होत ओकरा भितरी जोति अस बरे लागल रहे। ओकरा दिमाग में पछिला कुल्हि घटना क्रम एक्के बेर, रील लेखा घूमि गइल आ बी.डी.ओ के बरामदा में आके अँटकि गइल। बी0डी0ओ0 के अचानक हृदय परिवर्तन ऊ अभी ले बूझि ना पवले रहे। का ऊ हमरा सचाई से प्रभावित रहले कि बाबूजी का पहुँच आ प्रभाव से, कि खाली हमरे ममिला में कवनो कारन बदल गइले? कि चपरासी नरायन का कारन? हुँह, कुछऊ होखे, ओकरा आँखिन में आजाद पंछी के सुभाविक उड़ान उभरि आइल।

●●●

बिना ओरिचन के खटिया

❑ विष्णुदेव तिवारी

फूआ, माने गिरिजा फूआ–पुरुषोत्तम के बाबूजी के छोटकी बहिन–बाति ए तरी पागेली जे शब्द केनियो ले भरके ना पावे। अनचक्के में केहू के खींचि ले जइहें अतीत के लखदवनी खोह में, जहाँ हर अदिमी अनयासे खरोंच लगवावे खातिर जाइल चाहेला, जेमें भविष्य के अगाध शून्य के कम से कम एक बून सगुन के खून त चढ़ा सके। विलक्षण दिमाग बा उनुकर। याददाश्त में सज्जी घटना दर्ज बाड़ी स–दिन, महीना, वर्ष–सभ सिलसिलेवार।

पुरुषोत्तम के बेटी डोरा आ ओकर चचेरा भाई बीरन के बेटी बउली दूनो बे ओरिचन के खटिया प कूदत–फानत रहली स। पुरुषोत्तम उहनी के मयगर मन से देखलस, कहलस ना कुछुओ। ऊ कोठरी में एह खातिर आइल रहे जे झोल मारत खाट में ओरिचन लगा देव तनी सुस्ताए खातिर पलंग प ओठँघले रहे तले बिजुरी के तरंगन प सवार होके फूआ छने में ओकरा आगे झलमला उठली

–सूते लगलऽ का, बबुआ? पुरुषोत्तम सूतत ना रहे। ऊ त चाहत रहे जे रेंगनी प से चादर खींचि के गोड़ तोप ले, बाकिर तब डोरा आ बउली ओकरा के देखि सकत रहली स। अइसन ऊ चाहत ना रहे। जहाँ ऊ रहे, ओहिजे ऊहो रहलीं स–नगीचो–पासे कहि सकेला अदिमी, एह से ई असंभवे रहे, जे ऊ ओकरा के ना देखँ स। ऊ मफलर के कान में नीक से बन्हलस आ ओकरा दूनो छोर के बीचे तरहथिन के अर्द्ध–प्रार्थना के मुद्रा में क के सुतला नियर बेखबर हो गइल। अब, जदि, डोरा आ बउली ओकरा के देखबो करितीं स, तबो–छउके–कूदे में सँकोच ना करितीं स। जदि करितीं स त कइले का जा सकत रहे। ओइसे लइकिन के ध्यान ओकरा ओर गइल ना रहे आ ऊ बिना कवनो ताम–झाम के अपना में रम गइल रहलीं स।

बुचिआ खेले में रमल रहलीं स आ पुरुषोत्तम गते–गते अतीत के खोह में सरकत चलल जात रहे। फूआ कहले रहलीं–'' का जाने तोहरा इयाद बा कि ना जे एक बेर खटिया से उतरत खा ओरिचन में फँसि गइल रहलऽ। इयाद बा, मनोहरपुर में। तब डोरा ले छोटे होइबऽ चाहे ओकरे बरोबर। छोटकी भउजी भइया के सँगे घूमे–ओमे गइल रहली। हम छत प ले सूखल गहूँ उतारत रहलीं। त तूं ओरिचन में अँटकि गइल रहऽ। एगो बिलार रहे। का जाने, भउजी अपना नइहर ले नेग–नेवता में पवले रही कि भइया के कवनो साहेब–सुबहा भेंट–वेंट कइले रहे, राम जानस। ऊ पोसुआ रहे आ आधा सेर दूध एक बेरा पी जात रहे। त ओह बिलार से तू बहुते डेरात रहलऽ। साइत ओकरे डरे उतरि के भागे के चक्कर में फँसि गइल रहलऽ। हम देखलीं त छते प ले बोल पड़लीं आ दउरकिए में उतरि अइलीं। हमरा के देखि तोहार लोर बरिसे लागल। तोहार रोआई हमरा से ना बरदास होत रहे आ हमूँ रोवे लगलीं। आजु जब अपने सुअरी के छवना हो गइल बाड़े स, त मोह–ओह पहिले वाला रहल ना आ तूहूँ बड़ हो गइलऽ बाप–वाप बनि गइलऽ त पहिले जइसन कुछु होत–वोत नइखे, बाकिर ओ घरी त तूंही प्रान के अधार रहलऽ। हम रोवे लगलीं त तू थपरी बजावे लगलऽ ''जिया मोर मुसकिल में परि गयो रे.......''। ओ घरी इहे गीत खूब बाजत रहे रेडिओ–ओडियो प। त तू एकरा के गावत जात रहलऽ आ हम तोहरा के कोरा में उठवले–उठवले दरवाजा के बहरी ले भागल–भागल देखत अइलीं तोहरा गोड़ ओड़ के जे कतहूँ छिला–ओला त ना गइल घनचक्कर''।

बउली खटिया प गोड़ पसारि दिहलसि। डोरा नीचे उतरलि आ ऐने–ओने कुछु खोजे लागलि। पुरुषोत्तम, बे–गरदन घुमवले, आँखिन के बायाँ ओरि तिरकट क के, देखलस जे ऊ सनूक प रखल डोलची में ले शाल निकालत बिया। शाल ले के ऊ बउली के लगे आ गइलि। 'बड़ा अजीब लगेला'–पुरुषोत्तम सोचलस–'अपना लइका ले अधिका भाई के लइकन में नेह लगवले लोग लउकेला बाकिर

आपन लइका होखते, कर से हियरा दरकि काहें जाला दू फाट में? नेह–छोह त तबे कहल जाई जब बे–स्वास्थ, बिना अहसान जतवले, बड़ छोट के अंतर से सबके भावना आ जरूरत के अपना हैसियत के, मोताबिक पूछ होखे।
–'मिलि गइल दीदी? शाल देखते बउली झूम उठलि।
–' हँ रे बाकिर तू पटुआइल रहु। चिचिअइबे त तोर माई जान ना जाई?'
–'ठीक बा दीदी।...............बाकिर तू हमरा के मरबू ना नूं?' 'काहें के मारबि? बुचिया के केहू मारेला का, बोलऽ?' –' ना मरेलाा नूँ दीदी।'........आँखि फइला के बउली कहलसि–'हमूँ त इहे कहेनी जे डोरा दीदी हमरा के ना मारेली बाकिर, आजी कहेली जे बड़ा हथछुटुक लइकी ह डोरा। दाँत गड़ा दीही, चाहे नोहे गड़ा दीही। दीदी, आजी ठीक ना नूँ कहेली?' डोरा जवाब ना दिहलसि।

पुरुषोत्तम मने–मने खुश होत रहे आ तनी दुखितो। बुचिया कतना निश्छल बाड़ी स। कतहूँ व्यंग नइखे, कतहूँ मिलावट नइखे। जवन सोचली स, कहि देली स, जवन सुनली स, कहि देली स। इहनी के ममत्व के परधि में आसमानी बड़का गड़हा नइखे जे समूचे सौरमंडल के गटकि जाइ आ ढेंकारो ना लेइ। एहिजा त जवन बा–प्रत्यक्ष आ जीवंत बा। बाकिर...........जब इहनियो के बड़ हो जइहें से त.........का इहनियो के नस में करिया रकत रेंगे लागी? ''एक बेर भइया आ भउजी सँगे बहरा जात रहीं।'' फूआ हमसे कहले रहीं।'' तू आँचर–वाँचर छोड़बे ना कर तऽ त तहरो के लेबे के परल। डुमराँव उतरि के रेक्सा भा टमटम से ओहिजा जाइल जात रहे। अब त बसो जाले उहाँ। चारि आदिमी रहे त टमटम कइल गइल। घर से चलल रहीं जा तबे से आकास बदरिआह होखल आवत रहे, बाकिर ई अनेसा त नाहिए रहे जे बीचे राह में घनघोर बरखा होखे लागी। बाकिर भइल ऊहे। एकाध कोस रहता अबे बाकिर रहे जे लागल कइ गो पम्प सेट चलि गइले स। छने में जइसे समुंदर उबिछाए लागल–घनर....घनर! बाबू रे, हवो ओसहीं उमखि–उमखि के कूदत रहे। आधा लूगा देहि में लपेटले, आधा से तोहरा के तोपले, सोचत रहीं जे अब का होई? गतरे–गतरे पानी चूअत रहे। जेने देखऽ ओनिए बरोहि अस बूनी के धार–लागे जे ध के चढ़ि जा त इनरासन–ओनरासन भइल जे चहुँप जा। त अइसने होत रहे बरखा। तबे अइसन भइल जे जहाँ टमटम रहे नू ओहिजा से एक बिगहा हटि के बिजुरी गिरलि। घोड़ा चिहुँकि के टमटम घिसिरावत भागल सरपट। तबे दोसरकी आ तिसरकी बिजुरी एकेके मिनट प। बिना चाभुके खइले घोड़ा महराज रेलि हो गइले। आ भइया के सूरत देखितऽ त कहितऽ! अब नू छीमानुख–छीमानुख बा। ओ घरी त जनाइ जे सइ बाभन मरला के मुँह ह। हिचकिया के रोवे लागल रहलें–'बुचिया ,बड़ा, जुलुम भइल रे। हमनी के मरि जाइबि जा त कुछुओ ना होई बाकिर एकरा कुछु हो हवा गइल त मूँह ना देखा सकबि जा।' एक बेर त हमरो मन कइल जे खूब रोईं–ओईं बाकी बाद में हमीं सबुर धरवलीं........आ ....ई जे तोहार चाची–वाची हई नू!–बउली के आजी,– बड़ा सिधवा रहलीं, बाबू। कबो भूलो से जे कडुआ सबद निकालसु। उहें जब हाथ भाँजि – भाँजि उघटा–पुरान करेली त करेजा में दराँती चले लागेले बेटा। तोहरा के बेटा से कम कबो ना कइली।

मने–मन जरि बुता गइलन पुरुषोत्तम, बहुते कइलीं, मनलीः , बहुते कइलीं बाकिर कब कइलीं, इहो त सोचऽ? जबले उनुका लइका ना भइल रहे। पहिलका बेटा होखते ऊ दुलार केने बिला गइल? बीरन के ऊहो त सँझवत के दीआ अस चपकवले रहत रहे। उहे बीरन जब खेलत–खेलत खटिया से नीचे गिर गइल रहे, त चाची कइसे दूथप्पड़ जमा दिहली– 'टुकरखोर।' तब सभ कुछ खतम ना हो गइल का? जी भर के दुलारऽ आ ही भर के कोसऽ! तश्तरी भर खियावऽ आ परात भर उगिलवाल! ई त ना भइल छोह। एह से त नीक रहे जे माई–बाप से हीन लइका के जहर दे दिहल जाइत।

बउली दुलहिन बनल बिया। डोरा शॉल ओढ़ा के ओकरा के घूहवाली बनावत बिया । फेरू डोरा घुहवाली बनतिया। पारा–पारी

दूनो दुलहिन बनतारी स। जे दुलहिन नइखे बनत ऊ मुँह देखे वाली बनतिया। 'बाकिर जब मुँह देखावल जाला त आँखि बन नू कइले रहल जाला, दीदी?' बउली कहलसि।

'— काहे?' डोरा पुछलसि।

'—काहें का। माई त असहीं करेलें।

'— तू देखले बाड़े का?' डोरा साठि साल के बुढ़िया अस मुँह बनवलसि। कहलसि—'तबे त कहतानी। काल्हु चालो मइया आइल रहली, त आजी, माई के मुँह देखवले रहलीं कि ना बोलऽ?'

'—आँखि काहें बन क लिहल जाला, बउली?' '—एतनो नइखू जानति भकलोल।—' बउली के अपना ज्ञान प गर्व हो आइल —'आरे, बुढ़िया के आँखि में कींचर होला। दाँत टुटल रहेला, त ओकरा से डर लागेला नूं। त आँखि खोलि के काहें रखी.........?' —'हमरा आँखि में त कींचर नइखे नूँ बउली।' डोरा बड़ा निरीहता से पुछलसि।

'— नइखे, नूं तोहरा आँखि में कींचर बा नूं हमरा आँखि में कीचर बा ए से हमनी के आँखि खोलिए के राखे के। हँ नू बुचिया।' डोरा कहलसि आ धधाई के बउली के गाल चूमि लिहलसि।

एगो आँगन। दू गो परिवार। दूनों में बोलचाल नइखे। जब पटते नइखे त जीभि हिलावे के कष्ट काहें? आदिमी लासा से ना सटे, सटिए ना सके। अच्छा धंधा बा। आपन कूड़ा—करकट मुक्त विरासत छोड़त जा। इतिहास—पुरान के साँच—झूठ कहानी दूनो पलरा तउला सकेले। तउलऽ, पासँघ मत देखऽ। '—

'— दीदी, भूखि लागल बा।'

'— जइबू?'—डोरा पुछलसि।

'—फेरु माई आवे दी?'

'—त?'

—कुछ देर अउरी खेल लिहीं जा। डोरा दियरखा प राखल दिआसलाई उठवलसि आ बउली से कहलसि जे अन्हार हो गइल बा, ढिबरी जरा लिहल जाउ। पुरबवारा जंगला पर ढिबरी रखात रहे। लइकिया ढिबरी जराइ के ओहिजा ना रखली स। ओकरा के पुरुब—पच्छिम बिछावल खटिया के मुँड़तारी, बायाँ पार,प रखल गइल। खेलो के रूप बदललः

ओकर बोका तीन तड़ोका
लउआ लाठी चनन काठी......
ढोंढ़िया पचकि जो। लातालुती।
लातालुती। लातालुती।

लातालुती जम गइलि। ऊ डोरा आ बउलिए में होत रहे बाकिर लात से डर लागल ढिबरी रानी के पलक झपकते किरासन बोकरत खटिया से नीचे। लइकी खेलत रहली स। आगि सिरहाना लटकल बिछावना के धरत झपाक से खटिया प चढ़ि गइलि। एक ब एके भक् से अंजोर। डोरा आ बउली एके संगे चिचिअइली स—'माई रे।' पुरुषोत्तम आँखि बन कइले—कइले कुछ—कुछ नीनि में भरमे लागल रहले। डोरा आ बउली अतना डेरा गइल रहलीं स जे उहनी से उतर भागल संभव ना रहल। ऊ खटिए प उछलत— कूदत रहली स। आगि गँवे—गँव खटिया के लीलत जात रहे। एक ब एक जइसे खतरा के साइरन बाजि गइल। भीतर ले घबराइल आवाज अइली स—'का भइल? पुरुषोत्तम के ई सोचे के मोहलत ना मिलल जे अचानक आगि लागि कइसे गइलि? जब ले कुछु सोचित ऊ, ओकरा लागल ओकरा देहि में करेंट आ गइल होखे। ऊ समूच चेतनता में पलंग से नीचे कूदि गइल आ एक—एक बाँहि में एक—एक लइकी के दबवले सनाक से चउखट से बहरिआ गइल। ओकर दिमाग खदके लागल रहे। ऊ संभरे, तले केहू बचियन के ओकरा से छीनि चुकल रहे। के? ओकर मेहरारू? ओकर भावज? ओकर चाची? आखिर के? ओकरा कुछुओ पता ना चलि पावल आ डोरा आ बउली भीड़ि में हाथे—हाथ, गरे—गरे लपिटात रहलीं स। जटाधर महतो—ओकर चाचा—निकसार घर से लँगड़ात दउरले—दउरऽस रे—सरोजवा, झुलना, मदन पांड़े। आरे, आगि लागल बा रे। बतावऽ स रे, केहू जरल—मरल त ना नूं राम?

दस मिनट में आगि बुता गइलि। बे ओरिचन वाली खटिया जरि गइल रहे। पटिया अउरी पारो साबूत ना बाँचल। एकाध गो पुरान कपड़ा अउरी बिछावन आ एगो नया शॉल जरि गइल।

डोरा आ बउली डेराइल रहलीं स, उहनी के कुछुओ ना भइल रहे तबो। एक दिन असहीं फूआ से बतिआवत पुरुषोत्तम के अचके इयाद परल जे ऊ पहिले बउलिए के उठवले रहलें । बउली—माने ओकरा चचेरा भाई बीरन के बेटी याने—डोरा के बुचिया!

●●●

समकालीन भोजपुरी साहित्य

❑ डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित

समकालीन भोजपुरी साहित्य पर कुछुओ कहला से पहिले 'समकालीन' पर साफ हो गइल जरूरी बा, ना त बात छव गो अन्हरा के एगो हाथी पर देहल वक्तव्य मतिन अलग–अलग समझदारी का रूप में सामने आई। जइसे कुछ लोग कह सकेला कि एह समय में जवन कुछ लिखाता, ऊ सब समकालीन ह। एह हिसाब से केहू ईहो साबित करे के चाही कि हर साहित्य अपना–अपना समय में समकालीन रहल बा। बाकी 'समकालीन' एह अर्थ में रूढ़ नइखे। समस्या ईहो बा कि समकाल कब से प्रारंभ मानल जाव?

असल में, साहित्य खातिर 'समकालीन' विशेषण हिन्दी में 'प्रगतिवाद' या 'प्रयोगवाद' के बाद बिना कवनो बाद कहके एगो खास भाव आ विचारधारा के रूप में सामने आइल बा। एकरा पीछे कारण देश –दुनिया में भइल ऊ भौतिक बदलाव बा जेकरा के वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद भा नवउपनिवेशवाद कहल जा रहल बा। ई पूँजीवाद के विकसित छद्म रूप ह जवन आधुनिक तकनीक आ प्रसार–माध्यम का सहारे मुट्ठी भर खास लोग का हित में धरती पर त काम करिए रहल बा, अपना वैचारिकी आ सांस्कृतिकी नाम 'उत्तर आधुनिकता' का रूप में लोग के मन मस्तिष्क पर भी प्रभाव डाल रहल बा। साहित्य में ई कलावाद, रूपवाद, बिम्बवाद, व्यक्तिवाद के समर्थक बात विचार में इतिहास के अंत, कविता के अंत, शब्द के अंत, विचार के अंत आदि के घोषणा से आदमी के अन्दर के सम्वेदना समाप्त करे में लागल बा। ई दाम (प्राइस) का बारे में त खूब जानेले, मूल्य (वैल्यू) का बारे में कुछ ना जालन चाहेले। ई अस्वाभाविक नइखे। जब भी कवनो देश के आर्थिक आ राजनीतिक ढांचा बदलेला, त ओके सही साबित करे खातिर व्यवस्था ,शिक्षा,दर्शन इतिहास, साहित्य आ कला के पात वाहक बना के पेश कइल जाला या एके अपना सुरक्षा में लगावे के कोशिश होला। ताकि ओकरा निरंतरता के माहौल बनल रहो, ऊ दीर्घजीवी हो सको।

भोजपुरी एगो बड़हन भू भाग आ लगभग 20 करोड़ लोगन के भाषा बिया। हिन्दी कह के एकर अन्तराष्ट्रीय स्वरूप बा। तबो अखियान करब कि कारोबार के दिसाईं एक तरफ त एकरा से काम लेहल जा रहल बा। दोसरा तरफ भाषाई नस्लवाद के तहत अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी के दोयम आ भोजपुरी आदि लोक भाषाअन के क्षेत्रीय भाषा कह के हेय ठहरावल जाता । एकरा वैध ाानिक मान्यता के लम्बित राखे के पीछे ईहो कारण हो सकेला कि ई सामान्य जन के अभिव्यक्ति के भाषा बड़ुए।

बरक्स एकरा, पूँजीवाद के काट समाजवाद के तरफदार अपना सृजन में एह सौतेलापन, दोगली नीयत, आ एह व्यवस्था से समाज के आप लोगन में दिनोदिन बढ़ रहल कठिनाई, शोषण ,भेद के ना खाली आपन विषय बना रहल बाड़न, ओकरा प्रतिकार आ बदलाव के प्रयास में उनकर प्रतिरोधी विचार बड़ा तल्ख रूप में सामने आ रहल बा। 'समकालीन' एही में समाहित बा। एह कसौटी पर समकालीन साहित्य ऊहे नइखे, जवन आज के साहित्यकार वर्तमान परिस्थिति के विरोध में लिख रहल बाड़न बलुक ऊहो बा जवन पहिलहूँ के साहित्यकार रचलन। शर्त ई बा कि ओकरा आज से सरोकार रांखत 'कला खातिर कला 'के उलट समाज के बेहतरी खातिर लिखाइल होय के चाही। अइसन साहित्य अपना वृतान्त में स्थानीय हो सकेला बाकी मुल्य के स्तर पर ऊ विश्वस्तरीय होई। बकौल मैथ्यू अर्नल्ड–'कवनो रचना के ओ महान जइसन कुछ होय के बात ओकरा एके साथे शाश्वत आसमाजिक दूनों होय के चाही।' (अनुवाद आपन) रचना देशकाल का दबाव में लिखाला बाकी जब ऊ मूल्य के स्तर तक जाला त ओकरा में सार्वकालिको आ जाला।

एह व्याख्या के बाद साफ हो गइल होई कि हिन्दी के समकालीन साहित्य अभी मुख्य धारा में बा, भोजपुरी में एकर शिनाख्त हमरा विषय के प्रतिपाद्य होई।

काव्य

भोजपुरी पले लोक काव्य के एगो बड़हन आ समृद्ध भंडार बा। ई साधारण लोगन के हरख विषाद आ सुख–दुख के भावना से भरल बा। स्वभावतः नारियन के व्यथा–गाथा एह में जादे बा । ध्यान देवे लायक बात ईहो बा कि जवन कछु सत्य कथित शिष्ट साहित्यकार कहे से कतराएल बाड़न भा झिझक का साथे कहले बाड़न ओके लोक साहित्यकार अपना कन बार–बार उठवले बाड़न । ऊ चाहे राम के छठिहार का बेरा के हरिन हरिनी के ' छापक पेड़ छिउलिया' वाला सोहर होय, जेह में हरिन मारल गइल बा, आ हरिनी कोसिला लगे अपना पति के चमड़ा मांगे गइल बाड़ी त ई करके ओहू से इन्कार कर देहल जाता कि एह से खंजड़ी छववावल जाई आ राम बजा–बजा के खलिहन। खंजड़ी जब–जब बाजता, हरिनी अपना पति के इयाद में बिसुरे लागतिया। ओकरा मन में राजशाही का प्रति एगो आक्रोश जनम लेता।

सीता जंगल से लव कुश के जनम के सूचना अयोध्या में सब केहू के भेजवावत बाड़ी, राम के ना–

' पहिल रोचन राज दशरथ, दोसरा कोसिया रानी हो
एहो तिसर रोचन देवर लछुमन, रमइया नाहीं देवहू हो

आखिर में गुरू का ओर बशिष्ठो के मनाये गइला पर सीता उनकर आदर करत उनका पीछे दू डेग अयोध्या का ओर चलताड़ी, फेर धरती में समा जा ताड़ी–

जनि कहीं ए गुरूजी जनि कहीं, केहू कहेला जब हो
लागेला करेजवा में आग त धरती सरन दीहें हो!'

सपने में सही, आदि देव शिवो अपना पत्नी पार्वती के उनके बहिन के सौत बना के साँसत में डाल दे ताड़न। एने के एगो गीत में त शिवजी बारह बरिस पर उत्तर बनिजिया से लवट के घरे रह गइल गउरा के सतीत्व के परीक्षा उनका हाथ में आग आ साँप देके करत बाड़न तबो शिव का विश्वास नइखे। अंत में चान सुरूज से गवाही लिआत–

शिवजी चलेले उतर बनिजिया
गउरा मंदिरवा धइले ठाढ़ हे!
बारह बरिस पर शिवजी लवटले
गउरा विचरवा मोही देहू हे!'

मुगल–काल में जब मिर्जा नाम के एगो नवाब 'कुसुमा देई' के सुन्दरता पर रीझत के जबरदस्ती उनका के उठा ले जाए चाहता, बाप–भाई, मरद होइयो कवनो संघर्ष नइखन कर पावत त कुसुमा चालाकी से मिर्जा के डोली में बइठ जा ताड़ी बाकी सीमा पर अपना बाबा के पोखरा में आखिरी बेर हाथ–मुँह धोए के बहाने ओही में डूबके अपना इज्जत के रक्षा करताड़ी। मिर्जा हाथ मलत रह जाता–

'तनिक डोलिया थमावो मिरजवा
बाबा के सगरवा मुँहवा धोइतीं होना
एक घूँट पियली, दोसर घूँट पियली
तिसरे में गइली तरिआई हो ना!

नारी सशक्तीकरण केई आवाज भोजपुरी लोक भाषाई तेवर में रचाइल अमीर खुसरो के सुप्रसिद्ध गीतो में आइल बा–

' भैया के दियो बाबुल महल दुमहला
हमके दियो परदेस, अरे लखिया बाबुल मोरे!
काहे के व्याहे विदेस?.

ई अर्थाभाव के बात भोजपुरी लोकगीतन में अंगरेजन के जमाना में भी गिरमिटिया मजदूरन का औरतन का ओर से आइल बा–

'रेलिया ना बैरी, जहजिया ना बैरी
पइसवे बैरी ना!
लेइगा पिया के बिदेसवा हाथ राम
पइसवे बैरी ना!'

अथवा

अंगरेजन के करनी मोरा नीको नाहीं लागे राम।।
चानी लेगइल, सोना लेगइल, ले गइल सब गिनिया राम।
तेकरा बदला में दे गइल, गिलट के एकनिया राम।।
हाथी ले गइल,घोड़ा ले गइल, ले गइल सब गइया राम।

सेकरा बदला में दे गइल कागद के रूपइया राम।।
कपड़ा ले गइल, लहंगा ले गइल, ले गइल सब सरिया राम।
तेकरा बदला में दे गइल, फटही लुगरिया राम।।'

(पटना से प्रकाशित पत्रिका 'डेग–3' में सिपाही सिंह श्रीमन्त के लेख 'भोजपुरी लोकगीतन में प्रगतिशील तत्व है।) जहाँ भारत में रेल–तार के आवल शिष्ट साहित्य में भारत के तरक्की का रूप में देखल जात रहे, भोजपुरी लोकगीतकारन कन ओके अंगरेजन के व्यापारिक चातुरी कह के रेधियावल गइल बा–

'पइसा के लोभी फिरंगिया
धुआँ के गाड़ी उड़ाये लियो जाए।... '

आर्थिक विषमता लेके कविता के ई समकालीन भोजपुरी–धारा आगे लिखित रूप में भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर, रामदेव द्विवेद्वी, 'अलमस्त' होत जब मध्य बिहार में भूमि लेके किसान मजदूर आन्दोलन चलल त मुख्य रूप से गोरख पाण्डेय आ गौण रूप से रमता, बिजेन्द्र अनिल,अकारी आदि के गीतन में देखे में आइल। थोड़ा साहित्यिकता के जामा पेन्हले आगे ई महेन्द्र शास्त्री, बावला रिपुसूदन श्रीवास्वत, जमादार भाई आ कैलाश गौतम के कविता में प्रवाहित लउकल आज डॉ0 अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेद्वी, गंगा प्रसाद अरूण द्विवेदी,' रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', शशि भूषण लाल, कुमार विरल, आसिफ रोहतासवी, तैयब हुसैन पीड़ित, सुरेश कांटक, प्रकाश उदय, मिथिलेश गहमरी आदि में विभिन्न छन्द+दोहा, सौनेट,हाइकू, गीत, नवगीत, लोकराग, गजल मुक्तछंद) आ बिम्बात्मक प्रयोग साथे लखात बा। कुछ उदाहरण काफी होई–

1) ' कमइया हमर चर जाता , ईहे बाबू भइया !''
(महेन्द्र शास्त्री)

2) 'चला चली कहीं बनवा के पार हिरना!
एही बनवा में बरसै अंगार हिरना!
एही पार धनिया त ओही पार होरी
बिचवा में उठेली दीवार हिरना ।..........
(कैलाश गौतम)

3) 'केकरा नावे जमीन पटवारी,केकरा नावें जमीन?
कागद केकर? कलमिया केकर? केकर घोड़ा? लगमिया केकर?
कोरट कचरहरी में केकर सवारी,केकरा निआवे के जीन पटवारी!
(गोरख पाण्डेय)

4) ' जोते बोए के सुतार, नाहीं केनियो उधार
घरे ससुरू बेमार,सासु आँखे अलचार
आहो थउसल सऊँसे उमिरिया नू हो!
(प्रकाश उदय)

5) आज इहाँ आ कल उहाँ, रोज युद्ध के नाथ।
होत महाभारत तबो, शकुनि जाता बाँच ।।
बचबऽ आखिर के तरह? डेग–डेग पर घात।
हर छाता में छेद बा, बिन मौसम बरसात।।
रोहित से लगलन कहे हरिचन्द्र हो खिन्न।
हम सहलीं दुख लाल तू रस्ता चुनल भिन्न।।'
(दोहा, तैयब हुसैन)

6) 'काँट कूसन के मेहरबानी बा।
फूल पतइन के मुँह प पानी बा।
सउँसे घर मूस क अखाड़ा बा
बेबरल कहिए ले चुहानी बा।'
(गजलः अशोक द्विवद्वी)

भोजपुरी के आदि कवि कबीर मानल गइल बाड़न। अपना कविता में हिन्दू मुसलमान दूनों के धरम के बाह्य आडम्बर पर चोट कइला से उनका एके साथे सिद्ध नाथ पंथ आ हिन्दू मुस्लिम शासकन के कोप– भाजन बने के पड़त रहे। आज अंधविश्वास के खिलाफ लड़ेवाला डॉ नरेन्द्र डॉ+ भोलकर के हत्या उनका कविता के समकालीन साबित करे खातिर ताजा मिसाल बा। हिन्दी के दलित विमर्श आजकल चर्चा में बा। महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' में 1914 में ही प्रकाशित पटना के हीरा डोम के भोजपुरी कविता 'अछुत की शिकायत' एह दृष्टि के फेर समकालीन बिया–

'हड़वा मसुइया कै देहिया ह हमनि कै
ओकरौ के देहिया बभनवो कै बानी।
ओकरा के घरे–घरे पूजवा होखत बाटै
सगरे इलकवा भइले जजमानी।
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइले जा

पाँके में से भरि–भरि पिअतानी पानी।
पनही से पीटि–पीटि हाथ गोर तुरि दैले
हमनी के एतनी काहे के हलकानी?'

आजो भोजपुरी में एह दलित समस्या के साहित्य के विषय बनावल जाता, ना खाली दलितन द्वारा बलुक सवर्णो के कलम से–

'गँवई का बाहर बगइचा का पास में
एकनी के घर ना खोभार बाटे बाँस में
जिनगी भर जनलस ना कुआँ के पानी
तेहु पर कहेली कि हिनुए नू बानी!
बाबू का बेटी के शादी का बेरा
भोरे से दुअरा लगवलस ई डेरा
धइलस ई दुउरा में पत्तल बिटोर के
कउआ आ कुकुरन से छीन के आ छोर के
अठवन ई जूठे पर कइलस गुजारा
कफन के कपड़ा बा एकर सहारा
डगरा में रच दीं कमल फूल–पत्ती
बारी ना घर में कबो तेल बत्ती
सिंधा बजा के जगत के जगवलस
भय भूत भारत का मन से भगवलस
अपना के अइसे ई कइसे बनवलस?
दुनिया बढ़ल,ई कदम ना बढ़वलस।'

(बालदेव प्र0 श्रीवास्तव)

एह दलित चर्चा का क्रम में एगो उदाहरण आदिवासी पर लिखल कविता के कुछ पंक्तियन से देहल जरूरी बुझाता–

'चनकत धाम में /कपार पर हरियर दोना पत्तल के /भारी गेठरी लिहले/ करेजा फार के टांगी चीरल/ लकड़ी के गाँठ लिहले/सखुआ आ धनधोर जंगलन के लांघत/ऊबड़–खाबड़ झँकड़इल राहं/ चहुँप जालू दुलुकिये/ कहियो धाट शिला/ कहियो नरसिंहगढ़/ गालूडीह/ त कहियो झाड़ ग्राम के हाट–बाजार/पावे बदे अनमोल पसेना के दाम/बस कुछुए टाका में /गुदगर देह बेधवावत सोनमनी।'

(सोनामनी शीर्षक से 'भोजपुरी माटी' कोलकाता में प्रकाशित)। भोजपुरी मूं दर्जन भर प्रबंध काव्य भी लिखाइल बा जेकर पइसार रामायण, महाभारत से लेके कुंवर सिंह आ गौतम बुद्ध कथा ले बा। समकालीन इन्हन में प्रसंगवश कतहीं–कतहीं आइल बा।

कथा साहित्य

भोजपुरी कहानी अपना लोककथा सहित समकालीनता लेके भोजपुरी साहित्य के दोसर सम्पन्न विधा बा। राजा रानी, पशु–पंछी, पेड़–पौधा, दनवाँ–दइँत आ परी–कथा साथे इहाँ संघर्ष करत आम आदमी 'कउआ हँकनी,' 'भरबितना' या 'लकठुआ' का रूप में मिल जइहंन जवन पहिले सत्ता के शिकार होलन,फेर अपना हिकमत से ओकर साजिश काटत आखिर में उनकर जीत होला। नारी 'शीत बसंत' के मतारी सिद्ध होके पटरानी के हकदार होली। पुरूष राजा के हरा के ना खाली आधा राज पाट बाँटे मे सफल होलन बलुक राजा के लइकी से शादियो रचा लेवेलन। जवना चिरई के राजा अपना खेत के धान खात पकड़लन आ मार के खा गइलन, ऊ उनका पेट में कहाँ पचल! उल्टे जब पैखाना करे गइलन त पैखाना का रास्ता से निकल के रिगावे लागल– 'राजा के लाल गाँड़ देखली!' एगो बेंग के घमण्ड रहे–

नौ मन के लीट खइलीं, तोता अइसन मीत
खइलीं, तोहरे के खात बड़ा देरी.......।'

आखिर नाऊ उनका पेट में जाके नोहरनी से उनकर काम तमाम कर घललक। ई सब आज के संदर्भ में प्रतीक बा, आम (जनता) के खास (सत्ता) से टकराव के।

भोजपुरी के छपल कहानी के शुरूआत 1948 में प्रकाशित विमलानन्द सरस्वती (तब अवध बिहारी सुमन) के किताब 'जेहल क सनद' से होता आ 'भोजपुरी' पत्रिका (सं0 महेन्द्र शास्त्री) में प्रकाशित विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के कहानी 'केहू से कहेब मत' से। आजादी के बाद गुने दूनो में आधुनिकता बोध बा बाकी शैली (शिल्प) आ विषयगत

समकालीनता पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के कहानी 'हड़ताल' आ 'मुसलमानिन' से आवता। एगो में दलित के प्रतिरोध बा, दोसर में अल्पसंख्यक समस्या। रामेश्वर सिंह काश्यप के 'मछरी' फेर तीसर विषय सेक्स मनोविज्ञान के बड़ा बारीकी से उठावता। इहाँ तक आवत आवत भोजपरुी के समकालीन कहानी मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण साथे मनोविश्लेषणात्मक शैली के राह धरतिया आ हिन्दी कहानी के समानान्तर चले लागतिया।

सत्तर के दशक से त 'हम कुन्ती ना हई' (पी0 चन्द्र विनोद) 'रावण अबहीं मरल नइखे' (कृष्णानंद कृष्ण)'बिछउँतिया' (तैयब हुसैन पीड़ित), 'धुआ' (प्रा0 बृज किशोर), 'मनसा' (कन्हैया सिंह सदय)'जरत लकी' (अरविन्द विद्रोही),' गाँव के भीतर गाँव' 'आवऽ लवट चलीं' (अशोक द्विवेद्वी) आ हाल साल आइल 'ठेंगा' (भगवती प्रसाद द्विवेद्वी),' बरमुदा तिकोन' (कृष्ण कुमार),' गुलाब के काँट' (जितेन्द्र कुमार), 'कथा–वृक्ष' (बरमेश्वर सिंह) आ 'भूमिहीन' (रामलखन विद्यार्थी) के कहानी पुस्तक एक तरह से समकालीनता बहुल कहानियन के संग्रहे बाड़ीसऽ। इन्हन के कहानियन पर अलग अलग कुछ कहे के त ना इहाँ अवकाश बा, ना समय। निबंध के सीमा में अतने कहल चाहब कि समकालीन भोजपुरी कहानी अछूता विषय आ अद्यतन तकनीक का ओर तिकवे लागल बा। जइसे– हिजड़न के जिनगी पर 'ठेंगा', गाँवन में फइलत लम्पटई (लुम्पेन संस्कृति) पर 'बेमेंह के दंवरी' (कृष्ण कुमार), जनप्रतिनिधियन के धयला पर 'झाँसा' (कन्हैया सिंह 'सदय'), नक्सलबाद के समस्या पर 'पार्टी मैन' (तैयब हुसैन पीड़ित), वाममंथी संगठनन के अन्तविरोध पर 'मकड़जाल' (बरमेश्वर सिंह) स्वेच्छा से नई पीढ़ी में हो रहल अन्तरजातीय आ अन्तर ध ाार्मिक विवाह पर 'मान बढ़वल' (सन्ध्या सिन्हा), समलैंगिकता पर ' घटत नइखे विकास' (वरूण प्रभात) आ सीमावर्ती राज्यन में सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून के दुरूपयोग करत लइकियन साथे बलात्कार पर 'आबरू' (विष्णुदेव तिवारी) आदि। भोजपुरी में लघुकथा के संग्रहो लगभग आधा दर्जन आइल बा, जवना में समकालीनता के बहुतायत बा।

जहाँ तक समकालीन भोजपुरी उपन्यास के सवाल बा,त एकर शुरूआत भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिंदिया' (रामनाथ पाण्डेय 1956) से रूढ़िवादिता आ अंधविश्वास पर चोट करत नारी जागरण का रूप में हो चुकल बा। एही लेखक के दोसर नारी सशक्तीकरण पर उपन्यास बा 'इमरितिया काकी', जवन बाद में आइल। फेर त थारू जनजातियन के जिनगी के समस्या धुआत 'थरूहट' के बबुआ आ बहुरिया (राम प्रसाद राय, 1962), वेश्या जीवन पर 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल,1977), दलित समस्या पर लिखाइल 'अछुत' (सूर्यदेव पाठक 'पराग') आ 'बात इन्साफ के'(विक्रमा प्रसाद), बदलत गाँवन के रेखचित्र 'घर' टोला गाँव (पाण्डेय जगन्नाथ) आ 'ग्रामदेवता' (रामदेव शुक्ल), गिरमिटिया मजदूर पर 'जहाजी भाई' (रास बिहारी पाण्डेय) आ ताजा प्रकाश में आइल ' सुस्मिता सेन क डायरी' (हरेन्द्र कुमार) नागरीय परिवेश लेले विवाहेतर दैहिक संबंध के अपन विषय बनवले बा।

तबो कुल मिला के कहल जा सकेला कि भोजपुरी के समकालीन कथा साहित्य अबहीं जादे गँवई परिवेश लेले बा। कहल जाला कि जिनगी के जटिलता उपन्यासे साहित्य में स्थान पावेले। चूँकि भारतीय जीवन आजो विदेश का तुलना में सरल बा,एही से एकर उपन्यासो, विदेशी उपन्यासन लेखा संश्लिष्ट आ बहुपरती नइखे। भोजपुरी जीवन त हिन्दियो से एकरेखीय बा। ईहे कारण बा कि भोजपुरी के समकालीन उपन्यास समस्या लेके 'गहरे पानी पैठ' नइखे । एकरा कथा के फलक सीमित बा। चारित्रिक बुनावट में अपेक्षाकृत मनोविज्ञान आ विश्लेषणात्मकता के अभाव बा।

नाटक

मौलिक सृजन के अंतिम विधा 'नाटक' के जड़ लोकनाट्य ले पसरल बा, जहवाँ जातीय आ स्थानीय नायक के संघर्ष लेले लोकगाथा के नाटकीय गायन (जइसे सोरठी, आल्हा लोरिकायन, बिहुला, नायकवा

बनजारा) आ 'जट जटिन', 'डोमकच' जइसन लोकनाट्य अपना पुरान इतिहास में आजो समकालीनता के प्रतीक मतिन बाड़न। एह क्रम में रसूल अंसारी (1872–1952) के नाटक जदपि प्रकाशित नइखे बाकी एने के खोज में अपना कला लेके स्थानीय हथुआ राज (गोपालगंज, बिहार) से टकरा के दाँत तुड़वा लेल आ कलकता के अंग्रेजी फौजी छावनी (मार्कुस लाइन) के भोजपुरिया सिपाहियन के बागी बना के खुदे जेल के हवा खाइल, उनका के एके साथे सामंतवाद आ साम्राज्यवाद से लड़ जाए के कहानी कहता।

आगे चल के भिखारी ठाकुर (1887–1971) ना खाली अपना रंग कर्म आ प्रस्तुति से बलुक नाटक लेके भी समकालीन घोषित बाड़न। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार 10–10,15–15 हजार के भीड़ के अपना सीमा में जगावे के उपक्रम में उनकर साँच माने में श्रव्य काव्य बा। ई तब हलचल मचावत रहे जब भारत अंगरेजन के गुलाम रहे। जमीन्दारन के माध्यम से किसान मजदूरन पर ओकर दमन चक्र गति में रहे। लोग बाग गरीबी, बेकारी, धार्मिक अंधविश्वास, दहाड़ सुखार के मार से यात त्रस्त रहस या गाँव के लघु उद्योग धंधा नष्ट हो गइला से देश से परदेश तक के प्रवास खातिर विवश। हिन्दी नाट्य साहित्य के क्षेत्र में लक्ष्मी नारायण मिश्र के समस्या मूलक नाटक आ मोहन राकेश के आधुनिक नाटकन के बीच एगो लम्बा अन्तराल रहे। अइसन में ऊ दहेज के खिलाफ, वेमेल शादी आ बाल विवाह (बेटी बेचवा, ननद भउजाई) के खिलाफ प्रभावकारी काम कइलन। तबे पूँजीवादी प्रभाव सरूप संयुक्त परिवार के विघटन (भाई विरोध) से सावधान करत ऊ बुढ़शाला (वृद्धाश्रम) के जरूरत (विधवा विलाप) महसूस करइलन आ पति के लमहर प्रवास में अकेले घरे रह गइल विवाहिता के यौन विचलन, सौत साथे रहे के अदेंसा (बिदेसिया), नाजायज संतान (गबर धिचोर) पूरा समाज के औरतन के प्रति सहानुभूति पूर्वक विचार करे के सिफारिश कइलन। ताम झाम से दूर उनकर नाटक अपना प्रदर्शन में जनता से जुड़ल रहला गुने आज के नाटक (नुक्कड़) के अद्यतन प्रयोग जइसन रहे।

शिष्ट नाटकन का श्रेणी में रविदत्त शुक्ल के 1884 में लिखल आ प्रदर्शित भइल 'देवाक्षर चरित' विदेशी भाषा के तुलना में देशी भाषा के बेहतर बतावत तबे हिन्दी के पक्ष में आवाज उठवले रहे। छांगुर त्रिपाठी 'जीवन' के एकांकी 'सुदेसिया' (1940) गुलामी से छुटकारा विषयक भइला से जब्त क लिहल गइल। 1942 में राहुल जी के आठ नाटक 'नईकी दुनिया', 'ढुनमुना नेता', 'मेहरारून के दुरदसा', 'जोंक', 'ई हमार लड़ाई ह', 'देश रक्षक', 'जपनिया राछछ','जरमनवा के हार निहचय' में नामे से कइक गो के समकालीनता आजो प्रासांगिक बा। रामेश्वर सिंह काश्यप के रेडियो नाटक 'लोहा सिंह' चीन के आक्रमण से शुरू होके श्रृंखला में सामजिक घटनन पर आधारित रहला का चलते बहुते लोकप्रिय भइल। ई ओकरा समकालीनता के प्रभाव रहे।

तबे से आज ले एहू विधा में बहुते काम भइल बा, बाकी मंचन का दृष्टि से भोजपुरी के अधिकांश नाटक जहाँ कई अंक आ दृश्यन में बटँल 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' के तकनीक लेले संस्कृत नाटक का तर्जे पर लिखाइल बा, उहाँ स्वभावतः एह में गाँव के समस्या प्रधान बा, ऊहो पांस्परिक। तबो पूर्णांक नाटकन में केदार पाण्डेय के 'शुरूआत', महेन्द्र प्रसाद सिंह के 'कचोट' आ सुरेश कांटक के 'दुलरूआ' क्रमशः वर्ग आ वर्ण संघर्ष, व्यवस्था का प्रति सुनगत विद्रोह आ गरीब परिवार के बेबसी लेले ना खाली समस्या में बलुक मंचन का दिसाइयों समकालीन नाटक बा। कांटक के सक्रियता एह में अपेक्षाकृत जादे बा।

हिन्दी एकांकियन के तकनीक लेले समकालीन विषयन साथे विविध शैलियन में लिखाइल मोनोलॉग 'अकसरूआ' (बंसत कुमार), ध्वनि प्रकाश के प्रभाव लेले बाल मनोविज्ञान पर रचाइल 'आपन आपन डर' आ 'ईदगाह से आगे' (तैयब हुसैन पीड़ित) आ सत्तासीन नेतन के दरबारी मंत्रियन सह झूठ आश्वासन केन्द्रित 'मंगलाहाथी' (शारदा त्रिपाठी)

एह विधा के उल्लेखनीय रचना कहाई।

चलत–चलत कहे के अनुमति चाहब हम जान बूझ के भोजपुरी के शेष विधा निबंध, संस्मरण, यात्रा, पत्रिका आदि के चर्चा एह से नइखीं करत कि इहाँ मौलिक साहित्य सृजन के गुंजायश कम होला। साहित्य सृजन अन्ततः एगो राजनीतिक हस्तक्षेपो ह। अब तक के मान्यता ई रहल बा कि परिवर्तन राजनीति से ही संभव होला, बाकी ओके सम्पन्न करे में समकालीन साहित्य उत्प्रेरक के काम करेला । एह में मानवतावादी रचना कह के हमनी बीच से नइखी निकल सकत, काहे कि मारेवाला भी मानव बा आ मार खायेवाला भी! एह में दोसरका के पक्षधर भइल साहित्यकार के नैतिक बाध्यता बा। गोर्की कहले रहस कि–' कला एक युद्ध है जो हरदम किसी के पक्ष में लड़ा जाता है, किसी के विपक्ष में।' साहित्यो साथे ईहे बात बा। भोजपुरी के समकालीन सृजन एह में तनी पिछुआइल बा। सचाई ईहो बा कि 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' (ले0 पं0 गणेश चौबे, प्रकाशक भोजपुरी अकादमी, पटना, 1983) पुस्तका का अनुसार छपल किताबन के संख्या 1983 ले काव्य में लगभग 50, कहानी में 50, उपन्यास में 25 आ नाटक में 50 रहे । अब ले कुछ विधा में अनुमानित एकर संख्या 400 के आस पास पड़ी। पत्र पत्रिकन के प्रकाशित फुटकर रचनन के संख्या गिनावल मुश्किल बा। अइसन में हम समकालीनता का दिसाइंयो भरल हँड़िया में से एक दूगो चाउरे टोए के कोसिस कइनीहं। बाकी खुशी के बात बा कि भोजपुरी के समकालीन साहित्य वातानुकूलित कमरा में बइठ के शराब का साथे नइखे लिखात। जादे का कहीं ? 'थोड़ा लिखना, बहुत समझना।'

●●●

दू गो ग़जल

❑ **शशि प्रेमदेव**

(एक)

एक मुट्ठी पियाज कऽ मतलब!
अब बुझाता सुराज कऽ मतलब!

जंगले में गुजर गइल् जिनगी
का बताईं 'समाज' कऽ मतलब!

घूघ मुँह पर, जबान पर गारी
अब इहे बा लिहाज कऽ मतलब!

मन में जबले फितूर पइठल बा
रोज पूजा नमाज कऽ मतलब?

पान, सिगरेट, चाय बत्कूचन....
हिंद में काम–काज कऽ मतलब!

(दू)

चोर के 'चोर' जनि कहऽ साधो!
खैर चाहऽ तऽ चुप रहऽ, साधो!

अब तऽ अपने सवाँग बा मुखिया
गूँग बनि के सितम सहऽ, साधो!

फेरू बीपत क आ गइल आन्ही
फेरू तू ठूँठ– अस ढहऽ, साधो!

लोग तहरो के मानि ली मुरदा
धार का ओर जनि बहऽ, साधो!

घीव निकली जरूर, जिनगी के–
खूब माठा मतिन महऽ, साधो!

●●●

भोजपुरी लघुकथा : एगो रफ सर्वेक्षण

❑ **अतुल मोहन प्रसाद**

आजकल साहित्य में कवनो विधा से सबसे ढेर पढ़े जाये वाली विधा बिया– लघुकथा। लघुकथा के भागीदारी विभिन्न स्वरूपन में साहित्य में बहुत दिनन से चलल आवत बा। एह शब्द के जनक बुद्धिनाथ झा कैरव के मानल जाला।

लघुकथा के विकास आदमी के विकास से जुड़ल बा। जब आदमी सामाजिक प्राणी बनल होई। नीमन आ बाउर दुनो प्रवृति के आदमी समाज में शुरू से बाड़न। मानव सम्यता के विहान में अनुभूत कवनो घटना क्रम के कथा मुट्ठी में बान्ह के दोसरा आदि मानव आ मानवी से आपन सांकेतिका, अविकसित भाषा में जवन कहले होई, उहें पहिलका लघुकथा मुखारी परम्परा तक चलल होई । जब तक कवनो लिपि के विकास ना भइल होई। लिपि के बाद लघुकथा के लिखित सरूप आइल।

पंचतंत्र के रचना काल 550 ई पू0 मानल जाला। एकरो में लघुकथा के बीज मिलेला। बच्चन के मन बहलावे खातिर माई, दादी नानी द्वारा शिक्षात्मक, उद्देश्य परक छोट– छोट कथा के शुरूआत भइल रहे । ओह घरी कवनो पत्रिका ना रहे । बाद में एकर स्वरूप सोझा आइल।

हिन्दी में पहिलका कहानी पं0 माधव राव सप्रे के कहानी एक टोकरी भर मिट्टी (1901 ई0) मानल जाले। जवन मात्र 610 शब्द में लिखाइल बा। एकरो साइज आ संवेदना लघुकथा से मेल खात बा।

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर हिन्दी के पहिला लघुकथा संकलन (1952ई0) 'आकाश के तारे धरती के फूल भूमिका में लिखने बानी– कर्लाइल के राय में– सम्पूर्ण जीवन के सम्पूर्ण चरित्र उपन्यास ह अउर एक घटना के सम्पूर्ण चरित्र कहानी। '' एके पढ़ के प्रभाकर जी सोचली कहानी के छोट से छोट सीमा का होखी? 1928–29 में एह सोच से प्रभावित होके उहाँ के 'सेठ जी' 'सलाम' जइसन लघुकथा लिखलीं। छोट कथा लिखे में उहां का अपना के पहिला कथाकार मानत रही। बाकिर जब उहां के मुलाकात माखनलाल चतुर्वेदी से भइल तब उहां के माने के पड़ल 1915–18 के साल में चतुर्वेदी के लिखल ' बिल्ली एवं 'बुखार ' हिन्दी में छपल पहिलकी लघुकथा बाड़ी सं पांच दिवसीय क्रिकेट मैच के यदि उपन्यास मानल जाय आ एक दिवसीय क्रिकेट के कहानी तब ट्वेन्टी– ट्वेन्टी लघुकथा के भूमिका में ओसही रोमांचक आनंद देने वाला साहित्य के विधा मानल जाई।

बीसवीं सदी के पांचवाँ दशक से हिन्दी में लघुकथा के स्वतंत्र पहचान कहानी से अलग बने लागल। हिन्दी में पहचान बनत देख भोजपुरी में लघुकथा के कसमसाहट प्रारंभ हो गइल।

वर्तमान जिनगी टुकड़ा– टुकड़ा में बंट गइल बिया। ओह छोट– छोट टुकड़न में एकही आदमी कई–कई गो महाभारत झेल रहल बा। ओह महाभारत के एगो अंश देखावे के काम लघुकथा करत बिया। ओह महाभारत में लघुकथा एगो राहत के सांस के काम करत बिया। भोजपुरी के लघुकथाकार बड़ा सहज रूप से पाठकन के सोझा जिनगी के रंग बिरंगा रूप उकेरे के काम कर रहल बाड़न । ईहे कारण बा कि भोजपुरी में लघुकथा आपन एगो अलग पहचान बनवले बिया। नाहीं त फूहड़ हास्य आ नीच व्यंग लघुकथा अइसन श्रेष्ठ विधा के इर्द गिर्द घेर के तबाह कर दिहित। सड़क छाप व्यंगकार अपना के ओह जगह पर एडजस्ट नइखन कर पावत । ऊ लघुकथा अइसन विधा पर सांप जइसन गेंडुरी मार के बइठ जइतन। व्यंग के ऊपर व्यंग के सबसे नीमन स्थिति लघुकथा ह। हिन्दी लघुकथा के तुलना में भोजपुरी के लघुकथा कवनो

माने में कम नइखे सिवाय संख्या की दृष्टि से। भोजपुरी के कुछ कहानीकार आपन कहानी के साथ–साथ लघुकथा चलते चर्चित बाड़न ओमे रामनाथ पाण्डेय, कृष्णानंद, राकेश कुमार सिंह, अतुल मोहन प्रसाद, पी. चंद्रविनोद जगदीश चन्द्र मिश्र, अरूण मोहन भारवि, कन्हैया सिंह 'सदय' भगवती प्रसाद द्विवेदी, रूपश्री, सूर्य देव पाठक परागः बरमेश्वर सिंह, कुमार विरल, राम नारायण उपाध्याय, प्रो. बृज किशोर पाण्डेय,सुरेन्द्र ब्रजभूषण मिश्र विनोद द्विवेदी आदि।

लघुकथा में होमियोपैथिक दवाई के एक बूंद के तरह असरदार शक्ति वा। गागर में सागर लघुकथा में देखल जा सकत बा। एकबूंद में समुंद्र के जवन कल्पना कइल जाला ऊ लघुकथा में मौजूद बा। 1964ई. हिन्दी आ भोजपुरी लघुकथा खातिर एगो यादगार साल रहल। एह बरिस में बिहार से हिन्दी के पहिलका लघुकथा संग्रह रामेश्वर प्रसाद वर्मा में सम्पादन में 'बिखरे फूल' बक्सर से निकलल। आ ओही साल भोजपुरी में चन्द्रभूषण सिन्हा के सम्पादन में पनरहगो लघुकथाकारन के एकइस गो लघुकथा के संग्रह 'छोटी–मोटी गाजी मिया' के नाम से जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् निकलल। एह संग्रह के कई गो लघुकथा बेजोड़ सावित भइली स। डॉ सत्येन्द्र ओझा के लघुकथा 'ऊ दूनो' आ सबितरी के पात्रन में इंसानियत अपना पराकास्ठा पर झलकत बा। रामवृक्ष राय विधुर के लघुकथा महंगू' में एगो खेतिहर मजूर के लाचारी के नीक चित्रण मइलबा।

हिन्दी लघुकथा में जहां जोर– शोर से काम होत रहे। उहे भोजपुरी में एकर गति मधिम रहे। आठवां दशक आवत– आवत हिन्दी में लगभग दू दर्जन लघुकथा के किताब साहित्य में आ गइल। हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कथा साहित्य पत्रिका 'सारिका' जून 1973 में लघुकथा विशेषांक निकाल के लघुकथा के हिन्दी साहित्य में पहचान दिलावे के काम कइलस। अब तक हिन्दी में लगभग दू सौ व्यक्तिगत लघुकथा संकलन आ अनेक सम्पादित लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुकल बाड़ेस सारिका के कई गो लघुकथा पर विशेषांक निकलल। लघुकथा पर आलोचना के किताब अइलीसऽ जवना में प्रमुख रहल –लघुकथा वहस के चौराहे पर लघुकथा में बिहार का योगदान आदि। कई लोग लघुकथा पर शोध कइल जइसे डॉ आशा पुष्प, डॉ अमर नाथ चौधरी 'अब्ज' आदि। बाकिर भोजपुरी में लघुकथा के गति कम रहे। कारन भोजपुरी में पत्रिकन के अभाव। भोजपुरी में आजतक लघुकथा से जुड़ल कवनो पत्रिका के प्रकाशन ना भइल जवन निछान लघुकथा छापे। जबकि हिन्दी में लघुकथा, लघु आघात, अभिव्यक्ति, प्रतिनिधि लघुकथाएं आदि अनेक पत्रिकन के नाम लिहल जा सकत बा। 1964 के बाद 1982 में रामनारायण उपाध्याय के एकल संकलन 'जमीन जोहत गोड़' प्रकाशित भइल। जवना में उपाध्याय जी के चालीस गो लघुकथा बाड़ी स। इहां के लघुकथा में कसाव बा आ शिल्प के सुधरता अच्छा उभरल बा। 'मान्यता' लघुकथा के महामाया प्रसाद 'विनोद' अपना शोधग्रन्थ में कथा खातिर अच्छा स्थान देले बानी। दोसर जवन उनकर लघुकथा उल्लेखनीय बाड़ी स ओमे– कचोट, भूख लाजो के बराती, समय के धरम जतरा के कीमत प्रमुख बा। एह संकलन के बाद भोजपुरी लघुकथा से उपाध्यायजी लुका गइली। इनके सम्पादन में निकलल 'ईंगुर' पत्रिका में एगो दूगो रचना देखे पढ़े के मिलल। इनकर मेहरारू, कला अमनौरिया के कुछ लघुकथा भोजपुरी में आइल।

भोजपुरी कहानी के आरंभ जेहल के सनदि (1948) से मानल जाला। ओही साल भोजपुरी के पहिला लघुकथा 'भोजपुरी' पत्रिका में 'का ऊ सोना ना रहे' महेन्द्र शास्त्री के लिखल आइल बाकिर कवनो दोसर नाम से। भोजपुरी कहानियाँ, उरेह, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका लोग, बिगुल, जनताललकार भोजपुरी कथा कहानी, पाती, ईंगुर,

भोजपुरी लोक, पनघट,निर्भीक संदेश, भोजपुरी माटी आदि अनेक पत्रिका भोजपुरी लघुकथा के रचनात्मक सक्रियता प्रदान कइलीस। एहन में बिगुल आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के लघुकथा विशेषांक आइल। जवना के बाद क्रमशः 'तिरमिरी' (सम्पादक पराग) आ 'एक मुठ्ठी लाई'। (सम्पादक पाण्डेय कपिल कृष्ण) नाम से पुस्तकाकार भइल।

1990 में भगवती प्रसाद द्विवेदी अउर प्रो बृजकिशोर के सम्पादक में बारह लघुकथाकारन के पाँच–पाँच गो लघुकथा के संग्रह आइल– 'टुकी टुकी जिनगी'। भगवती प्रसाद द्विवेदी के 55 गो लघुकथा के संकलन 'थाती' आइल। 2000 ई में डॉ विवेकी राय के 'कथुली गाँव' प्रकाशित भइल। जवना में लोक लघुकथा संकलित बाड़ी स। 2001 में 'अगुआ' गंगा प्रसाद अरूण के सम्पादन में जमशेदपुर से प्रकाशित भइल, जवना में पनरहगो लघुकथाकारन के तैतालिस गो लघुकथा के स्थान मिलल बा। एह संग्रह में अजय कुमार ओझा के 'बाँझ' नारी के विवशता आ पुरूषके मानसिकता के एक संगे उजागर करे में सफल बिया। 'अगुआ' लघुकथा एह किताब के नाम बा हरेन्द्रे प्रताप सिंह के लघुकथा बा जवन किताब के सबसे पिछला पन्ना पर बा। बाकिर लघुकथा में पिछला नइखे।

2005 में जयबहादुर सिंह के एकल लघुकथा संकलन 'सपना के साँच' नाम से जमशेदपुर से छपल। एह संकलन में उनकर साठ गो लघुकथा संकलित बाड़ी स। एह संकलन के कथा छोट बाकिर असर ढ़ेर करत बाड़ी स। आपन तीत मीठ अनुभव के लघुकथा के गुलदस्ता के रूप में सजा के पाठक के सोझा परोसे में सफल बानी जय बहादुर सिंह। भ्रष्टाचार आ सरकारी तंत्र के विडम्बना के बहुत निर्भीकता से लघुकथा में दरसावल बा। मानवीय संवेदना से जुड़ल लघुकथा के बानगी इहां के लघुकथा में भेंटात बा।

2006 में शिवपूजन लाल विद्यार्थी भोजपुरी लघुकथा के एकल संकलन आरा से देले बानी। मानवीय संवेदना के अनेक रंग एक जगह संजोये के प्रयास कइल गइल बा इहां के संकलन 'कतरा कतरा समुन्दर'। सहज ढंग से गंभीर बात परोसे खातिर विख्यात विद्यार्थी जी के कई गो लघुकथा काफी नीक बाड़ी स जइसे 'आरक्षण', 'दू गो चेहरा,' 'सही जबाब।'

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के लघुकथा अंक मे 61 गो लघुकथाकार पाठक के सोझा अइलन आ तिरमिरी (बिगुल के लघुकथा अंक) के माध्यम से 89 गो लघुकथा लेखक। जवन अपना आप में ओहघरी भोजपुरी लघुकथा के अच्छा उपलब्धि मानल गइल।

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना चौहदवां अधिवेशन 1994 में भोजपुरी लघुकथा पर पहिला बैर चर्चा कइलस । बाद में गाजीपुर अधिवशेन में चुनल लघुकथाकारन के कई गो लघुकथा के पाठ अउर ओह पर विवेचना कइलस।

2012 में ओम प्रकाश केसरी पवन नन्दन के 'माई के आसीरबाद' भेंटाइल। एह संकलन में पवनन्दन के बासठ गो लघुकथा छपल बाड़ी स। 'उपेक्षा', 'विज्ञापन' एक मुठ्ठी भात नीक रचना बाड़ी स। नारी भ्रूषण हत्या पर 'हमार का बेंजाय बाटे?' एगो सटीक लघुकथा बा। रामेश्वर प्रसाद सिंहा पियूष के भोजपुरी लघुकथा में एगो अलग 'तेवर' बा। अशोक द्विवेदी के लघुकथा के जबाब नइखे।

पुरनकी पीढ़ी के लघुकथाकारन में विवेकी राय, विजेन्द्र–अनिल, स्वर्ण किरण, बिजय बलियाटिक, महेश्वराचार्य, रसिक बिहारी ओझा निर्भीक के नाम आदर के साथ लिहल जाला। भोजपुरी के उभरत लघुकथाकारन में श्रीमती बिन्दु सिंहा, श्रीमती कला अमनौरिया, विजयन, बृजमोहन ललित कौशलेन्द्र आदि से भोजपुरी के श्रेष्ठ लघुकथा के आशा भोजपुरी के साहित्य करत बा।

भोजपुरी में सबसे दमगर लघुकथा खातिर रामनाथ पांडेय के लघुकथा सदैव इयाद कइल

जाई। 'राहत' ईमानदारी, 'गुलामी', 'बंधुआ मजुर' इहां के स्मरणीय लघुकथा बाड़ी स। भोजपुरी कथा कहानी के सम्पादन प्रो बृजकिशोर के 'रोटी' के अलचार मजूर के मर्मस्पर्शी चित्रण बा। आज के शिक्षित लोगन के कथनी करनी पर व्यंग कृष्णानन्द कृष्ण के लघुकथा में देखल जा सकत बा। रूपश्री अपना लघुकथा में अनेक प्रकार के मानवीय संवेदना के उकेरे में सफल रहल बाड़ी। सुर्यदेव पाठक पराग के लघुकथा 'आंदोलन', 'देश सेवा' आदि में उनकर प्रतिभा देखल जा सकत बा।

सब मिला के भोजपुरी में लघुकथा के शिल्प आ वस्तु में निखार आइल बा। अब ई कवनो उपेक्षित विधा नइखे रह गइल। अझुराइल आ गहन जिनगी के डोर पकड़े में कामयाब आ सबसे समर्थ विधा के रूप में भोजपुरी लघुकथा उभरल बिया। पाठकन के आश्वस्त करे में ई विधा सक्षम बा। एकरा के नकारल नइखे जा सकत। भोजपुरी में प्रकाशित कवनो अइसन पत्रिका नइखे जवन लघुकथा प्रकाशित ना करत होखे।

●●●

गीत

❑ **हीरा लाल 'हीरा'**

का जाने अब काहें विधि के ,उल्टा बा ब्यौहार
उनुका अँगना बिया अँजोरिया, हमरे घर अन्हियार।
बदरो बुझला चीन्हि–चीन्हि के
आपन जल बरिसावे
सूखल हमरे खेत परल बा
सावन रोज रिगावे
हम ना जनलीं कइसन होला, कजरी अउर मल्हार।

राजनीति के डाइन सगरे
गाँव चाटि के सूतल
छपलसि कवन अन्हरिया, भोरे
कहीं किरिन ना फूटल
स्वारथ, छल का बनरबाँट में, खतम भइल परिवार।

कइसे निकले राह, जिनिगिया
के निरबाह कठिन बा
दिन हमनी के राति, समुझि ना
पाईं कहाँ सुदिन बा
फिर 'सुराज' के सपना देके, बिहँसति बा सरकार।

●●●

समकालीन संदर्भ में भोजपुरी कथा साहित्य आ नाटक–साहित्य

❑ डॉ. अशोक द्विवेदी

पूत क पाँव पलने में चिन्हा जाला। स्वतंत्रता आंदोलन का धाह में जनमल भोजपुरी कहानी जनमते नया चोला पहिनले रहे। रूप–रंग, भाव–विचार, जुगबोध कूल्हि लेखे अवध बिहारी 'सुमन' के कहानी–संग्रह 'जेहल के सनदि' (1948) मूलतः विद्रोही–स्वर के रहे। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक के 'कैटेगरी' बनवला के जरूरत नइखे। 'सुमन' जी के कथाकार अपना विद्रोही सुर का साथ (अपना समय में), हर अनेति, अत्याचार, भ्रष्टाचार आ धूर्त्तई का खिलाफ हस्तक्षेप करत लउकत बा। 'मलिकार', 'मउनी बाबा', 'कतवारू दादा', 'किसान–भगवान', 'गुलाब', 'दफा 302', 'जेहल क सनदि' आ 'परमपद' जइसन कहानी भोजपुरी जनपद का जातीय चेतना आ सुभाव संस्कार में रचाइल रहला का बादो एगो मौन बाकि सचेत हस्तक्षेप करत लागत बाड़ी सन। एक लेखो भोजपुरी कहानी के उदय, समकालीन काल में भइल।

हिंदी के समकालीन कथा–आन्दोलन आ कहानी के पच्छिमी ढाँचा से अलहदा, अपना तेवर आ रंग ढंग से चलल भोजपुरी कथा के नेइं एही से मजबूत रहे। भोजपुरिया कथाकार आधुनिकता के जस के तस ना बलुक आदर्श आ मानवीय–मूल्यन का दिसाईं सुभाविक निष्ठा का साथ अपनवलस। एही से ओकरा जथारथ में, कवनो न कवनो रूप में जदा–कदा आदर्श झाँकत मिल जाई। भोजपुरी कहानी में जुगबोध, समसामयिकता अपना परिवेश का साथे बा। आदमी के जीवन –संघर्ष, जद्दोजहद, स्वारथ –परमारथ, नीचता, साधुता, प्रेम–करुणा, पीड़ा, क्षोभ के अभिव्यक्ति कूल्हि इहाँ मिल जाई। संवेदना, परिवेश, चरित्र सिरजन, नाटकीय बिनावट, अपना खासियत का साथ उभरत मिली। समाजिक, परिवारिक विघटन, समाजिक–राजनीतिक विसंगति, छल–प्रपंच, कुचक्र, शोषन, अत्याचार आ ओकर बिरोधो मिली, बाकिर इहाँ टूटत–सँभरत, कीच–कनई में लसरात आदमी के हारत–जीतत मनोबल सहेजे वाली कहानियो देखे के मिली। अउर विधा लेखा, भोजपुरी कथा साहित्य के प्रकाशन आ ओके लोकप्रिय बनावे में सबसे ज्यादा योगदान पत्र–पत्रिकने के रहल।

पहिले उपन्यास (रामनाथ पाण्डेय के बिन्दिया, 1956) समय के लेहाज से पोढ़ रहे। आदर्शवाद आ जथारथ क पचरा ना गावल जाव त, अपना मौलिकता आ भोजपुरी–सुभाव–संस्कार का लेहाज से ई उपन्यास अपना कथ के सुघर आ प्रभावी ढंग से परोसत बा।

कहे क मतलब ई कि सुरूआती भोजपुरी कथा में जवन समकालिक जथारथ उभरल, ओमे सामन्ती, राजनीतिक आ दबंग वर्ग के चल्हाँकी, धूर्त्तई, शोषन–अत्याचार आ पाखण्डी वर्ग के छल का चक्र में चक्कर खात, गरीबी, अशिक्षा आ सोझबकई लिहले खेतिहर–मजदूर आ कमजोर लोग रहे; जवन अपना प्रेम, करुना, जियका आ जीउ के जोगावे में लसरात, फिंचात आ लड़त रहे। एही सब के विस्तार आ संश्लिष्ट चित्रण आगा का भोजपुरी कथा साहित्य में अउर गझिन (संश्लिष्ट) आ गहिर रूप में देखे के मिलल। भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिन्दिया' में गँवई जथारथ के ऊ रूप उद्घाटित भइल, जवना में गँवई दबंगई से उभरल लंपटई आ जोर–जबरदस्ती का खिलाफ नारी चेतना के तेजस्वी रूप आ संघर्ष लउकल, जवन अपना प्रेम के साथ खेतीबारी के संरक्षा में जीवट आ धैर्य प्रगट कइलस। 'बिन्दिया' के भावबोध, संवेदना आ शिल्प आगे आवे वाला भोजपुरी उपन्यासन खातिर मजबूत नेंइ के काम कइलस। हालाँकि

आदर्शमुखी– जथारथ के गहिर असर आगा का कई उपन्यासन में साफ झलकत रहे, कहीं कथा–विन्यास में त कहीं 'ट्रीटमेंट' में।

पहिले 'भोजपुरी कहानियाँ' में छपल, जथारथवादी कोन से मानव–जीवन के रोचक आ संश्लिष्ट चित्रण करे वाला उपन्यास 'ऊसर के फूल' (नरेन्द्र शास्त्री) 1975 में आइल। एकरा में मानवीय अंतःसंघर्ष, भटकाव, आपसी सम्बन्धान के विसंगति, प्रेम, करुणा आ सामाजिक जथारथ के उत्कट रूप देखे के मिलल। कई मामला में भोजपुरी कथा (उपन्यास) के समकालीन रूप– विन्यास आ भावबोध से भरल 'ऊसर के फूल' आँचलिक जीवन के निम्न–मध्यवर्गीय समाज आ बदहाल निम्न वर्ग के रहन–सहन, सोच– सरोकार, भटकाव आदि के साथ विसंगति आ विकृतियन के सुभाविक आ जीवंत रूप से चित्रित करत बा।

'जेहल के सनदि' के बाद पत्र–पत्रिकन में कहानी आपन राह आ लोकप्रियता बनावत रहे, बाकिर कवनो कहानी संग्रह एक दशक ले सोझा ना आइल। 1962 में चन्द्रभूषण सिन्हा के संपादन में 'भोजपुरी कहानी संग्रह' छपल जवना में पनरह कथाकारन के कहानी रहे। तब से अबले एह तरह के कइ गो संपादित कहानी संग्रह छपले सन।

रामबली पाण्डेय के संपादन में ओनइस गो कहानियन के संग्रह 'भैरवी के साज' आ सिपाही सिंह श्रीमंत आ कृष्णानंद 'कृष्ण' के संपादन में अट्ठाइस कहानियन के संग्रह आइल। आगाचल के प्रो0 ब्रजकिशोर के संपादन में 1981 में 'सेसर कहानी भोजपुरी के' आइल; जवना में एकावन गो प्रतिनिधि कथाकारन के कहानी रहली स। संपादित कहानी संग्रहन का क्रम में हाल–साल में एकइस गो कहानियन के एगो संग्रह 'कथा–मंजूषा' आइल बा, जवन कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा का भोजपुरी पाठ्यक में राखल गइल बा। एह नया कहानी–संग्रह में पुरान कथाकारन का साथ कुछ नयो कथाकार शामिल बाड़न।

स्वतंत्र कहानी संग्रह के एगो सामान्य सूची बनावल जा सकेला। जेमें रामवृक्ष राय 'विधुर' (खैरा पीपर कबहुँ न डोले, 1964), राधिका देवी (धरती के फूल), सच्चिदानन्द (बटोही), आ गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' (बैरिन बँसुरिया, 1968)। कामता प्रसाद 'दिव्य' (चिटुकी भर सेनुर, 1969), ईश्वरचंद्र सिन्हा (गहरेबाजी, 1971), रूपश्री (जिनिगी के परछाहीं) आ 1972 में विजय बलियाटिक (जै जजमान) 1974 में तैय्यब हुसेन 'पीड़ित' (बिछउँतिया) 1975 में, कृष्णानन्द 'कृष्ण' (एह देश में), वीरेन्द्र नारायण पांडेय (दरबा), कन्हैया सिंह सदय (मनसा, 1976), प्राध्यापक अचल (माया मिलल न राम, 1977), पी0 चंद्र विनोद (हम कुन्ती ना हईं), विश्वनाथ श्रीकृष्ण (भगजोगनी), रामनाथ पाण्डेय (सतवन्ती), घनश्याम मिश्र (अमरावती) सब संग्रह 1977 में। फेर 1978 में ब्रजकिशोर (धुआँ), ब्रजकिशोर दूबे (सकदम, 1979), रूपश्री (खोंता से बिछुड़ल पंछी, 1979), रघुनाथ सिंह (मतिसरी जिन्दाबाद), मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (भइंस के दूध, 1979), स्वर्णकिरण (तिनपतिया, 1980), मधुकर सिंह (माटी कहे कुम्हार से, 1980), अक्षयबर दीक्षित (सतहवा, 1980), अरविन्द शर्मा (लकीर, 1981), प्राध्यापक अचल (को बड़ छोट कहत अपराधू, 1981), विवेकी राय (ओझइती, 1982), उमाकान्त वर्मा (रेत के समुन्दर, 1982), रामजी पाण्डेय अकेला (लोढ़ा, 1982), रामलखन विद्यार्थी (आज के आदमी, 1982), अवधेश (बदसूरत, 1984), पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद (खरोंच, 1984), कृष्णानंद कृष्ण (रावन अभी मरल नइखे, 1988), अविनाश चंद्र विद्यार्थी (डागा बाजि गइल, 1988), स्वर्णकिरण (चहरदीवारी, 1989), कन्हैया प्रसाद सिंह (बड़प्पन, 1990), पी0 चंद्र विनोद (केरा के टुकी टुकी पतई, 1990), राजगुप्त (जगरम, 1990), विष्णु कमल डेका (स्नेह के बन्धान, 1991), नरेन्द्र शास्त्री (मुट्ठी भर माटी, संपा0 अशोक द्विवेदी, 1992), कृष्णानन्द कृष्ण (हादसा,

1997), पाण्डेय सुरेन्द्र (जिए मरे के बेबसी, 1998), डा0 अशोक द्विवेदी (गाँव के भीतर गाँव, 1998), रामनाथ पाण्डेय (देश के पुकार पर, 1999), चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह (बेगुनाह, 1999), सुरेश काँटक (समुन्दर सुखात बा, 2000), रामनाथ पाण्डेय (अन्हरिया छपटात रहे, 2000), राजगुप्त (उरिन), अशोक द्विवेदी (आवऽ लवट चलीं जा, 2000), कन्हैया पाण्डेय (मिरजई), ऊषा वर्मा (लाइची, 2002), आ गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (रेस के घोड़ा, 2007) आदि बा। सूची बनावल उद्देश्य नइखे। कहानियन का, रचना विधान, विषय वस्तु आ बिनावट के बात कइल जरूरी होई।

ई सूची अउर लमहर हो सकत बा। भोजपुरी में कहानी लिखहूँ वाला सैकड़न लोग बा। 'जेहल का सनिद' से चलल भोजपुरी कहानी, अपना सँगवर्ती हिंदी कहानी के समकालीन खासियत के कामे भर अपनवलस, ओकरा प्रदर्शन–पचड़ा आ आन्दोलन पर कान ना देहलसि। आधुनिकता, समकालीनता आ नग्न जथारथ के विद्रूप के ऊ चेहरा एकरा में ना रहे, जवना में उद्देश्यहीन अनास्था, कुण्ठा, थोपल–विचारवाद, संत्रास, खुला उत्तेजक सेक्स आ वैयक्तिक स्वच्छन्दता आदि होला। भोजपुरी कहानी अपना संवेदनात्मक ज्ञान आ अनुभव का आधार पर; अपना आंचलिक रंग, लोकज तेवर आ भोजपुरिया मिजाज का साथ आगा बढ़ल। अइसन ना कि ओम्में कूल्हि चिक्कन आ सुघरे रहे। एकरा में आदर्शवादी, नैतिकता, उप देशात्मकता, सपाटबयानी, स्थूल वर्णनात्मकता, आदर्शवादी मनोदशा वाली धारा अलगा रहे। लोककथा, बोधकथा आदि के प्रभावो वाली कहानी लिखइली सन, बाकिर एकरे सँगे एगो अइसनो कथाधारा विकसित होत रहे, जवना में आधुनिक दीठि, नया शिल्प रचाव, नया कथन भंगिमा, समसामयिक बोध आ मनुष्य के बाहरी पक्ष का साथ, भीतरी संघर्षों के चित्रित करे के जबर्दस्त कोशिश रहे। ईश्वर चन्द्र सिन्हा के 'गहरेबाजी' में, जवन कहानीपन बा, 'दसखत' आ 'राधा गावत हौ' में जवन अन्तर्द्वन्द्व आ मानसिकता के चित्रण बा, जवन संपृक्ति, छटपटाहट, वेदना–संवेदना क बिनावट बा; ओम्मे हिंदी के नई कहानी आ अकहानी का अलावा कहानी के अउर अउर खासियत एक्के साथ देखल जा सकता बा। सिन्हा जी के 1965 में छपल 'भैरवी क साज' जइसन भोजपुरी के श्रेष्ठ कहानी भोजपुरी कहानी के जतरा के बहुत पोढ़ जमीन दिहलस। साठोत्तरी हिंदी कहानी में अकहानी, सचेतन कहानी आ समकालीन कहानी के नया आंदोलन चलल, बाकि भोजपुरी कथाकारन में लोक संवेदन तनी बेसी रहे, ओकरा सोझा सुराज, लोकतंत्र, मोहभंग आ आम जनजीवन के चिन्ता–फिकिर, दुख–दर्द का साथ आधुनिकता का पइसार में तेजी से बदलत मानव मूल्य आ मानवी–संबंध रहे। आपन कहानी कहे खातिर कथाकार, कहानी के पच्छिमी पंचतत्त्वी ढाँचा के आग्रह ना कइलन स; संवेदना ओकरा खातिर अधिका महत्व के रहे। भोजपुरी के आपन परिवेश आ जीवन शैली कवनो ना कवनो रूप में भोजपुरी कहानियन में ब्यापल रहे। कहानी के ई सुतंत्र बिनावट, अपना सुभावे नियर, अपना ढंग से, कवनो 'कथ' भा 'संवेदना' भा बिचार आ व्यवहार के कहानी में उतरलसि। कहानी–तत्त्व के ढाँचा खतम त ना भइल, बाकि भोजपुरी कहानी, ओके ढेर तवज्जो ना दिहलस। शिल्प संवेदना का लिहाज से बढ़िया कहानी लिखात रहली स। अवधबिहारी सुमन 'जेहल के सनद' आ 'परमपद', आचार्य शिवपूजन सहाय (कुन्दन सिंह केसरबाई), पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय (हरताल), ईश्वरचंद सिनहा (भैरवी के साज), रामेश्वर सिंह कश्यप (मछरी), रामनाथ पांडेय (सतवन्ती) आदि के कहानी एकर प्रत्यक्ष प्रमाण बाड़ी स।

1975 का बाद भोजपुरी कहानी के जवन तेज उठान भइल ओमे प्रेमचन्द, प्रसाद का कथाशैली का साथ, नई कहानियो के भाव–भंगिमा आ रूप–रंग एक्के

साथ प्रगट हो गइल। पचासन गो कहानी संग्रह छपलन स। एमे मुक्तेश्वर नाथ तिवारी 'बेसुध' आ बिजय बलियाटिक के हास्य–व्यंग्यपरक कहानियन के सवाद अलगे रहे।

रामवृक्ष राय 'विधुर', रामनाथ पाण्डेय, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, प्राध्यापक 'अचल', कृष्णानन्द कृष्ण, ब्रजकिशोर, गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश', रूपश्री, तैय्यब हुसेन पीड़ित, पी0 चन्द्र विनोद, अक्षयबर दीक्षित, विवेकी राय, उमाकान्त वर्मा, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, स्वर्णकिरण, नरेन्द्र शास्त्री, कन्हैया प्रसाद सिंह, अशोक द्विवेदी, शुकदेव सिंह स्नेही, कन्हैया सिंह सदय, पान्डेय सुरेन्द्र, मधुकर सिंह, रामलखन विद्यार्थी, रामजी पाण्डेय अकेला, बरमेश्वर सिंह, ब्रजकिशोर दूबे, राजगुप्त, कृष्ण कुमार, सुरेश कांटक, प्रकाश उदय, रमाशंकर श्रीवास्तव, सुमनकुमार सिंह, कन्हैया पाण्डेय, विष्णुदेव तिवारी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, जगन्नाथ, लव शर्मा प्रशांत, अरुण मोहन भारवि, जितेन्द्र कुमार आदि कतने कहानीकारन के कुछ कहानी, समान्तर भाषा–साहित्य से होड़ लेत लउके लगली सन।

अभी 2008 से 2013 के बीच में कुछ स्वतंत्र कहानी संग्रह सूची में अउर जुड़ले हा सऽ, जवना में जयबहादुर सिंह 'जय' के 'ब्रह्मचारी के बेटा', जगन्नाथ के 'बांचल–खुचल', भगवती प्रसाद द्विवेदी के 'ठेंगा', रमाशंकर श्रीवास्तव के 'चउका बइठल महादेव', बरमेश्वर सिंह के 'कथावृक्ष' आ 'अमरकथा', कृष्ण कुमार के 'बरमुदा तिकोन', लव शर्मा के 'मोह', ब्रजकिशोर के 'एकटुकी अन्हरिया', कन्हैया सिंह सदय के 'डेगे डेगे अँजोर', 'गिरिजेश' जी के 'तनी बोलऽ हो मैना', ब्रजमोहन राय देहाती के 'ओरहन', जितेन्द्र कुमार के 'गुलाब के कांट', अरूण मोहन भारवि के 'मुट्ठी भर भोर' आदि। कहे क मतलब ई बा कि भोजपुरी कथा–साहित्य में कहानी अपना अबाध क्रम से अपना समय, अपना जनपद का साथ, राष्ट्रीय फलक के समेटत आंचलिक मनुष्य आ ओकरा परिवेश के अन्तर्वाह्य का नीमन–बाउर, संगत–असंगत, आ 'साँच' के उरेहे आ व्यक्त करे में लागल बिया। एकरा साहित्य पर विश्वविद्यालयन में शोध हो रहल बा। एकरा रूप शिल्प आ वस्तु–विन्यास पर विचार हो रहल बा।

साँच कहीं त भोजपुरी कहानी के वैशिष्ट्य ओकरा निजता आ मौलिकते में बा। 'फार्मूला' टाइप आ कवनो बन्हल–बन्हावल ढाँचा–खाँचा आ सिद्धान्त पर लिखल जाए वाली कहानी में अच्छा भाषिक रचाव रहलो पर, ऊ स्वाभाविकता ना आई, जवन पाठक के मरम छूवे। कल्पना में जथारथ गढ़े खातिर सुनल–सुनावल रूप का बजाय, जानल–बूझल आ अजमावल रूप के सिरजन से परिवेश आ पात्रन के चरित्र चित्रण आ बात–व्यवहार में सुभाविक जीवंतता आवेला। समकालीन परिथितियन आ परिवेश में, आदमी आ ओकरा समाज के बदलत हाल–खयाल के असर रेखांकित करत खा, भोजपुरी कथाकार के भाषिक निजता अपना गुन–धर्म का साथे परिलक्षित होखे, एकर जतन भोजपुरी के कुछ कथाकार अबहिंयो कर रहल बाड़न। ओह लोगन के सजगता 'क्वान्टिटी' के बजाय 'क्वालिटी' पर बा। समकालीन सार्थक कथा रचना खातिर ई शुभलच्छन बा।

हिंदी कथा के लमहर विकसित परम्परा में जब 'रेणु' आ नागार्जुन के उपन्यास 'मैला आँचल' आ 'बलचनमा' छप चुकल रहे आ उपन्यास–विधा एगो नया रूप–रंग में झलके लागल रहे, तबो प्रेमचन्द–परम्परा बनल रहे। एही दौर में भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिन्दिया' (1956) आइल, जवना में एगो गँवई–किसान के बेटी बिन्दिया के प्रेमकथा के, (विसंगति–विरोध आ दबंगई के खिलाफ हिम्मत आ संकल्प का साथ संघर्ष कइला आ परिस्थितियन पर जीत हासिल कइला के) प्रतिपाद्य बनावल गइल बा। वस्तु आ रूप में बिनावट आ कथा के निर्वाह एह उपन्यास में देखे लायक बा। बिन्दिया के चरित्र

एम्मे किसानी जीवट आ हार ना माने वाली गँवई नारी–चरित्र का रूप में उभरल बा। प्रेमचन्दी–परम्परा के आदर्श इहाँ लउकतो बा, त ऊ बिन्दिया के, अपना प्रेमी मँगरू से बियाह कइ लिहला का बाद जथारथ का सुखान्त पर खतम हो जाता। बुनियाद जब मजबूत रहेले त मकानो पोढ़ बनेला। भोजपुरी उपन्यास के मजबूत बुनियाद पर आगा अउर उपन्यास अइलन स। अपना लोकज छवि आ संस्कार–सुभाव का मोताबिक उनहनों में आदर्श आ जथारथ के द्वन्द्व लउकल।

वस्तु आ रूप दूनू के अलगिया के ना देखे के चाहीं। जथारथ आ आदर्श त कथाकार का कथा–निर्वाह आ 'ट्रीटमेन्ट' में होला। कथा में छिछिल सपाटबयानी आ सरलीकरण ना होखे के चाहीं। बाद में आवे वाला उपन्यास के क्रम में आदर्शवादिता ओइसहीं बनल रहे। 'थरुहट के बउवा आ बहुरिया,' (रामप्रसाद राय, 1962), 'जीयन साह' (रामनगीना 'विकल', 1964), 'सेमर के फूल' (बच्चन पाठक 'सलिल', 1966), 'रहनिदार बेटी' (जगदीश ओझा 'सुन्दर', 1966), 'एगो सुबह एगो साँझि' (विजेन्द्र अनिल, 1967), 'डहकत पुरवइया' (अरूण मोहन 'भारवि', 1973), 'गाँव के माटी' (बालेश्वर राम यादव, 1973), 'ऊसर के फूल' (नरेन्द्र शास्त्री, 1975), 'फुलसुँघी' (पाण्डेय कपिल, 1977), 'परशुराम' (अरुणमोहन भारवि, 1977), 'सुन्नर काका' (प्राध्यापक अचल, 1978), 'भोर मुसुकाइल' (विक्रमा प्रसाद, 1979), अमंगलहारी (विवेकी राय), 'धूमिल चुनरी' (आचार्य गणेशदत्त किरण, 1980), 'जिनिगी के राह' (रामनाथ पाण्डेय, 1982), 'रावन उवाच' (गणेश दत्त किरण), 'खैरात' (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), 'करेज। के कांट' (अरुण मोहन भारवि, 1985), 'अछूत' (सूर्यदेव पाठक पराग, 1986), 'राख, भउर, आग' (अरुण मोहन भारवि, 1986), 'सती के सराप' (आचार्य गणेशदत्त किरण), 'तोहरे खातिर' (गणेशदत्त किरण), 'महेन्दर मिसिर', 'आधे आध' (रामनाथ पांडेय), 'मुण्डदान' (कमला प्रसाद 'विप्र', 1988), 'का लिखीं' (डॉ0 उमाशंकर, 1990), 'कचोट'(धर्मनाथ तिवारी, 1992)।

लघु उपन्यासो खूब अइलन स। जइसे भगवती प्रसाद द्विवेदी के 'दरद के डहर' आ 'साँच के आँच', अशोक द्विवेदी के 'आवऽ लवट चलीं, 2000'। कुछ उपन्यास पत्रिकन में धारावाहिको छपलन सऽ। जवना में मधुकर सिंह के 'ग्राम सेविका' आ 'रेवती', ऋषीश्वर के 'सुलहा' आदि चर्चित भइल।

डॉ0 रामदेव शुक्ल के 'ग्राम देवता' जब भोजपुरी में छपल, त कथा–विन्यास के लेके एगो नया उमेद जागल। अउर भोजपुरी उपन्यासन में 'बालम परदेशी' आ 'बँटवारा' (रमेशचन्द्र, 2008), 'बेचारा सम्राट' (अनिल ओझा नीरद, 2009), 'दाल भात तरकारी' (डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव, 2009) आइल। नीरद जी के नया उपन्यास 'आचार्य जीवक' भोजपुरी माटी में धारावाहिक छप रहल बा। एकरा पहिले शफियाबादी जी के 'पूरबी के धाह' छपत रहल। रमाशंकर श्रीवास्तव के 'बोतलदास के बयान' आ गइल बा। एम्मे शराब के लत में उजड़ल दुनिया बा। तालस्ताय के एगो कहानी रहे 'छोटा शैतान और किसान की रोटी' त ऊ शैतान ई शराबे रहे, जवना पर कतने हिंदी–भोजपुरी फिल्मों बनल बाड़ी स। महत्व 'विषय' के नइखे, ओकरा मूलभूत कारकन के ओकरा जटिलता में, नया कोन, नया दीठि से देखला–देखवला के बा। एहू उपन्यास के आपन खासियत बा।

सार्वकालिकता आ सुभाविक सिरजनशीलता, जेके मौलिकता कहल जाला, का साथे रचनाकार के निर्वैयक्तिक तटस्थ भाव, साँच के खोज में सहायक होला आ एही साँच के अभिव्यक्ति समकालीनता खातिर जरूरी होला। संवेदना आ बोध का स्तर पर ग्रहण कइल गइल अनुभूतियन के, कथाकार अपना कहानी में उतारेला, तवनो घरी सुभाविक सिरजनशीलता आ निर्वैयक्तिता कामे आवेले। रामनाथ पाण्डेय कुशल कथाकार रहलन, बिंदिया का बाद

उनकर उपन्यास 'जिनिगी के राह', 'इमिरितिया काकी', 'महेन्दर मिसिर' आ 'आधे आध' प्रकाशित भइल, उनका सिरजनशीलता में पइसल आदर्श, उनका जथारथ वाला कथा–संसारो में झलकत रहल। युग के अनुसार भावभूमि आ विचार व्यक्त भइलन स; बाकि कथाकार ओमे झलकत रहे। चरित्र–सिरजन में ऊ सिद्ध रहलन। 'दुरपतिया', 'इमरितिया' आ 'महेन्दर मिसिर' उनकर अइसने बोलत पात्र बाड़े स। एही तरे वस्तु–विन्यास आ कथाशिल्प का लेहाज से एगो श्रेष्ठ उपन्यास 'फुलसुँघी' आइल। काल विशेष में 'ढेला बाई', हलिवन्त सहाय आ महेन्दर मिसिर के बीच भौतिक प्रेम आ संघर्ष के लेके लिखल एह उपन्यास में प्रेम–भोग आ संघर्ष के गझिन चित्रण बा। आदर्श प्रेम के द्वन्द्व आ प्रेम के 'दर्शन' के चित्रित करत कथाकार तत्कालीन समय आ मानसिकता के सजीव उतार देता। भाषा का दिसाईं, महेन्दर मिसिर के गीतन का भावभूमि पर लिखाइल 'फुलसुँघी' कथा संरचना का दिसाईं एगो अलगे छाप छोड़त बा। नरेन्द्र शास्त्री आ विक्रमा प्रसाद जथारथ के अपना तौर–तरीका से चित्रित कइले बा लोग। बलुक 'ऊसर के फूल' के कथा ज्यादा वास्तविक, संश्लिष्ट आ मर्मस्पर्शी बा। एह उपन्यास के कई गो चरित्र जियतार प्रभाव छोड़त बाड़े स।

'ग्राम देवता' (रामदेव शुक्ल जी) त बाद में आइल ओकरा पहिलहीं, प्राध्यापक अचल के एगो उपन्यास गाँव का पृष्ठभूमि में आइल 'सुन्नर काका'। गाँव के सजीव जथारथ एह में बा, बाकि पारंपरिक भोजपुरिया संस्कार आ आदर्श का छौंक का साथ। एह उपन्यास के खास विशेषता ई बा कि एकर कहानी एकदम सोझ–सपाट बा आ विवेकी राय जी का अनुसार, 'अनुरंजन' एकर वैशिष्ट्य बा। भोजपुरी जनपद के खांटी भाषा–मुहावरा, लोकगाथा, कहतूत आ दृष्टान्त का जरिये कथाकार कहानी में दिलचस्पी पैदा करत, रेखाचित्रात्मक ढंग से 'सुन्नर काका' के जुझारू चरित्र का जरिये ये गाँव के गरीबी आ विधिन–बाधा हटाइ के सुख–शान्ति ले आवत बा। एकरा ठीक उलट रामदेव शुक्ल जी के 'ग्राम देवता' आधुनिक औपन्यासिक कला से संपन्न बा। एकर कथा ओह उड़सत, ओरात नया गाँव के कथा बा, जवना में मिल्लत, भाईचारा, सहभागिता आ एकजुटता बिला रहल बा। ईहवाँ सब अपना धूर्त्तई, चल्हाँकी, इरिखा आ गोलबन्दी में एक दोसरा के दरकच के निकल जाये का फिराक में बा। कथा के गझिन बिनावट में उपकथा बीनल बाड़ी स। कथाकार गाँव के अन्दरूनी तह दर तह उटकेर–उलाट के, गाँव जवार में होखे वाली बतकुच्चन, गप्प आ कहावतन से गाँव के असली सूरत देखावे के कोसिस करत बा। ओह गाँव में समाजिक बंधन आ मरजादा के छरदेवाल भहरा गइल बाड़ी स, आ छोट छोट विकृति उघार होत बाड़ी स। दाबल–तोपल 'सेक्स' आ 'व्यभिचार' के वर्णन सवदगर बा। तमाम लंपट, कामी, पियक्कड़, चरित्रहीन, निठल्ला आ बकवादी लोगन में, नाँवें मात्र के आदमी लउकत बाड़न। एकर सबसे दयनीय जाति बा 'ब्राह्मण'। कथाकार एह ब्राह्मण–व्यक्तित्व के हीक भर चीर–फाड़ कइले बा। विशिष्ट पात्र 'हरखू' (हरखनारायन मौर्य, एडवोकेट) बभन–मंडली के डोमकच के भरपूर मजा लेत लउकत बा। एही पात्र का जरिये कथाकार गाँव, कस्बा, घटना–घोटाला, नाजायज कब्जा, राजनीति, गोलबन्दी कूल्हि के पड़ताल करत बा। इहाँ बाहुबल के सोरि फेंकले माफिया बा, त दलित उत्थान, नारी–संरक्षण, समाज–सेवा आ तथाकथित बिकासो बा। रिदिरी–छिदिरी होत परिवार, समाज आ खंड–खंड पाखंड ओढ़ले समाजसेवी, नेता, अफसर, सचिव आदि कूल्हि अपना ताव–तेवर आ कमजोरी का साथ बाड़न स। परिवेश–चित्रण, माहौल आ घटना के वर्णन आ चित्र जियतार बा। एह सबका बिच्चे एगो केन्द्रीय पात्र 'सोनमती' भउजी बाड़ी उनकर यौवन बा, बाहरी–भीतरी रूप बा,

द्वन्द्व–अन्तर्द्वन्द्व बा। कथा का अन्त ऊ में अपना 'विदेह' पति बुद्धन का मृत्यु पर सेमर वाला खेत में उनके सुता के अपनहूँ भुइंसेज ले लेत बाड़ी।

ऐतिहासिक, पौराणिक विषय पर अरूण मोहन भारवि के छोट उपन्यास 'परशुराम' का बाद आचार्य गणेशदत्त किरण के उपन्यास बाड़ें स। उनकर लिखल 'रावण उवाच', आचार्य चतुरसेन के इयाद दियावत बा त 'धूमिल चुनरी' आ 'सती के सराप' मध्यकालीन इतिहास के कुछ विशिष्ट पात्रन के लेके मजिगर ढंग से लिखाइल उपन्यास बाड़े स। 'तोहरे खातिर' 'प्रेम' के दर्शन पर लिखल बेजोड़ ऐतिहासिक उपन्यास बा। एम्मे काँची विद्यापीठ के स्नातक मयूर शर्मन आ पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन के मुख्य शासन–अधिकारी विषयिक के बेटी चालब्बे के अद्‌भुत–प्रेम–कथा का इर्द–गिर्द सामान्य जन आ सत्तानशीन के सत्ता–संघर्ष चलत बा। पल्लव वंश के शासन काल के ऐतिहासिक चित्र खींचत ई उपन्यास अपना 'संगति' आ 'ट्रीटमेन्ट' में सफल बा।

भोजपुरी उपन्यास रचना का दिसाईं बाद में आवे वाला उपन्यासन में रमाशंकर श्रीवास्तव, अनिल ओझा 'नीरद' आ जौहर शाफियाबादी के उपन्यास ई सिद्ध करत बाड़े स, कि भोजपुरी उपन्यास यात्रा जारी रखले बा। रामदेव शुक्ल के उपन्यास 'ग्राम देवता' नियर संश्लिष्ट कथा–भूमि आ जथारथ के सजीव खाड़ करे वाला एहू ले बड़ फलक पर, जीवन–जगत के मूल्यवान छवि उतारे वाला उपन्यास आइल बाकी बा।

भोजपुरी लघुकथा साहित्य, अंग्रेजी, हिंदी भा दोसर भाषा लेखा प्रासंगिक आ जियतार बा। जिनिगी के छोट से छोट अंश के संवेदना, सत्य, अनुभूति आ ओकरा व्यंग्यात्मक असंगति–संगति के संकेत से उभारे, दरसावे वाली लघुकथा समकालीन बाड़ी स। कुछ कथाकार त लघुकथा में सिद्धहस्त बा लोग। ओह लोग का पास समकालीन भाव–बोध आ समझ बा। ओह लोग के लघु कथा सोद्देश्य, व्यंग्यात्मक, नाटकीय, चित्रात्मक आ मरम छूवे क सामरथ राखत बाड़ी सऽ। अइसन कथाकारन में फालतू वर्णनात्मकता नइखे, बलुक ई लोग लघुकथा के शिल्प आ सलीका के समझ से संपन्न बा। दरअसल लघुकथा एकांगी ना होके 'सोगहगे' होले। 'छोटी मुकी गाजी मियाँ' (1964) से चरचा में आइल, 'अगुवा' आ 'तिरमिरी', 'टुकी टुकी जिनिगी' जइसन संपादित संग्रहन से फइलत, अब व्यक्तिगत स्वतंत्र संग्रह का रूपो में भोजपुरी लघु कथा–साहित्य प्रसिद्धि पा रहल बा।

भोजपुरी लघुकथा के विकास आ लोकप्रियता में सबसे बड़ जोगदान पत्र–पत्रिकन के बा। 'भोजपुरी माटी', भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी कथा–कहानी, 'पाती', 'चाक', जोखिम, 'बिगुल', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आदि पत्रिका लघुकथा–साहित्य के बढ़ावा देबे में अगुवा बाड़ी सन। सत्यदेव ओझा, रामवृक्ष राय विधुर, बालेश्वर राम यादव, विवेकी राय, रसिक बिहारी ओझा, पाण्डेय सुरेन्द्र, रामनाथ पाण्डेय, कृष्णानंद कृष्ण, अशोक द्विवेदी, ब्रजकिशोर, अतुल मोहन प्रसाद, भगवती प्रसाद द्विवेदी, जयबहादुर सिंह, मनोकामना अजय, गंगाप्रसाद अरुण, ब्रजमोहन राय देहाती, अनन्त प्रसाद रामभरोसे, विनोद द्विवेदी, राजगुप्त, अजय कुमार ओझा, राजेन्द्र भारती, ऋचा, शिवपूजन लाल विद्यार्थी आदि कतने लघुकथाकार बाड़े। रामनारायण उपाध्याय (जमीन जोहत गोड़), शिवपूजन लाल विद्यार्थी (कतरा–कतरा समुन्दर), जयबहादुर सिंह (सपना के साँच), अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' (रंग बदलत गिरगिट) अपना लघुकथा संग्रह से समकालीन भावबोध के परछाहीं झलका रहल बा। विनोद द्विवेदी, अतुल मोहन प्रसाद आदि लेखक अपना 'आइरानिकल' कथ–संप्रेषण, नाटकीय विन्यास, आ क्षिप्र संवाद योजना से बिनल लघु कथा से भोजपुरी साहित्य के प्रभाव आ लोकप्रियता में बढ़ोत्तरी कर रहल बा लोग। भोजपुरी लोक त कथा–कहानी के सागर बा। वर्तमान संदर्भ में, समकालीन भाव बोध के कथा, जनजीवन के गहिर साक्षात्कार से अपना–आपे फूटत मिली, कथा गढ़े के संवेदना, दृष्टि आ कौशल चाहीं। ●●●

नाटक आ एकांकी

लोकभाषा भोजपुरी में गीत–संगीत आ नाच का बाद सबले लोकप्रिय आ दमगर बिधा नाटक रहल बा। अनुरंजन का साथ समाज पर सर्वाधिक असर डाले में नाटक आ प्रहसन सशक्त माध्यम बनल। भोजपुरी लोक में पँवरियन के पँवारा आ जातीय नाच (धोबी, गोड़ आ दुसाध जातियन के प्रचलित नाच) आ औरतन में जलुवां, 'डमकच' पहिलहीं से प्रसिद्ध रहे। भिखारी ठाकुर एही नृत्य–नाट्य रूप के माँजि के अउर लोकप्रिय कइलन। ऊ सहज, सुभाविक अभिनय आ कला से एके सँवार के, गँवई–समाज में फइलल कुरीतियन आ विषमता के उजागर कइलन। नारी के अकेलापन, कमजोरी, आ यौन–भटकाव के देखवला का साथ, मानव–समाज के स्वारथ लिप्सा, छल आ परपंचो के रेघरियवलन। नाजायज संबन्ध से जनमल औलाद 'गबरघिचोर' का जरिये सामाजिक समस्या से रूबरू कइलन। 'विदेसिया' शैली में उनकर युगबोध भोजपुरिहा–लोकजीवन के सामाजिक समस्यन का साथे प्रकट भइल।

1942 के आसपास अपना समय सन्दर्भ में उजागर करे वाला 'सुदेसिया' (स्वदेशी) नाटक, छांगुर त्रिपाठी लिखबो कइलन त अंग्रेज–हुकूमत ओके जब्त क लिहलस। एही समय राहुल सांस्कृत्यायन के नाटक किताब महल, इलाहाबाद से छपल–'नइकी दुनिया' 'जोंक' आ 'ई हमार लड़ाई हऽ'। एही साल उनकर कुछ अउर नाट्क (एकांकी) 'मेहरारुन के दुरदसा' 'जपनिया राछछ' 'जरमनवा के हार निहचय' 'देसरच्छक' आ 'ढुनमुन नेता' 'नइकी दुनिया प्रकाशन', छपरा से प्रकाशित भइलन स। एह कूल्हि नाटकन में राहुल जी के साम्यवादी सोच विचार, आ चिन्तन के स्पष्ट दबाव आ प्रभाव झलकत रहे। राजा, जमीनदार, सेठ–साहूकार, मिल मालिकन आ दुकानदारन के शोषण, छल, जोर–जुल्म आ अनेति के विरोध त एह नाटकन में रहबे कइल राष्ट्रीय आ वैश्विक परिवेश क परिवर्तन, युद्ध क स्थितियो उभारल गइल रहे। समाज में फइलल, अंध विश्वास धर्मान्धता, आ पाखण्ड आदि कुरीतियन पर खुला चोट आ उपहास भावो परिलक्षित होत रहे। औरतन के दुर्दशा, आ समाज में ओके बरोबरी क अधिकार आ जिमवारी उठवला के वकालतो रहे। विश्वजुद्ध का सन्दर्भ में उपनिवेशवादी जर्मनी, जापान के भर्त्सना का साथ हर दकियानूसी सोच, शोषन आ छल के मुखर विरोध करे के राहुल जी के आपन नाट्कीय शैली के खासियत रहे। समकालीन भोजपुरी साहित्य में, राहुल जी नाटक का जरिये एगो वैचारिक हस्तक्षेप करत लउकत बाड़न। ई कतना सार्थक आ सोद्देश्य रहे एकर पड़ताल आसानी से कइल जा सकत बा।

1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के नायक कुँवर सिंह के नाटक के चरित्र बना के लिखल दुर्गा प्रसाद सिंह 'नाथ' के नाटक 1962 में भले आइल बाकिर 'नाटक' के समस्या प्रधान बनवला के कोसिस 'नाथ' जी के दूसरका नाटक 'न्याय के न्याय' में लउकल। एमे जुग के बदलाव का साथ समाज के कुछ अनसुलझल सवाल खड़ो कइल गइल रहे। सामाजिक दशा के अपना आँचलिक ताव–तेवर का साथ शिवमूरत सिंह के 'नयकी पीढ़ी' आ माहात्म्य सिंह के ' निरमोहिया' (1962) नया आ पुरान पीढ़ी के द्वन्द्व उभारे के उतजोग करत लउकल। समकालीन सोच विचार में आधुनिकता के पइसार से आइल बदलाव भोजपुरी नाटकन में कमोबेस झलकल सुभाविक रहे। गँवई लोकजीवन के छवि उभारे में, भोजपुरी नाटककार के दिलचस्पी जादा भइला का बावजूद ई सब नाटक मंचित ना भइला का कारन साहित्यिके रहि गइलन स। श्रीनिवास मिश्र के पाँच छव गो नाटक अइलन स, ओसे भोजपुरी नाटक साहित्य क बढ़ोतरी जरूर भइल, बाकि मंचन ना भइला का कारन उनंहन का सार्थकता आ प्रासंगिकता के ऊ आकलन ना हो पावल, जवन होखे चाहत रहे। 'माई के लाल' तीन भाई (1968) गवना के रात (1970), अरघ के बेरा (1974), हीरा रतन (1974),

'भोजपुरिया जवान (1980) आदि में श्री निवास जी, गँवई जीवन के अच्छा–बुरा आ विसंगतियन के परोसला का साथ ओकरा आस्थापरक पक्ष आ राष्ट्रीय भावना के अभिव्यक्ति देबे के भरपूर कोसिस कइले बाड़न। एह सब में गँवई जीवन के दुख–दरद आ समस्यो बा।

भोजपुरी समाज में, साहित्यिक रचाव वाला एह नाटकन के मंचन से, विधा के लोकप्रिय बनवला के उतजोग ना भइला से, नाटककारन के सिरजनशीलता के नया–नया सर्जक रूप ना विकसित भइल। सतीश्वर सहाय 'सतीश' के 'माटी के दीया, घीव के बाती' (1971) नन्दकिशोर मतवाला के 'बिरहा सतावे दिन रात' (1972) विमलेश के 'आल्हा–ऊदल' जइसन नाटक भोजपुरी लोकरुचि का लिहाज से रचल गइल रहे। मतवाला के दू गो अउर नाटक 'दिनवाँ भइल बदनाम' (1976) आ 'अँगना भइल बिरान' (1977) रोमांटिक विषय वस्तु वाला रहे, तबो भोजपुरी नाटक मंचन का अभाव में अपना समय सन्दर्भ में, अपना जोरदार उपस्थिति आ सिरजनशीलता के आभास ना करा पवलस। गरीब आ धनी वर्ग के विषम संबन्ध के रेखांकित करत परमात्मा पाण्डेय के 'अत्याचार' आ महेन्द्र गोस्वामी के 'लुकवारी' (1980) से भोजपुरी नाटक के विषय–वस्तु बदलल। लुकवारी के नायक समाजिक चेतना से भरल–पुरल रहे। ऊ लूट, छल प्रपंच अन्याय के विरोध में खड़ा भइल त कइसे ओके राजनीतिक कुचक्र क शिकार बनावल गइल ईहो साँच देखवला का कारन, नाटक समकालीन जथारथ के उभारे में सफल बुझाइल।

सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'जंजीर' सुरेश काँटक के 'रहमान चाचा' समकालीनता के अपना अंदाज में अभिव्यक्ति देत बुझाइल। काँटक के दोसर नाटक 'हाथी के दाँत' आ वन्दे 'मातरम्' मे एगो वैचारिक दखल करत जथारथ लउकत। ई जथारथ नाटककार के आपन गढ़ल जथारथ रहला का कारन, जथारथ के आभासे भर करावत रहे। सुरेश काँटक के नाट्यकला, साहित्यिक रचाव में, 'पक्ष धरता' के पक्षधर बा। फत्तेशाही पर लिखल गइल उनकर नाटक 'पहिला नायक' एगो समय के जीयत जागत तस्वीर खड़ा करे वाला प्रभावी नाटक बन सकल बा।

समकालीनता के अपना अपना सोच समझ का मुताबिक उपयोग करे क कोसिस में, कहीं कहीं नाटककार के कृति एगो खास वैचारिक 'फ्रेम' में, कल्पित जथारथ चित्रित करत लउकत बाड़ी सन। तटस्थता, निरपेक्षता भा 'इम्पार्शियिलिटी' नाटककार का कृति के श्रेष्ठ बनावेला। भोजपुरी नाट्यविधा कहानिये लेखा यदि अपना सुभाविक ढंग ढर्रा में विकसित, त मौलिक लागित। उधार के विचार, सोच आ बेमतलब प्रयोग 'रचना' के सुभाव बदल देला। एही तरे जबरजस्ती विचार थोपला से नाटक भा कहानी बोझिल आ बनावटी के आभास करावे लागेले।

●●●

गज़ल

❑ **शिवजी पाण्डेय 'रसराज'**

दउरत–उदरत कहवाँ गिरबऽ, अनुमान न बा तहरा अबहीं।
नीमन का बा आ बाउर का, पहिचान न बा तहरा अबहीं।।

एह अकास में उड़ला खातिर, मत छरिया जल्दी–जल्दी,
भरे के जिनिगी भर बाटे, कतने उड़ान तहरा अबहीं।।

दुनिया के समझे–बूझे में, तहरा के कतने मोड़ मिली,
केने जइबऽ ऊँचा–खाला के, ज्ञान न बा तहरा अबहीं।।

तनिकी भर सुख–सुबिधा खातिर, तूँ बेमतलब धउरत बाड़ऽ,
जिनिगी में घरियो भर के ना बाटे ठेकान तहरा अबहीं।।

जिनिगी के थाहल मुश्किल बा, लहरन के काटल बा मुश्किल,
गहराई एकर केतना बा, ई भान न बा तहरा अबहीं।।

●●●

कहानी

ब्रम्हलूक

❑ **कृष्ण कुमार**

कहाब हऽ –

''ब्राह्मण बैठि पताल चले,
अरू ब्राह्मण साठि हजार को जारे ।
ब्राह्मण सोख समुद्र लिए ,
अरू ब्राह्मण ही क्षत्री दल मारे।
ब्राह्मण लात हने हरि के उर,
ब्राह्मण ही जदुवंश उजारे।
ब्राह्मण से मति बैर करो,
ब्राह्मण से परमेश्वर हारे।''
'' विप्र टहलुआ, चीक धन औ बेटी के बाढ़।
ओहू से धन ना घटे, तऽ करे बड़न से राड़।''
'' बाभन के ना मारे के चाही,
ना तऽ आदिमी ब्रह्मदोखी होला........।''
'' बाह भाई, खूब कहलऽ।
घर में ढुकसु तबो ना ?''
बरिआर बुरबक बाड़ऽ!

ओही समय खातिर नु ई बात कहऽतानी, अवरू का राह चलत बाभन के थपरिआवे लगबऽ? धनि बाड़ऽ..... ।''

हं, त चुटकन आ मनधन जिगरी संघतिया रहे लोग । देंहि दू गो बाकिर मन मिजाज एके। बाकिर दूनों नमरी खुरफाती । दूनों जाना के समझ बूझ–बीस– ओनइस। केहू से तनिको बात के फरक परला प चुटकन चटकन चला देत रहन। एही से लोग उनकर नाम लछुमन छोड़ि चुटकन राखि देलस। मनधन उनको से बावन बीर। हथियार चलावे में माहिर। तनिको 'कनसेसन' ना, संउसे महल्ला एह दूनों आदिमी से उबिया गइल रहे । डरे केहू ओह लोग से बोले ना । समय करवट मरलसि। दूनो जाना के पारा –पारी बिआह भइल। पैकड़ परते दूनो आदिमी कुछ थिरइलें। चुटकन कमाये खातिर दिल्ली निकलले त मनधन गाड़ी चलावे सीखि गइलें। जइसे कतनो फोरन डालीं खेसारी आपन छाव ना छोड़े । तनिकी महक रहिए जाला। ओसहीं तुम्बाफेरी करे से दूनों संघतिया बाज ना अइलें।

त आईं, पहिले चुटकन के जानि लीं जा। चुटकन दिल्ली गइलें। हीत – नाता के पैरवी आ अपना देहिं– धाजा के बूते एगो कम्पनी में ' नाइट–गार्ड' बनि गइलें। नया रहन। एह से गार्ड के पोशाक तऽ भेंटाइल, बाकिर पहरा देबे खातिर कवनो हथियार ना। बस बेंत के एगो सोटा। ओही कम्पनी में एगो नेपाली गार्ड रहे । चुटकन से पहिले ओकर बहाली रहे । कम्पनी के मालिक के पूरा विश्वासी। 'नेपाली खुकरी' कमर में खोसले ऊ आपन डिउटी बजावत रहे। ओकरा खुकरी पऽ चुटकन के डीठि गड़ि गइल। एक से एक हथियार दांव, फंसली, भुजाली, गुप्ती देखले रहन, बाकिर नेपाली खुकरी देखते उनकर मन पनिया गइल। ऊ सुनले रहन, बाकिर कबो देखले ना रहन। ओह चमचमात खुकरी के देखते पतौखिया गइलें, ''ई तऽ हथियार हमरा जोग बा । रेती वाला लोहा के बनल हथियार । एक बेर में काम तमाम। दोहरिआवे के ना परी। जइसे बाबा भारती के घोड़ा 'सुल्तान ' पऽ डाकू खड्ग सिंह के डीठि गड़ल आ धोखा से ओह घोड़ा के ऊ हथियाइये के मानल। कुछ ओइसने कइलें चुटकन। नेपाली खुकरी के उड़ावे के चक्कर में लागि गइलें। ओह नेपाली दरबान से इयारी कइलें। महिनवन बीति गइल, बाकिर दालि ना गलि पावल। नेपाली बड़ा तेज आ बहादुर होलें, बाकिर नमरी पियाक एही से आजु देश भऽ के हर कोना में नेपाली दरबान अधिका बाड़े। जब सभ उपाईं लगा के थाकि गइलें चुटकन, तब दोस्ती में दगा करे के सोचि लेलें । एक राति बेहरी लगा के दारू आइल। ओकरा के खिया पिया के अहथिर कऽ देलें। साथे चारि गो अवरू दरवान रहन सऽ। ऊ कबो ई ना सोचले रहे कि चुटकन हमरा से दागा करिहें। बाकिर चुटकन लात मारिए के मनलें। ओकरा पेट पऽ लात चला देलें। ओह राति पिअला के बाद बेचारा नेपाली अलस्त होके लरूआ गइल रहे। चुटकन दहिने– बांये झांकि–झूंकि के पाकिट से ब्लेड निकलले आ ओकरा बेल्ट में लटकल ओह खुकरी के मियान के चमवटि काटि के हथिया लेलें आ नियरे जलखर में लुकवा के आपना साइड पऽ डिउटी बजावे लगलें। साइड

बांटल रहे कि कवन गार्ड कहंवा डिउटी करी। भोर होते ओह नेपाली दरवान के नशा फाटल। कमर पऽ हाथ ले गइल तऽ चिहाइल,'' आहि दादा! ई का भइल, ढोंढर ठीके बा आ आंखि गायेब।'' बड़ा अफदरा में परि गइल। ओह खुकुरिये के बदौलत ओह बड़कन कम्पनी में ऊ मालिक के विश्वासी दरबान बनल रहे। मचल हल्ला। बाकिर केहू अपना पीठि पऽ हाथ ना धरे दिहल। बड़ा सोचि– विचार के चाल चलल रहन चुटकन । खुकरी के जगहा धरा के अहथिर रहलें। लगलाहे फगुआ रहे। कुछ कमा धमा के खुकरी के साथे घरे लवटलें चुटकन.....।

करम फूटल खुकरी के । लंगोटिया इयार मनधन जब देखलें ,बहुते अगरइलें, बाह रे भाई बाह! ई तऽ कमाल के चीज बाटे तूँ अइसन समान उपरिअवले कि एकर कवनो जबाबे नइखे । तोर दिल्ली गइल सुफल हो गइल। रूपयो कमइले आ सुघर हथियारो लेले अइले। एकरा के जतन से राखु। वक्त पऽ कामे आई.....। केहू के हाथे मति दिहे आ ना बेचिहें। अइसन समान कबो ना मिली ...।''

मनधन के गाँव लेखा पुश्तैनी बड़का मकान आ आंगना। ओह आँगना के एगो किनार पऽ पक्का कुँआ। मनधन शहर में रहि के परावेट डराइबरी करत हरन। जोगाड़ी आ हथलुपुक। दूनों काम में माहिर। दू पइसा हाथे आवत कहीं कि सूद–बेआज पऽ ओकरा के अहथिर क देत रहन। मोहल्ला में केहू के घटले–बढ़ले मदद करसु। बाकिर सुखले आ मुहजबानी केहू के ना। कुछ गहना गुरिया बन्हकी धइला के बादे रोपेया धरावत रहन। सुदियो टैट। दोसर के दस रोपये सैकड़ा तऽ मनधन के रेटे बारह रोपया चलत रहे । बाकिर परिस्थिति के मारल आदिमी जाओ तऽ कहंवा? पेंच परला पऽ बिलाई, मूस के चिरौरी करेली।

अझुरा गइलें मनबोध मिसिर। रहन त सरकारिये मुलाजिम। बाकिर चारि महिना से चवनी ना। घर के खरचा चउरिआ देले रहे। चकरिआए लगलें। एलाटमेंट के बवन्डर में चार महीना के दरमाहा अटकि गइल रहे । जेने ताकसु तेने अन्हारे–अन्हार। दोकानदार समान देल बन्द कऽ देलं। सभकर हाल एके रहे। अन्त में मनधन का लगे पहुचले। घरनी के भारी भरकम सोना के हार बन्हकी राखि के रोपेया उठा लेलें। दरमाहा मिलला पऽ रोपेया लवटाए के बेरा सूद के नाम पर सतरह रोपेया खातिर बात अटकि गइल। एको पइसा छोड़े खातिर तइयार ना भइले मनधन। उनकर हार हथियावे के फेरा में ऊ रहन। बाकिर काम ना बनि पावल। बूझि– पंचाइत करि के मनबोध मिसिर आपन हार लेई के मनलें। पंच लोग के तल्ख नसीहत,मनधन के गोली अस लागल। सोचे लगलें हारो ना मिलल आ भरल पंचाइति में हमार पानी उतरि गइल। एह से बात अतने पऽ ना थमल। हार के मोह मनधन के अपना गिरफ्त में जकड़ि लेले रहे। मनबोध मिसिर अबले अहथिराह हो गइल रहन। ऊ जनलें कि मनबोधवा से फारिग हो गइनीं। बाकिर विधना के कुछ दोसरे मंजूर रहे।

सांझि के बिहानो ना भइल। भोरहीं। जलखई कऽ के मनधन दारू ढरका लिहलें। हार के लालच मन के उदबेगले रहे। अपना के ना थाम्हि पवलें। ततलबजे चुटकन का घरे गइलें। कहलें,'' बधारी ओरे गइल रहनी हा। एगो छोटहन खँसी हाथे लागल बा । धऽ के ले आइल बानी। घर में बन्हले बानी। बड़ा मेमियाता। दिल्ली वाला हऊ खुकरिआ दऽ। बना के ओकर मांस तोहरो किहां पहुँचा जाइबि. ...।''बड़ा खुश भइले चुटकन। अगरइले कहले,'' ''मूडी आ गोड़ी हमरा के दे दिहे। दोसर कुछुओ ना चाही'' आ ऊ खुकरी मनधन के दे दिहलें।

नशा के रंग –रस में डुबल खुकरी लेले घरे अइलें मनधन । पाप उनका पऽ सवार हो गइल रहे। तब मनधन बाभन के सभ कहाउत भुला गइलें। दिमाग के तजबीजे वाला नट ढीला हो गइल। कठकरेजी बनि गइले। गड़हा में कूदे खातिर अपना से तइयार हो गइलें। घुरिया–घुमरिया के मनबोध मिसिर के टोह में लागि गइले। दुपहरिआ के डेढ़ बजल रहे। मनबोध मिसिर ऑफिस से लवटि के लंच करे खातिर घरे आइल रहन। छोट कुरसी के मोलाजिम। मनधन के घर से तनिका हटि के ऊ किराया के एगो छोट खपड़पोस मकान में परिवार के साथे रहत रहन। उनका ऑफिस गइला के बाद मनधन आ मनबोध मिसिर के घरनी में हार खातिर

तोर– मोर अबले सथा गइल रहे। बाकिर सासु के खीस कठवती पऽ वाला बतकही मनधन के दिमाग में नाचत रहे। मनबोध मिसिर जसहीं खा के दुआरी प हाथ धोवत रहलन कि मनधन, मनबोध मिसिर का पेट पर खुकरी चला देलसि। अब का ? तेज हथियार। बाभन बिसुन कुछुओ ना तजबजिलसि। दँवरे पऽ लरूआ गइले मनबोध मिसिर । खाना खा के उठल रहन, एह से दालि–भात आ रकत के पवनार लागि गइल.... ।''

कटाह कुकुर जइसे केहू के काटि के परा जाला ओसहीं पराइल चहलसि मनधनवा। कसबाई शहर के घटना रहे। एह से दूर ना भागि पवलसि। टोला महल्ला तड़िया लिहल बाकिर उहो कच्चा खेलाड़ी ना रहे। गली के मोड़ पऽ आवते डॉक्टर साहेब के पैखाना घर में मिनी केवाड़ी से ढुकि गइल। ओह घरी आजु लेखा 'सैफटी टैंक'' पैखाना ना रहे। कमाये वाला पैखाना रहे। उहो सभ के घरे ना। केहू–केहू किहें। ओकरा में सफाई खातिर घर के बहरीस पिछुती ओरे एगो मिनी केवाड़ी लागल रहत रहे। जेवना से ओकर रोजे–रोजे सफाई होत रहे। मेनगेट आ आँगना से ओकर संबंध ना रहत रहे। ओह पैखाना में ढुकि के असथिराह हो`गइल रहे मनधनवा। अबले थाना पुलिसो पहुंचि आइल रहे। पोस्टमारटम करे खातिर मिसिर जी के लाश अस्पताल पहुंचल। पूरा गली पुलिस से भरि गइल। रातो में उहे हाल। चारों ओरे नाकाबन्दी हो गइल। भागे के जोगाड़ ना लागि पावल मनधनवा के । होत पराते सुनदरी सफाई करे खातिर मिनी केवाड़ी से ढुकलि डाक्टर साहेब के पैखाना में ।जसहिं केवाड़ी खोललसि, भीतरी के दृश्य देख ओकरा ठेकुआ मारि देलसि, '' बाप रे बाप'' कहत पराए के चहलसि। मनधनवा केवाड़ी के सटले सटकल रहे। ओकर गँटई ध लिहलस, 'चुप चुप हल्ला ना, गँव से जो चुटकुन से कहिहे । हम एहिजे बानी। तनि सा आके हमरा से भेट क लेव।

पहिले से दूनों एक दोसरा के पसन से जानत रहन सऽ ओह महल्ला के सफाई के काम सुनरिये के जिम्मे रहे। एह से ऊ ठमकि के सभ बतकही ओकर सुनलसि आ भरपूर मदत कइलसि। उहो बेचारी का करो? लंगा सबसे उँच्चा। लफंगा से भगवान डेरालें। ऊ तऽ एगो गरीब अबला मेहरारू रहे। डेरा गइल। ओही घरी ऊ चुटकन के घरे पहुंचि गइल आ सभ बात बता देलसि। जबाब में चुटुकन कहलें, जो ओकरा के बता दिहे अबहीं कवनो उपाइ नइखे। पुलिस से लेले महल्ला के सभ लोग गरम बा। ममिला ठंढाते हम कवनो ना कवनो उपाइ करबि। कहि दिहे चुपचाप लुकाइल रहो। ना तऽ जान ना बांची ̇ पुलिस मारि के खराब कऽ दिहें सऽ। चुटकन ओकर जिगरी संघतिया रहन। बाकिर अपनहूँ बचे के रहे। एह से पूरा दिन ऊ गली में मड़रात रहि गइलें बाकिर भांज ना लागि पावल। समय के साथे सभ ममिला सथा जाला पुलिसो के घुम–चुउकड़ी नरमाइल। महल्ला के लोग– बाग सेरा गइल। तब दोसरा दिने सुतली रात में फंफराह देखि साइकिल निकललें चुटकन आ पहुंचि अइलें डाक्टर साहेब के पैखाना लगे। केवाड़ी खोलले। देखलें ओह गन्दगी में डेराइल एगो कोना में पटुआइल रहे मनधनवा। देहि झोर के उठवले,–,'' निकल साला, एक कोप भवन से। ना त लगले बिहान हो जाई फेरू दिन भऽ एही में रहि जाए के परी । आ मनधनवा के साइकिल प बइठवले उड़ि गइलें। राह में मनधनवा कहलसि,'' तोहार खुकरिया पासे में बा। घबड़इह मति । हमरा के कसहूं ससुरारी पहुंचा दऽ। ओहिजा से हम कवनो उपाई कऽ लेबि, ''।

'खुकरिया के सार' चुप–चाप चलु। अब कवन उपाई करबे । दुर्वासा ऋषि वाला हाल तोर हो गइल। जवन कइले ऊ बड़ा बेकार। एइजा–ओइजा, सगरे बिगाड़ि लेले। कवनो मुलुक में तोरा ठवर ना भेटाई। चलऽ जहंवाँ कहबे, हम ओहिजा पहुंचा देबि। तोर मउगियो घर में ताला बन कऽ के बाल बच्चन के साथे फरार हो गइल बिया। खँसी मारे के नाम पऽ खुकरी मंगले आ मनबोध मिसिर पऽ वार कइले । ऊ तोर का बिगड़ले रहले हा,'' उनका अस अघहार आदमी के साथे तोरा अघन्य ना कइल चाहत रहल हा। शराब पी के गड़हा में कूदि गइले। भागि के कहंवाँ जइबे? पुलिस तोरा के छोड़ी ना । अपना मेहरारू लइका के पेट पऽ लात चला देले.... ..... । तोरा लेखा अघायु खोजलो पऽ ना मिली.... ।''

चुटकन के बात सुनि चुपचाप हो गइल मनधनवा । जइसे जयन्त के घबड़हटि देखि नारदजी के दया आ गइल। ओही तरे चुटुकन से संघतिया के दुख ना देखल गइल। ओकरा के ससुरारी पहुंचा के खुकरी लेले सुकवा उगे तक घरे लवटि अइलें । तनिका आराम करे खातिर बिछावन पऽ गिरलें। बाकिर उनकर मन उनका के उदबेलसि,'' हमरा नेपलिआ दरबान के खुकरी ना चोरावल चाहत रहे। बहुते बुरबकही कऽ देनी। पाप के भागी अब हमरो बने के परी । ना गुर खइतीं ना कान छेदाइत। एह हतेआरा हथिआर के अब घर में एको छन ना राखबि.....।'' करवट बदलत बिहान कइलें। होते पराते फंसिया बाग ओरे निकलि गइलें। बुढ़वा इनार पऽ पहुंचले। डांड़ में से खुकरी निकलते इनार में फेंकि के अहथिर हो गइले।

मियाँ के दौड़ मस्जिद तक। मनधनवा से पहिले, ओकर घरनी नइहर पहुंचि चुकल रहे। कवनो तरे कुछ दिन तक ससुरारी में परिवार के साथे रहल मनधनवा। खा ससुर घरे आ सुते दोसरा के दुआर पऽ । पुलिस एहिजो काम लगवलसि। सढ़ुआना पराइल। बाकिर सरन कतहीं ना ! एह बीचे शहर में रात –बिरात लुका –छिपी आ के घर के सभ बक्सा –बुकसिन के जगहा धरा देले रहे। आ घर में रहे का? लंगा लूचा के हालत बड़ा खस्ता होला। एह से पुलिस के हाथे कुछुओ ना भेंटल–बस उहे चौकठ–केंवाड़ी। सुबहित महीनो ना लागल कि एक दिन सुतली राति में पहुंचल घरे । बड़ा जोर से पिआस लागल रहे। डोर बाल्टी लेले कुंआ पऽ पहुंचल। बाल्टी कुंआ के भीतरी पहुंचल। ठक के आवाज भइल। आवाज सुनि चिहा गइल मनधनवा,'' आहि दादा ई का भइल? चइते में कुंआ के पानी सुखि गइल। हर साल जेठ मे सूखत रहे। दू महिना पहिले ई हाल हो गइल। ओही घरी दउरल चुटुकन के घरे पहुंचन। केंवाड़ी ठुकठुका के जगवलसि। सभ बात बतवलसि। चुटुकन खिल्ली उड़वलें,'' बड़ा निम्मन काम कइले बाड़ऽ। ओकरे ई फल मिलऽता। अबहीं कहवाँ देखलऽ । एहू से बदतर हाल होई। देखत रहऽ अबहीं तऽ ई 'टाराएल' हऽ ।''

पानी पी के एक–आध घंटा, चुटकन का घरे ठहरल मनधनवा। नया–पुरान खबरन से बाकिफ भइल। अंत दांव में कहले चुटकन,'' जिला बदर हो जो। दोसर कवनो रास्ता नइखे । कुछुओ करबे, जान ना बांची। दोसर मुलुक धऽ ले। रते–राति पराइल मनधनवा। ससुरारी आइल। कतहीं चैन ना! चिन्ता फिकिर के दरिआव में डुबकी लगावत उबिया गइल रहे मने रमत ना रहे। उजबुजा गइल। बड़ा अफदरा में परल रहे। तले एही बीचे ओकरा एगो संघतिया के इयाद आइल। ऊ कोइलवरी में रहत रहे। ओकर पता ओकरा लगे रहे। पुलिसिया दबाव बढ़त गइल। ऊपर से ब्रह्मलूक तड़िअवलसि। परा गइल झरिया । ओइजे लुक –छिप प्राइबेट टैक्सी चलावे लागल। बाकिर ओइजो बसेर ना पवलसि। अबही पूरा महीनो ना लागल रहे। पुलिस ओइजो पहुंचि गइल। पुलिस–प्रशासन जे के मन से चाहि देला ऊ सेरन्डर बोल देला। मनधनवा के का औकात रहे? कतना भागो? कहवाँ भागो? अन्त दांव में सरेन्डर करे खातिर कस्बाई शहरे ओकरा निम्मन बुझाइल। मेहरारू बाल–बच्चन के साथे सांझि खा बस से धनबाद पहुंचल । अपना शहर में पहुंचे खातिर जेनरल डब्बा के टिकट कटवलसि। प्लेटफारम पऽ आइल। धनबाद–पटना इक्सप्रेस अपना खुले से एक घंटा पहिले आ के प्लेटफारम पऽ लागि गइल रहे। स्लीपर क्लास के डब्बा के गेट खुला रहे। ओह में लोग ढुके के काम लगवलें। साधारण क्लास के एगो डब्बा ना खुलल रहे। प्लेटफारम ओर के सभ गेट लाक रहे। कतनो सिकचा अइठत रहल बाकिर एको गेट ना खुलल । तब उजबुजा के सोचलसि–'' राँग साइड'' से देखि लीं। कही ओने से गेट खुलि जा। अपना एह सोच के काम रूप देबे खातिर मेहरारू –लइका के प्लेटफारम पऽ छोड़ि के इंजन आ डब्बा के बीचे से पार करे के चहलसि। डब्बा के ज्वाएन्ट पार करे खातिर निहुरल। संजोग बाउर रहे। ना जाने कइसे कवनो खुला बिजली के तार इंजन पऽ से लटकल रहे आ कि पोल पऽ से टूटि के गिरल रहे, ओकरा पीठि में सटि गइल। छटपटात रहल बाकिर मुंह से बकार ना निकल पवलसि। तगड़ा भोल्ट के बिजली ओह तार से गुजुरत रहे। राति के बेरा । केहू के नजर ना परल पलक मारते मनधरवा'' जै हरी'' हो गइल...। ●●●

बाबा के टोपरा

❑ डॉ. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

ओह जमाना में बाबा के शान–शौकत के सामने बड़का–बड़का जमीदारों फीका पड़ि जात रहन। बाबा बीसहीदार रहलन। जमींदारी खतम भइला का बादो उनका बीसहीसारी में कवनो ओनइस–बीस ना भइल। जब ले बाबा जिअलें तब ले उनकर बीसही आ नाम अवार–जवार सगरो चरचा के विषय बनल रहे। बाबा लाल रंग के एगो मझिला कद के सुघर घोड़ियो रखले रहन, जवन दुलकी चाल खातिर मशहूर रहे। ओह प जब चढ़ि के चलसु त जे देखे ऊ बुझ जात रहे कि बाबा कवनो दोसरा गांवे जात बाड़न। रास्ता में जे केहु मिले 'गोड़ लागीं बाबा' जरूर कहे आ बबो ओकरा के 'जीअऽ बाचा' कहत रहन। बाबा मिलनसार रहन। हारला–पारला के सभकर मददगार रहन। केहु कबहिओं, रातो –बिरात चलि आवे आ आपन घटल–बढ़ल कहे त बाबा ओकरा के मदद करत रहन। ना नुकुर तनिको ना। निनानबे गुन का बादो उनकर बड़हन अवगुन सूदखोरी रहे। उनका पाले हरदम कजरौटा आ सादा कागज रहत रहे। बिना अंगूठा के ठेपा लेले, केहु के छोड़त ना रहन। एकरे बल प बाबा सइ से डेढ़ सइ बिगहा खेत वाला हो गइल रहलें। समय के साथ बाबा के शरीर थाकत गइल। रोग बेआधी त दवा दारू से ठीक हो जाय, बाकिर बड़का रोग त बुढ़ापा हऽ, जवना के कवनो दवाइए नइखे। सोना के भसमो एगो समय के बाद कवनो असर ना करे। हर आदिमी के बुढ़ापा से लड़े के परेला। केहू–केहू त रोग आ बुढ़ापा दूनों के झोंझ में अझुरा जाला । बाबा के इहे हाल हो गइल रहे। ना जाने कहंवाँ–कहंवाँ के वैद्य–डॉक्टर दवा– बीरो कइलन बाकिर बाबा के खांसी ठीक ना भइल। अन्तिम दम तक खांसते रहि गइलन । वैद्य रासु मिसिर बाबा के नाड़ी पकड़ि के कहलन,'' सब कुछ ठीके बा। हई दस गो पुड़िया लीं। दु–दु गो पुड़िया रोज सुबह– सांझि खाये के बा। ठंडा स बचे के बा।''

वैद्य जी दवा दे के चल गइलें। बाबा के जिगरी संघतिया सुख–दुख के साथी बिसुन काका, जदुवंश राय के घरे अइलें। ओइजे बइठ गइलें। दुनों जना में बतकही होखे लागल। बाबा कहलें ,''बिसुन... ।''

''हँ बाबा.......... ।''

''हमार बात सुनऽतारऽ नू........ ।''

'' हं–हं बाबा, सुनऽतानी.... ।''

'' देखऽ, ई दुनिया मिरतुभुवन हऽ। एहिजा केहु अमर होके नइखे आइल। आजु ना त काल्हु सभका एहिजे सब कुछ छोड़ि–छाड़ि के चल जाये के बा। हमहूं चल जाइब। बाकिर हमरा गइला के बादो जे रही ऊ जरूरे ई कही कि हऊ बाबा के टोपरा हऽ.... ।'' बाबा के ई बात सुनि के बिसुन हं में हं मिलवलें। बाबा खुश हो गइलें। उनका चेहरा प मुसकी आ गइल। बुझाइल, जइसे बाबा के खांसी भाग गइल........ ।

बाबा के एके लइका रहन– नागवंश राय। पढ़लन लिखलन त ना। बेवहारिको ना रहन बाकिर हंसमुख रहन। शादी बिआह हो गइल रहे। दु गो बेटा दु गो बेटी के बाप बन गइल रहलें । बाबा आपन जिनिगी में पोता –पोती के बिआह शादी त करिये देले रहलन, उनुका एह बात के संतोख रहे कि रुपया पइसा के त कमी नइखे, हम नाहियों रहब त बबुआ अपना लइका–लइकी के पढ़ाई –लिखाई, शादी –बिआह बढ़िया से करे लीहें। केहु के सोझा हाथ ना पसरिहें। कुल आ कपड़ा बचवला से बचेला भा रखला से रहेला, एह बात के सब केहु जानेला। इहो जानत बाड़न। बाकिर कतना गुनले बाड़न? ई हम नइखी जानत । ई त आवे वाला समय बताई । बाबा आपन जिनिगिए में नागवंश राय के मलिकावं दे दिहले। उनुका भरोसा रहे अगिला हर जइसे

चलेला, पाछिलो ओसहीं चलेला। इहो जानत रहन। बांस के कोठी में बाँसे फूटेला। एक दिन नागवंश राय आ बाबा के बीच बतकही होत रहे। नागवंश के मतारी ओहिजे रही। उहो एकदमे झिरकुटनी हो गइल रही। तबहिओं बात विचार सुने—समुझे में उनका कवनो दिकदारी ना रहे। बाबा कहलें,'' बबुआ जुग —जमाना बड़ा खराब बा, केहु केकरो के तबे पूछेला जब ओकरा पासे पइसा रहेला। तु नीमन से रहबऽ त कवनो बात के तोहरा तकलीफ ना होई। बाल —बच्चन के पढ़ाई—लिखाई,शादी—बिआह सभ कुछ ठीक—ठाक से हो जाई। समाज में, गाँव—घर में तोहर मान —मरजादा बनल रही।

''हँ! बाबूजी'' कहि के नागवंश ओहिजा से हटि गइलें। उनुकर माई कहली,'' बबुआ समझदार बाड़ें। रउआ कुछुओ मति सोची। घर गिरहथी सभ सम्हारि लीहें। कवनो चिन्ता—फिकिर के बात नइखे..। बाबा के जमावल आ सरिआवल घर गृहस्थी रहे। ढेर दिनन तक खूब बढ़िया से चलत । नागवंश के बेटा—बेटिन के जमाना के मोताबिक पढ़ाई—लिखाई जरूरिए रहे। साधन के कवनो कमी रहले ना रहे। एह से कवनो राजस्थान त कवनो देहरादून के बढ़िया स्कूल में पढ़े गइलन सऽ। ओइसन स्कूल में पढ़ेवाला के तेज दिमाग होखे के चाहीं । तीन महीना के बाद जवन इम्तहान भइल ओह में दूनों फेल हो गइलें सऽ। सिर्फ पइसे से पढ़ाई ना होखे, जबले पढ़निहार के पाले बुद्धि संस्कार ना होई ऊ कबो ना पढ़ी। राजस्थान आ देहरादून के स्कूलन के प्रिसिंपल, अभिभावक के नाम से चिट्ठी लिखलें, ''कृपया आप अपने बच्चे को ले जाइए। ये मंदबुद्धि के हैं।'' जब नागवंश अइसन चिट्ठी पढ़ले त उनुकर तरवा चटकि गइल। बुद्धि कवनो काम ना करे। उदास हो गइले। बाबूजी से कहलें, जात बानी लइकवा—लइकिया के ले आवे। दूनों के दूनों पहिलके इम्तिहान में फेल हो गइले सऽ। स्कूल से नाम काट दिआइल बा........।''

नागवंश रेलवे स्टेशन पहुंचे के पहिले तक राह में ई सोचत रहन—कतना रोपआ—पइसा खरच हो गइल। हरानी—परेसानी अलगा। एहनिन के पढ़िहें स कि ना । अच्छा जवन एह लोग के तकदीर में होई उहे होखी। ओकरा के केहु मिटा नइखे सकत । देहरादून से राजस्थान चलि गइलें। दूनों के संगे ले के एह हफ्ता के बाद गांवे अइलें। जे एह बात के जानत रहे ऊ अचरज करे लागल। काहे बड़ी जलदिये ई सभ गाँवे आ गइलेँ सऽ। जे—जे पूछे सबका के बतावसु। मुंह प त ना बाकिर पीछा में सभे इहे कहे,'' बाबा के सूदवाला पइसवा अइंसहीं नू निकल जाई। जे जइसन करेला ओइसन पावेला।''

आगे गांव के स्कूल में लइका—लइकी के नाम लिखाइल। पइसा भेज के, पहुंचावे के ,ले आवे के झंझट से मुक्ति मिल गइल। नागवंश आपन खेती—बारी के ठीक—ठाक से चलावते रहन। एही के बीचे चमेलिया के मोह—पास में अझुरा गइलें नागवंश । ओकर रूप के जादू अइसन चलल उनका पऽ कि ऊ अपना के बचा ना पवलें। एक बोझा के बदला दु बोझा दे देसु। जवना पल्हारी प लइका सुतावे ओकरा के ऊ बान्ह लेबे। खरिहानी से कबो धान त कबही गोहूँ ले लेबें। नागवंश कुछ कहसु त मुंह तोप के मुसुका देबे। ओकरा मुसकान पर नागवंश मस्ती में ओसहीं झूमे लागसु, जइसे बीन के धुन प फनधर। चमेलिया रूपगर आ चुलबुल रहे। दू लइका के मतारी होखला के बादो ओकर डील—डौल सुडौल रहे। सांवर रहे बाकिर पनीगर। एह बात के ओकर मरद सुरेशवो जानत रहे। मने—मन खुश रहे आ आपन भाग के सराहत रहे। आपन मलिकार के कमजोरी खूब नीमन से ऊ समझत रहे। एक बेर अइसहीं सुनरी प मालिक लोभा गइल रहन। ओकरा के ढेर रोपेआ—पइसा दे देले रहन। ऊ जीअत रहित त चमेलिया के मोका ना मिलित, ना हमार भाग बदलित। सुरेशवा के असली नाम त सुरेश रहे। लइकाइंए से सुरेशवा

कहि के सभ केहु बोलावत रहे। जवन सुरेशवा के घर–दुआर के ठेकाना ना रहे, समहुत करे के एको धुर जमीन ना रहे, देहिं प सुबहित कपड़ा–लता ना रहे, लइकन के भरपेट अन्न ना मिलत रहे अब उहे सुरेशवा के का पूछे के रहे? ओकर रूप बदल गइल, रंग बदल गइल, चाल बदल गइल, घर–दुआर बदल गइल। जवना रफ्तार से सुरेशवा में बदलाव होत गइल, ओही रफ्तार से मलिकार नागवंश राय के हालत में बदलाव होत गइल। दु दु गो लइकिन के शादी–बिआह भइल। ओह में बेशुमार खरच भइल। औकातो से अधिका। बाबा के सूदी के पइसा के के कहो मुरहो लागि गइल। अतने ना बटुकनाथपुर के अस्सी बिगहा के टोपरो में बा– कलम–खास शुरू हो गइल। सुरेशवा बहुते चल्हांक रहे। जवन जमीन बिकात रहे ओह में दुनों ओर से कमीशन लेत रहे। ई क्रम ओकर तब तक जारी रहल जब ले बाबा के टोपरा के नामों–निशान ना मिट गइल। चमेलिया से उनकर प्रेम गढ़ात गइल। एगो अइसन समय आइल जब चमेलिआ ओह घर के मलकिनी जइसन रहे लागल। केहु के लेब–देब उहे करे। घर के कवनो तरह के जोजना बनावे में ओकर अगहर भूमिका रहत रहे। मालिक के दु गो पतोह रही।ऊ लोग के सेवा–टहल करे खातिर चमेलिया आगे–आगे रहत रहे एह से अब त ओकरा बिनु मलिकार के कवनो कामे ना पूरा होखे.....।

नागवंश राय के बड़का के नाम झूलन आ छोटका के नाम फूलन रहे। दुनों के शरीर एकदम छरहरा, गठीला आ गोर रहे। चेहरा प लाली आ मुस्कान। एकदम हंसमुख चेहरा। बुझाय जइसे सींक से खोद देहला प खून निकल जाई। ई दूनों जना स्कूल के नामकटा रहलें बाकिर बतकही में सबसे आगे। बातचीत करे के अइसन ढंग कि बुझा जइसे एह लोग के सोझा सभ केहु लइके बा, जाने कतना ई लोग पुरनिआ होखसु। दूनों के मेहरारूओ एक से एक रूप–रंग वाली खानदानी, मिलनसार आ सभ केहु के इज्जत करे में माहिर रहली सऽ। करम के बतकही, झूलन झूठ के पुलिंदा रहन आ फूलन फरेब के पिटारा। कहाब हऽ– बाप ना दादा तीसरा पुत हरमजादा।'' इहे सांच हो गइल। झूलन एगो कसबिन के कस में हो गइलें आ फूलन मनसोखई में आ के आपन सम्बन्धी के एगो कमसिन लइकी से मंदिर में जा के बिआह कऽ लेलें। एह बात खातिर उनकर बिआही ना जाने कतना हल्ला–गुल्ला, रोअन– पीटन कइलसि, बाकिर सभ बेअसर। दूनों बालिग रहले रहन। अपना बापे के जिनिगी में दुनों भाई आपन–आपन हिस्सा–बखारा ले के अलगा–बिलगा हो गइलें केहु के अपना प नियंत्रण ना रहि गइल। ई लोग 'कोआथ के नबाब' से अपना के कम ना बुझत रहन। नतीजा भइल, बाबा के टोपरा धीरे–धीरे बिकाये लागल। संजोग अइसन भइल कि नागवंश राय त बेचते रहले, साथे–साथे दूनों बेटउओ टोपरा बेचे लगलें सऽ। अइसना में सुरेशवा के पौ बारह भइल। पहिले त एके मलिकार से कमीशन लेत रहे, अब त तीनों मलिकार से ले लेबे लागल। एने ओकर घर प घर बने लागल आ ओने घर रोज–ब रोज बिगड़े लागल। फूलन आ झूलन दुनों के एकक गो लइका–लइकी। एहनिन के पालन–पोषण आ पढ़ाई–लिखाई के समस्या। बिआह शादी त बाद के चीज रहे। घर में फूटल कउड़ी ना। अन्न–पानी के अभाव। घर में के हांड़ी–भाड़ी सभ भांय–भांय करत रहे। कतहूं कुछुओ ना। हरदम दोसरे के असरा भा बाँचल– खुचल बाबा के टोपरा। झुलन लइका–लइकी के पढ़ावे के नाम प आपन हिसदारी के खेते बेच देलें। फूलन मेहरारू के साज–सिंगार आ सवख पूरा करे खातिर आपन खेत–खरिहान सभ बेच देलें। करम के फेरा बड़ा बरिआर होला। ओह चकोह में जे फंसी ,ओकरा फेरू ओह से निकलल दुलम हो जाला। बाबा (जदुवंश राय) आपन जिनिगिए में सभ कुछ देखि लिहले जेकरा दुआर प ददरी मेला के नामी मुठरिहा दु दांता बरध सोभत रहलें, मथुरही

भईस पगुरात रहली, नीमन–नीमन गाय रंभात रहली, दुलकी चाल वाली सुनर–सुभेख घोड़ी हिनहिनात रहली सऽ, अब उहे दुआर सुनसान, श्मशान जइसन लागे लागल। कुकुरो –बिलार के ठेकान ना रहि गइल। इहो सभ ओही लगे रहेला जहंवा खाये–पीये के कुछ मिलेला। एक दिन बाबा एकान्त में रहन। मन ना लागत रहे। परिवार के दुर्दशा देखि–सुनि के पटुआ गइल रहलें। तले उनकर घरनी हाथ में ठेंघनी लेले अइली। पुछली– ''का हाल बा.....?''

''ठीक नइखे....।'' बाबा कहलन

''काहे......?''

सुनऽ हम ओह जनम में बहुते पाप कइले रहनी हा, जवना के भोगत बानी। आ एहू जनम में मति मराइल। जवन कइनी तवन सोझा बा। हमरा साथे–साथे तुहूँ घसिटात बाड़ू। एह जनम में हम कवनो बढ़िया काम ना कइनी। जवन कमइनी पापे के कमइनी। सूदो लेनी आ मूरहो लेनी। केहु के छोड़ली ना । गरीबो–गुरबा में मरउअत ना कइनी। उहे सभ के आह से हमरा जिअते–जिनगी में समूचा परिवार बिलाइ गइल। हमार जिनिगी बेकार आ अकारथ बा। भगवान एह संसार से मुक्ति दे देसु। जवना से अब आगे वाला तमासा हम ना देखी। ई कह के ऊ चुपा गइले बाकिर उनुका अइसन बुझाइल कि झुरू–झुरू बहेवाली हवा कान में गंव से कह गइल– 'पाप के धन बहुत अधिक दिन तक ना रहे। जइसे आवेला ओइसहीं चल जाला। धनी पुरूष के बहुते घरनी मिल जाली। जब धन धरातल में चल जाला त अपनो कहाय वाला गंवे से घसक जाला। बाबा के, अब एक–एक छन कटावन–डेरावन लागत रहे। संगोरल–बटोरल सभ खउरा खापट लाग गइल। उनुकरा टोपरा के नाँव बुता गइल। चमेलियो ऐनक चमका के अइसे चल गइल, जइसे बरसात खतम होते बाढ़ के पानी के उफान।

●●●

बोध

❑ ओम जी 'प्रकाश'

उलझि के रहि गइलीं दाल–भात में।
केतनो जुगत– जोगाड़ कइलीं
अक्किल लगवलीं
हँसि के, रोके हाथ–पैर चलवलीं
बाकिर निकल ना पवलीं
भँवर–जाल से।

चहलीं कि हाथ बटाईं
लाचार के लाचारी हटावे में
दुखिया के दुख घटावे में।
केहू हाथ फइलवलस
तऽ इहे मन कइल
कि ऊ खाली जिन लवटो
बाकिर अक्सरहा हमार मुट्ठी बन्हा गइल
जइसे हमहूँ बन्हा गइल होखीं
अपना में, अपनन में, हीत नात में।

जाँगर डोलावत, ठोकत–ठेठावत
देहिं बुढ़ा गइल
मनवो मरूवा गइल
साध साधे रहि गइल
बाकिर एतना जरूर समझ में आइल
कि खाली सोचले से ना
कइला से कुछ होला
कइला से ना तऽ
कइला का कोसिस से तऽ जरूर होला
काश !
हम ऊ कोसिस कइले रहितीं !

●●●

कहानी

सइंचल सपना

❑ रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

रजनी के सुन्दरता उनका माई बाबू खातिर जीउ के जवाल भ गइल। ऊमिर त अभहिन सोरहे के रहे बाकिर माई के मंशा रहे कि जल्दी से बेटी क बिआह क दिहल जाय। इहो अरमान रहे कि लइका खूब सुघर रहे आ सरकारी नोकरी में रहे । उनकर बाबूजी कतहीं लइका देख के आवें त 'ई बेटी लायक नइखे' कहि के माई रिजेक्ट क देसु। बिआह के लेके माई बाबू में अक्सर तकरार होखे।

माई कहसु– ' कान खोल के सुन लेईं । अइरू– गइरू लइका से बिटिया के बिआह ना होई, दान दहेज खातिर पीछे मत हटब! कहीं से अर इंतजाम कइल जाई।

रजनी सभ कुछ चुपचाप सुन लेसु, बाकिर कुछ बोलसु ना। इन्टर पास रहली। आगे पढ़ाई के बहुत इच्छा रहे बाकिर साधन न रहला से पढ़ि ना पवली। उनहूँ के मन में त रहबे कइल कि उनके सुन्दर बर मिले।

दिवाली बीत गइल । गाँव के लोग ददरी मेला जाए के तर तइयारी करे लागल। रजनी के माई उनका बाबूजी से कहली– एहसाल जाड़ो कम बा। चलीं हमहनो के ददरी मेला चलल जाव। बिटिया गंगा नहा लेई। हो सकेला कि गंगा माई हमहन के अरमान पूरा करें आ बेटी के बिआह नीमन घरे हो जाव।

" ठीके बा। जब तोहार मन बा त चलल जाई । गाँव के लोग जाते बा"– उनकर मरद कहलन। अठाइस नवम्बर के पूरनमासी के नहान रहे। सताइसे के रजनी के माई बाबू गाँव के करीब बीस लोगन के साथ नहाए खातिर चलि दिहलन। साँझ ले लोग पहुँच गइल । गाँव के सभ लोग मेला मे एगो टेन्ट में रहे के व्यवस्था बनावल। तय भइल कि तीन बजे सबेरही नहाए खातिर चलि दिहल जाई आ छव बजे ले नहा धो के लौट आवल जाई। एकरी बाद मेला घुमल जाई।

दूसरा दिन नहाए खातिर सभ लोग चार बजे सबेरहीं घाट पर पहुँचि गइल। ओइजे रजनी के फूफा भेटा गइलन। उनके संगे गाँव के प्रभात नाम के एगो लइको रहे, जवना के ऊमिर बीस के आस पास रहे । रजनी के बाबू गाँव वालन के साथ छोड़ के अपने बहनोई साथ भ गइलन। प्रभात आ रजनी एक दूसरा के निहारे लागल लोग।

रजनी के बाबू जी मेहरारू से कहलन– 'तू रजनी के लेके नहा आवऽ। तबले हम कपड़ा लत्ता अगोरत बानी। उनकर बहनोई कहलन–" अइसन कइसे होई। तोहन लोग दूनो जने संगही डुबकी लगाव जा ।संगही नहइला के महातम कुछ अउरे होला । कपड़ा लत्ता अगोरे खातिर हम बटले बानी। रजनी के लेके उनकर माई बाबू नहाए चलि गइल। दूनो जाना गंगा मइया से मनौती मानल कि बेटी के बिआह जल्दी से हो जाव। नहइला के बाद लोग बाहर आइल आ कपड़ा लत्ता बदलल। प्रभात त रजनी के निहारते रहलन उहो कबे कबे आँख उठा के प्रभात के देखि लेसु। नहइला धोवला के बाद लोग मेला लवटल। रजनी के बाबू जी बहनोई से पूछलन –" तोहरी संगे ई जवन लइका हवे इनकर परिचय का हऽ?" बहनोई कहलन– ई हमार दूर के नात हवे। फउज में नोकरी करेलन। एक महीना के छुट्टी आइल बाने। इनका बिआहो खातिर लोग आवत जात बाने।" रजनी के बाबू जी पुछलन – रजनी के साथ बिआह कइसन रही?" "तू त हमरी मने के बात कहि दिहलऽ। एही से हम इनके लेके आइलो बानी की तोहनो लोग देखि ल जा।" बहनोई कहलन। तबले रजनी के माई कहली–" ननदोई जी, एइसन हो जाइत त हमहन राउर एहसान जिनगी भर ना भुलइती जा । लइका हर तरह से लइकी के लायक बा" ठीके बा! लइको के अभी एक महीना रहे के बा। प्रभात के माई बाबू के विचार बा कि खिचड़ी के बाद पहिलकी लगन में बिआह क दिहल जाव " बहनोई कहलन।" हमके का करेके पड़ी?" रजनी क बाबू पूछलन। "अगिला हफ्ता में तू हमरी गाँवे

आ जा हम तो हकके लेके प्रभात किहें चलब। ईश्वर के इच्छा होई त बिआह तय हो जाई ''बहनोई कहलन। अगिला हफ्ता रजनी के बाबूजी बहनोई के लेके प्रभात के घरे पहुँचलन। प्रभात रजनी के देखि लेले रहलन। लेन देन तय भइला के बाद बिआह तय हो गइल । खिचड़ी के बाद बीस जनवरी के तिलक आ पचीस के बिआह के दिन धराइल। रजनी के बाबूजी तइयार होके गइले रहलन , बरइछो क दिहलन। प्रभात आ रजनी मने मन बहुत खुश भइल। दूनो ओर से बिआह के तर तइयारी होखे लागल। रजनी के माई के त खुशी के ठिकाना ना रहल। मनेमन मनौती मनली कि गंगा माई ठीक ठाक से बर बिआह हो जाई त अगिला साल तोहके पियरी चढ़ाइब। जइसे जइसे बिआह के बउखलाहट बढ़े लागल प्रभात के रजनी से मिलला के बउखलाहट बढ़े लागल। एने कहल गइल हऽ कि भविष्य केहू जानि ना पावल। एही बीच भारत पाकिस्तान में जंग छिड गइल। प्रभात के छुट्टी कैन्सिल भऽ गइल आ तार आइल कि जल्दी से आके ड्यूटी ज्वाइन करे। प्रभात जुरतले नोकरी पर चलि गइलन, आ उहाँ से उनके बाडर पर जाए के पड़ल। रजनियो दिल पर पत्थर धइ के प्रभात के इतजार करे लगली। बीस बाइस दिन ले जंग चलल। प्रभात बहादुरी से अगिला मोरचा पर संघर्ष कइलन। ऐही बीच लड़ाई रोके के घोषणा भ गइल कि छिट फुट गोलीबारी होते रहे । प्रभात भितरे भीतर खुश भइलन कि फिरू जल्दिए घरे लवटब आ रजनी के संगे बिआह होई। रजनी खातिर उनकर बेचैनी बढ़े लागल । एने रजनियो रोज भगवान शंकर के पूजा करे कि प्रभात ठीक ठाक लवटि आवसु।

एक दिन प्रभात बार्डर पर अपनी संगी लोगन के साथ गस्त लगावत रहलन । लड़ाई बन्दी के घोषणा मन में कवनो डर ना रहे । तबले गोली आके उनकी गोड़ में लागल। ऊ ओइजुए गिर पड़लन। एनिओ से जवान लोग मोरचा ले लिहल । जल्दी से प्रभात के अस्पताल में दाखिल कइल गइल। डॉक्टर लोग काफी प्रयास कइल जेसे प्रभात त बँचि गइलन बाकिर उनकर बायाँ गोड़ काटे के पडल। तीन महीना ले अस्पताले में रहलन। एह खबर से उनका घर के लोग काफी दुखी भइल। रजनी के घर के लोगन के जब ई खबर मिलल त ईहो लोग दुखी भइलन। एह लोगन के कुछ समझ में ना आवे कि अब का कइल जाव? ओइसे त प्रभात के घर में लोग बिआह करे के तइयारे रहलन । एक दिन रजनी के घर के लोग बठइ के एही बारे में बतकही करत रहे। रजनी के बाबू जी कहलन–'' बेटी, अब तूहूँ सयान भइल बाडू। बिआह के बारे में तोहार का बिचार बा''? '' बाबू जी,हमरी भागि में लँगड़े से बिआह लिखल होई त एमें का कइल जा सकेला । बिआह कइला में हमके कवनो एतराज नइखे।'' रजनी कहली। तबले माई कहली–'' बेटी, एइसन काहे कहत बाडू? अभहिन कवनो बिआह भइल थोडे बा। हम अपनी बेटी के बिआह लूल लंगड़ से ना करब। ई हमार अन्तिम फैसला बा।'' माई के बात सुन के रजनी चुप लगा गइली। उनके बाबूओ के कुछ कहे के हिम्मत ना पड़ल। प्रभात किहें जोह भेज दिहल गइल कि बिआह ना होई।

प्रभात बहुत दुखी भइलन। मनेमन सोचलन कि रजनी के एमे अचिको दोष नइखे। ओइसन सुघर लइकी काहे के लंगड़ के आपन मरद बनाई । बाकिर हम त उनके मन में मेहरारू के रूप में बइठा लेले बानी। अब भले जिनगी भर कुँवारे रहि जाइब बाकिर दुसरी लइकी से बिआह ना करब । हमके एह बात के गुमान बा कि देश के रक्षा खातिर लंगड़ भइल बानी । हालांकि रजनियो अपनी मन में प्रभात के मरद के रूप में स्वीकार क लेले रहली, बाकिर परिवार के सोझा उनकर चलल ना आ दूसरा जगह उनकर बिआह भ गइल । उनकी मरद के नाम रहे– मानिक। मानिको सुघर रहलन बाकिर नोकरी ना करत रहलन । उनकर आपन धंधा रहे । परिवार में खाये पिये के कवनो कमी ना रहे । तीन भाई रहलन। सभकर परिवार एके संगे रहे । परिवार में काफी मेल जोल रहे । सभ एक दूसरा के धियान रखे। माई बाबू के सभ परिवार एक संगे रहला के गुमान रहे आ समाज के लोगन से बड़ी

शान से कहें कि जियते जी लइका लोगन के अलगा बिलगी ना होखे दइब।

तीन बरीस बीत गइल बाकिर रजनी के कवनो अवलाद ना भइल । रजनी पर किसिम किसिम के आक्षेपो लागे लागल। समाजो के लोग तरह तरह के बात कहे लगलन। उनके सास त अपनी लइका के दूसर बिआह करे के सलाह देबे लगली। हालाँकि उनकर मरद एकरी खातिर तइयार भइलन, बाकिर रजनी के दिल पर का बीते , एके कहल ना जा सके । एही बीच उनकर मरदो साथ छोड़ दिहलन। अभहिन उनके बिआह के पाँचो साल ना भइल रहे। उनकर उमिरो अभहिन चउबीस पच्चीस के बीचे रहे । रजनी विधवा भ गइली विधवा के कष्ट क वर्णन त ना कइल जा सकेला, बाकिर समाज सहयोग करित ओकर आँसू पोछल जा सकेला।

रजनी के परिवार आ समाज में साथ देबे वाला केहू ना भेंटाइल। उनकर सास त रजनी के डाइन कहे आ इहो कहे कि हमरी लइका के खा गइलसि । बहू के पौरा ठीक नइखे एसे परिवार के सत्यानाश हो जाई। परिवार के लोग रजनी के अलगा दिहल। रजनी एके भागि के खेल समझ के चुप चाप सहन क लिहली । नइहर के लोग सहयोग कइल चहलन, बाकिर ऊ कहि दिहली कि हम एहिजे रहब, बिआह के बाद लइकी के असली घर ससुराले होला । नइहरो में गइला पर त हमके समाज क ताने सुन के पड़ी। जिनगी अभहिन लमहर रहे बाकिर अकेलहीं रहे के फैसला ले लिहली । सभ कुछ ईश्वर पर छोड़ दिहली। एसे उनके मन के शांति मिलल । समाज अभहिनों उनकर पीछा छोड़े के तइयार ना रहल। उनके चाल चलन पर अंगुरी उठे लागल । एसे रजनी अउरी आहत भइली।कबे कभार उनके प्रभात क इयाद पड़ि जाय त उनकर बेचैनी बढ़ि जाव। फौज से अइला के बाद प्रभात गँवही पर रहे लगलन। उनके पिनशिन मिले। कबे कभार उनहूँ के रजनी क इयाद पड़े त ओही के सपना में डूबि जासु। प्रभात के एगो गोड़ रहे ना । बैसाखी के सहारे चलें। देश के रक्षा में पैर गँववले रहलन एसे उनका कवनो मलाल ना रहे। बाकिर कबे कबे बिचलित हो जासु, जब केहु उनके 'लंगड़ा' कहि के बोलावे । गाँव के मन सरहंग लइका त उनके 'लंगड़ा' कहि के रिगवहूँ लगनल स।

बाद में प्रभात एतना आहत भइलन कि गाँव छोड़ि के ननिअउरा आके बसि गइलन । इहाँ हर तरह से उनके आराम रहे । चूल्हा चउका से उनके छुटकारा मिल गइल। पिनशिन के रूपया ममेरा भाई लोगन के संउप देसु । अपने समाजिक चरचा में जिनगी बितावे लगलन। एही बीच फिरू भारत पाकिस्तान के बीच जंग छिड़ गइल। प्रभात के जोश जाग उठल । ऊ जंग में भाग लेबे खातिर तइयार भ गइलन , काहे से कि रिटायरो सैनिक लोगन के बोलाहट आ गइल। एक गोड़ ना रहला से ऊ जा त ना पवलन बाकिर पूरा लड़ाई भर काफी उत्साहित रहलन । रेडियो से हरदम न्यूज सुनत रहें । गाँव के लोगन के पिछला जंग के समय के अनुभव काफी जोश में सुनावे। इ जान के कि प्रभात पिछला जंग में लड़ल हवे, लोग उनकर आदर सम्मान करे।

भारत के जीत के साथ जंग समाप्ति के घोषणा भइल। लडाई के बाद सत्तापार्टी के नेता लोगन के देश में दौड़ा सुरू भइल। जंग के जीत के श्रेय लेबे के पार्टी लोगन में होड़ लाग गइल अगिले साल लोकसभा के चुनावो रहे। सत्तापार्टी क पुरहर भरोसा रहे कि जंग जितला के लाभ पार्टी के मिली आ अगिला बेर फिरू देश में उनही के पार्टी के सरकार बनी । क्षेत्र के सांसद रजनी गावँ के बगले के रहलन। ऊहो अपनी क्षेत्र में माननीय रक्षा मंत्री के कार्यक्रम लगवा लिहलन। पनरह दिन पहिलही से तइयारी होखे लागल । जिला के कलक्टर आ एस. पी. स्थान के दौड़ा कइलन आ तर तइयारी युद्ध स्तर पर सुरू भ गइल। क्षेत्र के जनता रक्षामंत्री के कंह से जंग के बयान सुने खातिर उत्साहित रहे। कुछ लोगन के मंत्रीजी के हाथ से सहायता देबे आ सम्मानितो करे के कार्यक्रम बनल। एह सूची मे कुल दस लोगन के नाम रहे जेमे

नव लोग विधवा आ निराश्रित आ एगो नाम पूर्व सैनिक प्रभातो के रहे । विधवा में रजनियो क नाम रहे। पनरह फरवरी के माननीय रक्षामंत्री के प्रोग्राम शंकरपुर कस्बा में लागल। दस बजे से कार्यक्रम के सुरूआत रहे। आठ बजे फजिरहीं से मजमा जुटे लागल। अधिकारी आ नेतो लोग पहुँच गइलन। ठीक दस बजे माननीय रक्षामंत्री जी पंडाल में पहुँचलन। जिन्दाबाद के नारा से पंडाल गूंज उठल। कार्यक्रम के सुरूआत स्वागत गीत से भइल। क्षेत्र के सांसद महोदय रक्षामंत्री के परिचय में उनका प्रशंसा के पुल बांध दिहलन। सम्म्मानित होखे वाला आ सहायता पावे वाला लोग अगली लाइन में बइठल रहलन। माननीय मंत्रीजी खाड़ भइलन। संचालन मे एक एक आदमी के नाम पुकारल जाए लागल। लोग मंच पर पहुँचे आ सहायता चेक लेके मंच से नीचे आ जाव । रजनी के नाम बोलल गइल। उहो मंच पर पहुँचली । मंत्री जी उनके चेक दिहलन आ मंचे पर बइठा लिहलन। एकरी बाद पूर्व सैनिक प्रभात के नाँव पुकारल गइल। लंगड़ भइला से उनके मंच पर चढ़े में परेशानी होखे लागल। रजनी जुरतले उठली आ सहारा देके उनके मंच पर चढ़ा दिहली। मंत्रीजी उनहूँ के सम्मानित कइलन आ मंचे पर बइठा लिहलन। रजनी प्रभात के चीन्ह गइली बाकिर दुबिधा में रहली। प्रभातो उनके पहिचान ना पवलन।भाषणो सुरू हो गइल। सभसे पहिले देश खातिर जंग में शहीद सैनिक लागन के श्रद्धांजली अर्पित कइलन। उनके साहस आ शौर्य के प्रशंसा करत कहलन कि ओही लोगन के बलिदान से देश जीतल हऽ। एकरी साथे साथ समाज के लोगन से एगो मार्मिक अपील कइलन कि कवनो लँगड़ के देख के लंगड़ा मत कहब, काहे से कि हो सके ऊ देश खातिर जंग में आपन पैर गँववले होखे। लगँड़ा कहला से ओकरी बहादुरी क अपमान के साथे साथ देशो के अपमान होई। मंच पर बइठल प्रभात पिछला जंग में आपन बायां गोड़ गँववले हवे, जेकरा वजह से आज वैशाखी पर चलत बाने।

एतना सुनते रजनी भावावेश में भुला गइली आ मनेमन सोचे लगली कि ई उहे प्रभात हवे जेके लंगड़ कहि के हमार माई बाबू बिआह करे से नकार दिहलन। अब त हम ओकर प्रायश्चितो करे लायक नइखीं रहि गइल। बाकिर अवसर मिली त बाकी जिनगी उनका सेवा मे लगा देइब।

मंत्रीजी आगे कहलन कि सभ्य समाज में विधवा के इज्जत के साथ जिअहूँ के अधिकार बा। कम उमिर में विधवा होखे वाली मेहरारू आपन लमहर जिनगी कुढ़ कुढ़ के बितावेले। समाज के एहू के बारे में सोचे के चाही। हमरी बिचार से कम उमिर में विधवा होखे वाली मेहरारू लइकी के फिर से बिआह होखे के चाहीं। नेता आ समाज के अगुआ लोगन के एह बारे में प्रयास करे के चाही । एकरी बाद अध्यक्ष जी के भाषण भइल आ सभा समाप्ति के घोषणा। मंत्रीजी के मंच से उतरते सभ लोग उनके पीछे पीछे चल दिहल । रजनी प्रभात के सहारा देके मंच से नीचे उतरली। प्रभात उनके अभहिनो ना पहिचान पवलन। रजनी कहली–– ''रउवां त हमके पहिचानत नइखीं, बाकिर रउवां अवसर देतीं त आपन शेष जिनगी रउरी सेवा में बिता देती। एह तरह हमार प्रायश्चितो हो जाइत।'' '' तोहरी कहला के मतलब हम समझि ना पवलीं ''। – ऊ चिहा के पुछलन। रजनी अपनी बारे में बतावत सांसद के पाछा पाछा चलत रहली। प्रभात के मुंह से अचके निकलल – '' ईश्वर बड़ा कारसाज बा, आखिर ऊ रजनी से मिलाइये दिहलस।'' सांसद महोदय सुनत रहलन। उनके रजनी आ प्रभात के रिस्तो के पता चलल। '' रजनी आ प्रभात के मिलन के साक्षी हम होइव।'' अचके उनका मुंह से निकलल। ऊ प्रभात के अपनी साथ ले गइलन। फिर से बिआह के प्रस्ताव रखलन। प्रभात आ रजनी तइयार हो गइल लोग। फिर एगो सादा समारोह आयोजित कइल गइल। क्षेत्र के सम्मानित लोगन का बीच, पंडित के सहयोग से रजनी प्रभात के बिआह भइल। रजनी आ प्रभात के बुझाइल जइसे ओह लोग क पुनर्जनम भइल। जइसे कहिया के संइचल सपना आ साध फुलाइल।

●●●

हम तबे बानीं

❑ तुषारकांत उपाध्याय

थरिया पोंछ के खाये के हमरा गँवई आदत पर हमार संभ्रान्त मित्र लोग मुँह बनावेला। 'खाते वक्त आदमी की 'ओरिजिन' दिख ही जाती है' हम क बेर सुनले बानीं। बाकिर करीं का आदत ह से छुटते नइखे। असहीं सुधियन के कुच–कुच करिया गलियारा में आवत–जात कुछ आकृति आँख के सोझा झलक उठत बाड़ी स..... तब हम दस बरिस से अधिका के ना होखब। बाबूजी मध्यम दरजा के सरकारी नोकरी में रहले, एह से 'पेट के जरला' जइसन शब्द कवनो डेरवावन भा त्रासद संवेदना ना जगा पावसु मन में। डँड़ारी पर बइठ के काम देखे के आ खुद काम करे के जवन अनुभव होला, ओह में फरक हमरा जरूर बुझाला।

जाड़ा के एगो सिहरावन सुबह। भाई बहिन लोग अबे खइले ना रहे। माइयो के हमनी के खिया पिया के निश्चित हो जाये के फिकिर ज्यादा रहे। नहाइल त कबो हो जाई। लइकइंया में भुंइया बइठ के खाइल! बुरा मत मानब !...... कबो खइले बानीं अइसे? डायनिंग टेबुल पर बइठ के खाये आ जमीन पर बइठ के खाये में कवनो फरक होखे भा मत होखे,, गिरल जूठ में त बड़ा फरक होला। जमीन पर गिरल जूठ के संगे, जब ओकरा के फेंकल जाला, अउर कई गो चीज उठ जाली स फेंकाये खातिर।

हमरा खइला के बाद माई हाथे में जूठ उठवले ओकरा के बहरी फेंके चलल। ई ओकर रोजे के आदत रहे। गली मे के कुक्कुर ओकरा के देखते दउर के आ जात रहे आ जमीन पर रखल जूठ के खाये लागत रहे।........ आ ओहू दिने जब माई रोजे अस जूठ के दूनो हाथे उठवले फेंके चलल त दूगो लइकी आवत लउकुई स। माई के हाथ में जूठ देख के बड़की लइकिया दउरल आइल आ काँपत बोलल 'माई, का करबू एकर?

केकर?' माई चिहुँकत कहलस।

–ई हाथ में जवन खाएक बा!

–खाएक! काहें? भुइयां के जूठ ह। तोहरा से का मतलब? माई आँख गँड़ोर देले रहे।

–हमरा के दे द ना!

–अरे ! एकरा में बालू–माटी मिलल बा। का करबू एकर?

–माई, भूखे पेट अइँठत बा। काल्हुए से कुछ नइखीं खइले। ई खाएक त हउए न!

माई के आह–जाह में परल, खड़ा देख के बड़की लइकिया ओकरा हाथ से जूठ झपट के ओहिजे खाए शुरू क देले रहे। हमरा याद नइखे ओकरा खाए में कतना देर लागल! बाकिर हँ कुकुरा के गुरनाइल याद बा हमरा। आखिर ई पाजी ओकरे हिस्सा त खात रहे!

बाबूजी के पोस्टिंग अइसना जगह भइल रहे जहाँ के चाउर खुशबू आ लजीज सवाद खातिर प्रसिद्ध रहे। जब कबो केहू घर से उनका किहाँ जाइ त ऊ कुछ चाउर कीन के बस पर चढ़वा देत रहले। एहिजा के बस अच्छा होली स–एकदम लग्जरी! बाकिर भाई, चले के त रोडे पर बा न! बस के खलासी खूबसूरत पट्ठा जवान, बाकिर हो`गइल होखी बे अदबी ओकरा से कवनो महाराजा भा मंत्री के शान में! बस रुकत कहीं कि चार जना चढ़ अइले।

प्रेम से ओकर कालर पकड़ले आ खींच लिहले बस से नीचे आ लगवले जोर से दू थप्पर। स्साला. ....आगे से याद रखिहे। एह स्टैन्ड पर आँख गिरा के बात कइल जाला। सब लोग तमाशबीन.......चुप। जइसन अक्सर होला।

हम अपना शहर पहुँच गइलीं। यूनिवर्सिटी के छुट्टी में एह पारी जब हम्हूँ बाबूजी के संगे एक हप्ता बिता के घरे लवटत रहीं त ऊहे खुशबू वाला एक बोरा चाउर हमरा साथे बस पर चढ़ा दिहल रहे। उहे चाउर के बोरा उतारे के रहे आ ओही खलासी से चूक हो गइल। बोरा ठेला पर ना जाके

जमीन पर गिर परल आ तनकी सा चाउर छिंटा गइल। 'का फरक परत बा! के उठाई भुइंया सें!' हम ठेला वाला से चले के कहलीं। भइया, हई गिरलका चउरा त उठा लीहीं।' खलासी सकइला अस हमरा विरागी चेहरा के तिकवत कहलस। हम ओने ध्याने ना दिहलीं के अतना जहमत उठाई, तनिकी सा चाउर खातिर! हम ठेलावाला से कहलीं 'तुम चलो जी!'

ई तनिकी सा चाउरे ह जे माई–बहिन के गारी आ लात–जूता बरदास करवा देता, बाबू...........ना त उनका लोग के का अवकात! चलीं, हमहीं उठा लेत बानीं। '

हम देखुईं खलासी अपना फाटल गमछी में चाउर के कन ओसहीं उठावत रहुए जइसे भग्न–हृदय छितराइल सपना उठावेला। अनुभति शायद जिनगी के गर्हे ली स आ आकार देली, ओकर नीन–पलक दुरूस्त करेली स! शीशा पर परल चिहार अइसन. .....कतनो साफ करीं, कवनो फरक ना परे।......... आ अब बिना ओह चिन्हार के शीशा के आपन पहचान आ अहमियत खतम हो जाई।...... त जब हम थरिया चाटे लागेलीं, त हमरा असंस्कृत गँवई संस्कार पर रउरा आँख से मुस्कुराहट काहें झाँके लागेला? बाकिर हम्हूं त अलचार बानीं, का करीं! शीशा पर परल चिहार अस ई स्मृति हमार पहचान बन गइल बाड़ी स।...... अब त अइसन बुझाला कि......... इहनी के ना रहला पर शायद हम्हीं ना रहीं। ●●●

लघुकथा

सम्पत्ति के वारिस

❑ **विनोद द्विवेदी**

आइ. सी. यू. (गहन चिकित्सा कक्ष) का बेड नंबर सात पर एगो बूढ़–बुजुर्ग कई दिन से आधा बेहोसी का हालत में कँहरत पड़ल रहे। ओकरा देखभाल करे वाला एगो दिहाती अदिमी बेर बागर ओके चम्मच से दवाई आ पानी ओगैरह पियावे। जब बूढ़ जादा कँहरे चिचियाए लागे त ऊहे दउड़ के नर्स आ डाक्टर किहाँ जाव। छव सात दिन बितला पर, एक दिन एगो पढ़ल लिखल औरत कान्ही हैण्डबेग टंगले, मोबाइल पर केहू से बतियावत ओइजा आइल आ बेहोसी का दसा में सूतल बूढ़ का कपारे हाथ फेरे लागल। सेवा में लागल देख–भाल करे वाला के ऊ अवते कहीं बहरा भेज देले रहे, तबो मोबाइल प ओकर बतकही चलत रहे आ ओकर आँख रहि रहि के आई. सी. यू. का दुआरी प अँटक जात रहे।

पाँचे मिनट बीतत बीतत एगो अदिमी हाथ में कैमरा लेले पहुँचल आ दनादन बूढ़ मरीज के फोटो लेबे लागल। औरत कबो सिरहाना खड़ा होके, कबो बगल में टेबुल प बइठ के बूढ़ का कपारे हाथ फेरत फोटो खिंचवलस आ देखभाल करे वाला अदिमी के आवते, ओकरा के कुछ हिदायत देत ओकरा हाथ में एक हजार क नोट थमवलस आ धीरे से कहलस,'' 'तू ठीक से खा पी लिहऽ। ग्लूकोज के डिब्बा लेले अइहऽ, हम जात बानी, काल्हु भा परसों साँझ खा आइब। '' आ फोटो खीचे वाला का सँगे बहरा निकल गइल।

अपना मरीज का लगे बइठल, हम ओह अदिमी से पूछ बइठलीं, 'भइया ई के रहली हा?

–' पतोहि हई, इनकरा एकलौता लड़िका क। ऊ बेचारा एगो एक्सीडेन्ट में मरि गइल। ओकरे नाँव प मृतक आश्रित का नाते नोकरी करेली।

–'एतना दिन में कहियो ना लउकती? हम पुछली

–'दरसल बुढ़ऊ का नाँवे बहुत बीमा आ फिक्स रूपिया बा, ओमे अपन नाँव चढ़ावे खातिर दउर धूपत बाड़ी। ई बेचारू त लड़िका का मुवते गिरलन तबसे इनकर हालत खराबे होत चल गइल।

–आ तूँ? तूँ का लगबऽ इनकर? हम जानल चहलीं।

– हम इनकर भतीजा लागब। गाँवे खेत बारी देखेनी बुढ़ऊ दस दिन पहिले बोलवलन आ एइजा भर्ती होखे का पहिले हमके दस बारह हजार थमा के कहलन ,बेटा अब ते ही नू बाड़े..... त आपन धरम निबाहत बानी... कहत –कहत ओकर आँख डबडबा गइल। त एकर मतलब ई कुलि नेह–छोह आ फोटो खिंचउवल खाली बुढ़ऊ क संपति के वारिस बनला खातिर, रहल हा.....हम सोचलीं।

●●●

अरे हाय् हाय् रे महँगाई

❑ कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र'

असली सोना बहुत महँग बा हँसुली के गढ़वाई
रोल्ड गोल्ड की गहना से अब कनियाँ बियहल जाई।। अरे0।।

कड़ुआ तेल अकास छुअत बा सब्जी का छौंकाई
घिउ के दरसन दुरलभ बाटे हीतो रोवत जाई।। अरे0।।

सूटिग सर्टिग कपड़ो पर अब छवले बा महँगाई
रेडीमेड कीनि सब पहिरे महँगी भइल सिलाई।। अरे।।

तीस रूपइया किलो के भण्टा, बीच बजार बिकाई
साठि रूपइया किलो परोरा जोहले ना मिलि पाई।। अरे0।।

आलू सगरी इजति बचाई गवन बियाह कराई
ऊ रोई जे किनी तरोई अउर टमाटर खाई।। अरे0।।

कटहर भिण्डी लउकी लउके कोहँड़ा परे खँटाई
कुकुर भोज में प्लेट लड़ेंसनि होखे खूब खवाई।। अरे0।।

मेहीं चाउर महँगा बाटे मोटके काम चलाई
आइल नया बफैलो सिस्टम पूड़ी ना परोसाई।। अरे0।।

लाची लवँगो गरम मसाला बहुत महँग बा भाई
धनियाँ संफु जवाइन जीरा मेथी काम चलाई।। अरे0।।

महँगी भइलि बनरसी साड़ी कइसे कीनल जाई
मऊ वाली साड़ी पेन्हाइ कनियाँ भरमावल जाई।। अरे0।।

आँखि मूनि सरकार चलावे काने तेल डराई
केन्द्र प्रान्त सब चानी काटे, लोग जायं भरसाई।। अरे0।।

अरे हाय् हाय् रे महँगाई।

●●●

भोजपुरी जनपद

हमार सोनघाटी

❑ **अजय चतुर्वेदी 'कक्का'**

हमार सोनभद्र जिला जेकरा के आज उर्जांचल कहल जाला, कउनो जमाने में मीरजापुर जिला के दक्खिनी हिस्सा के रूप में जानल जात रहल। इहवाँ के रहै वालन के बहरी लोग–बाग दखिनहा कहैं, अउर बड़ा हिकारत से देखैं। लण्ठ–गवाँर समझैं। जब कि अइसन बात तब्बौं ना रहल, जब एहि क्षेत्र में उद्जोग–धंधा के बयारि तनिको ना बहल रहल।

उद्जोग–धंधा लगै के पहिलहूँ हमार सोनघाटी अपने प्राकृतिक सुषमा, आध्यात्मिक अउर इतिहासिक जगहा खातिर, पूरे देश में जानल– पहिचालन जात रहल। एक ओरी पूरा साल कल–कल छल–छल करत सोन, रेणु कनहर अउर बिजुल जइसन नद्दी त दूसरी ओरी 'अगोरी' और 'विजयगढ़' जइसन तिलस्म रहस्य से भरल किला। लोरिक के वीरता क बखान करत 'लोरिका–पथरा' त घामे में दूरे से हीरन– मणियन जइसन जगमग–जगमग करे। एक ओरी इहाँ–उहाँ पहाड़ेन में ना जाने कउने समय क केकर बनावल–बनवावल अबूझ सुरंग, गुफ्फा अउर चित्रन के लिपि त दूसरे ओरी गुप्त काशी के नाम से परसिध्द 'शिवदुआर' और माई ज्वालामुखी' क दिन–राति घंटा–घड़ियाल बाजत मंदिर। जंगलन में इहाँ–उहाँ कुदत–फानत जंगली जीव –जंतु त तरह–तरह के चिरइन के चहचह से गूँजत अकास, साँचो जंगल में मंगले रहल सोनघाटी में।

हाँ, एहमे दू राय ना कि इहवाँ के लोगन, विशेषकर जंगल–पहाड़न में रहे वाले आदिवासिन–बनवासिन के समने ओनकर आपन समस्या रहल। जँगल–पहाड़े में होतै का रहल? जे तनी ठीक–ठीक रहल, ओही के खपड़ा के घर–दुआर रहल। बाकी के बाँसे के थुन्ही पर घासी के छान्हीं । केतनौ गरमी पड़ै बरखा होखै, चाही पानी पड़े ,ओही में बितावै के रहल। न रस्ता न पैंड़ा । न पढ़ाई न लिखाई । न दवाई न ओखत। बर–बीमार भइला पर जंगली जड़ी–बूटी। काम कइ गइल त ठीक ना कइलेस त एकर मतलब केहू जादू–टोना टीपि देहलस या फिर भूत धई लेहलस। झाड़–फूँक शुरु। फिर त भगवाने मालिक। एहि पार या त ओहि पार । खेती–बारी के नाम पर जहाँ तन्नी–मन्नी जगहा मिलल उहाँ साँवा, कोदौ, जोन्हरी, मकई, उरदी, जौ, परबतिया, रहिला अउर तिल्ली बोइ गइल। जवन होइ गइल ऊ भागि से, ना भइल अभागि से। जीअइ के दूसरे अधार जंगल। सीजन में बइरि, मकोइ, जामुनि। बेसीजन में महुआ के लट्टा कूटि के खा! जंगले से लकड़ी काटि के बजारि में बेचि के नून–पिसान लिआवऽ अउर जंगली जानवर–चिरई मारि के खा। पानी पीये के नद्दी अउर झरना।

हाँ, मैदानी एरिया में अनाज–पानी कुछ जरूर पैदा होइ जात रहल। हर गावें में एकाध गो कुआँ–पोखरा रहल। इहवाँ के हालत ओतना बुरा ना रहल। खींचि–तानि के काम चलि जात रहल। एतना दिक्कति–कठिनाई के बादो आजु एहि क्षेत्र के बिकास भइले के बाद, जवन हालति बा ई हालति, तब ना रहल। न अतना लड़ाई, न झगड़ा, न चोरी, न डाका, न मार काट, न लुच्चई, न लफंगाई, न गुंडई। बड़ा सुकून अउर बहुत शांती रहल। बाद में एहिजा जवन उद्योग–धंधा लागल अउर ओकरे कारन एहि क्षेत्र के जवन बिकास भइल ओकरे मूल में रिहंद बंधा के नकारल नाही जाइ सकेला। रिहंद बंधा बँधाइल। चुरुक–डाला में सिरमिट फैक्टरी खुलल, ओबरा–रेनूसागर में बिजुली, रेनूकूट में अलुमुनियम अउर केमिकल करखाना खुलल। पता नाही कइसे ई पता लागि गइल कि एहिजा के

धरती में कोइला बा । फिर त धकाधक जंगल कटाये लागल। पहाड़न के ढकेलि–ढकेलि के नई–नई कोइला खदानि खुलत चलि गइलिंन। जवन ओइसन पहाड़ रहलन, ओन्हई तोड़ि–तोड़ि के बोल्डर, पटिया, गिट्टी अउर सोन–कनहर नदी के बालू के खरीद–बेची शुरू भइलि। ऊ दिन सोने में सुहागा जनाइल, जउने दिना एनटीपीसी के पहिला बिजुली के करखाना सिंगरौली के नाम से कोटा में खुलल, अउरी अब देसइ नाहीं बल्कि विदेसेउ क मनई एहि एरिया के जानइ लगलन। कल–कारखाना–व्यापार बढ़ति गइलि त देसइ नाहीं बिदेसेउ क मनई काम–धंधा–व्यापार करे आवइ लगलन। जहाँ रस्ता ना रहल उहाँ सड़कि बनत गइल। जहवाँ–जहवाँ उद्जोग–धंधा उहवाँ–उहवाँ कालोनी बनल अउर बनते गइल। कालोनी बसल त पढ़इ– लिखल खातिर स्कूल–कालेज खोलल गइलि। मनोरंजन बदे कलब अउर दवाई–ओखत बदे के डक्टरी खोलाइलि। कस्बा बजारि अउर बजारि शहर के रूप लेति चलि गइलि। आव–जाये खातिर गाड़ी मोटर चले लागल। रेलि गाड़ी बढ़ि गइलि। बहरी के साथ–साथ इहवाँ के रहवैयन के भी जे जइसन लिखल–पढ़ल काम धंधा मिले लागल। कमाई क जरिया मिलल त खेती–बारी अउर बने–जंगले पर टिकल जिनगी के थोड़ा राहत मिलल। जउने से जीवन स्तरो में थोड़–बहुत बदलाव आवत गइलि। लोग–बाग पढ़इ–लिखइ लगलन। सिच्छित, समझदार अउर जागरूक होत गइलन। सरकार के संघे–संघे एनटीपीसी, एनसीएल अउर हिण्डलको जइसन कल–करखाना अपने सामाजिक जबाबदेही तरे इहवाँ के बने–पहाड़े अउर दूर–देहात में रहे वालन पर धियान देबे लागल अउर अजुओ देत हवँ। स्कूले–अस्पताल अउर रोजिगार–बिकास के अवसर मुहैया करावत हौवँ। सिच्छन– परसिच्छन देत हौवँ। अब इहवाँ के भी लइका–लइकी पढ़ि–लिखि के इंजिनयरिंग, डाक्टर अउर भारतीय प्रशासनिक सेवा में आवइ लगलन।

एहि सब के बादो ई कहइ में तनिको गुरेज ना कि एक ओर बिकास भइल त दूसरे ओरी विनासो भइल। उद्जोग–धंधा में बहरी लोगन के संघे कुछ गड़बडो लोग धमकि अइलन। लूट–घोटाला शुरू हो गइल। नोटि कमाये खातिर गुंडा–माफिया आ गइलन। बर्चस्व क लड़ाई, अउर मार–काट ओनकर पुस्तैनी जंगल काटि गइलि। पहाड़ ढ़केलि दिहल गइल। ओनके जीविका के अधार छिनइले के संघे–संघे ओनकर शांति–सुकूनो छिना गइलि। केहू केतनौ हाँके, लेकिन ई साँच बा के ओनकर जेतना छिनाइल, ओतना आजु ले ना दियाइल। ऊपर से परदूसन के चलते, तरह–तरह के रोग–व्याधि फैलि गइल। जेकर जमीन छिनाइल, केहु–केहु के घरे एकाध मनई के छोट–मोट काम –धंधा दियाइल, लेकिन ओकरे बाद! एहिजा के लोगन के करेजा पर बिजुली त धौकंति बा, बाकि घरे में ढिबरी के ठेकान ना बा। कहीं खंम्भा बा, त तार नाहीं, कही तार अउर खंम्भा बा त बिजुली नाहीं।

एक बेर फिरि उहे बाति के एनटीपीसीनसीएल और हिण्डलको जइसन करखाना वाले अपने सामाजिक जबाबदेही तईं, इहाँ के रहवासिन खातिर पूरा धियान देत हउवें बाकी ओनहूँ के एक सीमा बाय। ओकरे बहरे न ना न करिहैं। करत त हौ बाकि जवन करत हौ, ऊ काम भरे के ना साबित होत हौ। जेतना करत हौ, ओतना ऊ लोगन तक पहुँचि ना पावत हौ। ना जानी कहाँ बिच्चइ में अटकि जात हौ कि लुट–पिट जात हौ। कुलि मिला के ऊँटे के मुँहे में जीरा साबित होत हौ। आजु जरूरत एहि बात के हौ कि एहि क्षेत्र क दोहन कइ के, जेतना देश के समृध्द कइल जात हौ, ओही अनुपात में एह एरिया, अउर एहिजा के रहवासियन पर खरच कइल अउर बिकासो पर धियान देबे के चाही। प्राकृतिक भा नैसर्गिक न्याय इहे होई।

●●●

लघु कथा

आखिरी ब्रत

❑ विनोद द्विवेदी

छठ क दउरा आ ऊखि कान्ही लिहले लड़िका आ घर क सवाँगन का संगे दीया आ लोटा क जल लेले भूखल–पियासल मेहरारून के झुन्ड। गंगाजी गाँव से दू अढाई किलोमीटर दूर रहली। हमहूँ अपना घर का मेहरारून–लइकन का सँगे छठी मइया के महातम के गीत सुनत घाट पर पहुँचल रहलीं। डूबत सुरुजनरायन के पूजा, स्नान– अरघा आ घाट पर लहरत राग... 'ए गंगा मइया आपन अररिया जो दिहतू त बेदिया बनइतीं.........!' 'छठी मइया तोहरी सरनिया...... एगो बेटा जो दिहतू ए छठी मइया दउरा उठवइतीं.... हो छठी मइया उखिया ढ़ोवइती.......।' हम लहरन पर बहत सैकड़न गो असरा क जरत दिया देख के मंत्रमुग्ध रहलीं कि पूजा खतम हो गइल। केहू दउरा आ ऊखि उठा के गीत गावत जात रहे, केहू अभी जाये के तेयारी में रहे। हमरो घर क लोग चल दिहल पाछा–पाछा गीत सुनत हमहूँ चल दिहनी। गोड़ बालू में धँसल बन भइल त ऊँच खड़ा अगर अरार क चढ़ाई आ गइल। भूखल पियासल बरती मेहरारून क पसेना छूटत रहे। कपारे दउरा आ कान्ही पर ऊखि सम्हरले एगो बुढ़ाह मेहरारू डगमगात हमरा अगवें गिरे लागल त हम सम्हारे के कोसिस कइलीं आधा चढ़ाई बाकी रहे, दउरा थमलीं तबो ऊ ठेहुना का भरे गिरिये परली, कान्ही क ऊखि छिटा गइल। ऊखि उठावत, उनकर मुँह देखनी त चिहा गइनीं, 'अरे', मुन्ना जी क माई? ....पुछलीं,' मुन्ना आ उनकर मेहरारू कहाँ बा लोग?' अतना लायक रहितन मुन्ना त का पूछे के रहल हा? उनका आँखि से लोर ढरके लागल। केहू तरे अपना के सम्हारत उठली, खाली उपराँ ले दउरवा पहुँचा द ए बबुआ मुन्ना मेहरारू का कहला में बाड़न, उनहीं खातिर नू ई ब्रत........ ऊ फेरू रोवे लगली, हम अरार का ऊपर आके दउरा उनके दे दिहलीं, ऊ आँचर से आँसू पोंछत कहली, 'जाये द निबुका दिहनी...अब हमार ई आखिरी ब्रत हऽ..... जियब तबे नू!' ऊ जबर्दस्ती मुस्कियाये के कोसिस कइली आ पाछा से आइल मेहरारून का झुंड में समा गइली मेहरारू गीत गावत रहली स.... 'एगो बेटा जो देतू ए छठी माई, त दउरा ढोवइतीं आ उखिया ढोवइतीं हो...।'

●●●

गान्ही बाबा के चशमा

❑ राजगुप्त

होत फजिरे टहले खातिर घर से बहरि अइलीं। शहर के बीचो–बीच चउक में एगो नन्ही मुकी अंगुठी के नगीना अस फलवारी बा। जवना के नाव शहीदा पार्क हवे। मन में हटले के ललसा जागल। जे अचार खइले बा, ओकरा मन चटनी से ना भरे । ओकरा बादो सोचलीं आजु एइजे सही। हम शहीद पार्क में ढुकि गइलीं सीधे गाँधी बाबा के मूरत लउकल। पार्क के सोझा घर होखला के कारन रोज फइलवें से गाँधी बाबा के दर्शन से आत्मा जुड़ात रहल ह। आजु के दिन सोझहीं बाबा के देखते थथमि गइलीं। लागल उहां के मूरत में से अँजोर निकलता । हम चिहा गइलीं। कान में आवाज पड़ले। '' भाई! तनी हमरी लगे आवऽ।'' कवनो भूत–बैताल त इहवाँ रहेला ना, रहित त चमाइन से ढीड़ न छिपित । काहें से कि एही शहर में बाप दादो केतना बरिस से रहत रहले, कईगो बलिया दहल बहल। हम त घाटी–बाढ़ी बहत्तर वरिस से बलिया में बसल बानी। मुँहा मुँहे जरूर बाति फइलल रहित। फेरू इ आवाज कहां से आइल हऽ? भकुआइल चारू ओरि तकलीं। कान ओहि सुनली। फेरू उहे आवाज, 'ए भाई! तनि हमरी लगे आवऽ? तब जाके पति अइलीं । जरूर बाबा के मूरत में से आवाज तांबा पीतर के पइसा अस चुम्बक में खीचा गइलीं। लगे चोहँपते बाबा बोलले, ''हमरा चशमा

उतारि के हमरी कान में रूई खोंसि दऽ भाई।'' बाति सुनि भकुआ गइलीं। संकुचाइल कहलीं हम कवन अइसन गलती कइले बानी कि हमके अइसन सजाइ दे तानी। जो केहू चश्मा उतारत देखी भा जासूसन से पता लागि जाई कि फलाने बाबा के आंखि पर से चश्मा उतरले बाड़े त हम कहीं मुँह देखावे लायक ना रहि पाइब। लोग हमार हड्डी पसली एक कऽ दी। रोवां केने उड़िया जाई, पतो ना चली। लमहर सांसि लेत इची थीर होत कहलीं, हमके पहिले एतना बता दीं कि आपन चश्मा उतारे के अनभल बाति काहें कहऽतानी?' बाबा बोलले, ''पानी–बिजुली, सफाई, धुरि–धुवाँ अतियाचार के खिलाफ मुर्दाबादी नारा के शोर सुनत–सुनत कान पाकि गइल बा। अनेति देखत–देखत आंखि पथरा गइल बा। अब अउरी आगा कुछ देखब त चश्मा चटकि जाई। दू अक्तूबर के पहिले भले केहू ना पूछे। चश्मा चटकला पर बवाल हो जाई। आपुसे में केतना लोग कटि मरि जाई, पी.ए.सी. बवाल ना समहारि पाई, ओकरा बाद समस्या सझुरावे खातिर सरकार दोहरउवा हमके चश्मा पहिरा दी। फेरू बैतलवा ओही डारि। अंग्रेजन के अनेयाय के विरोध में आन्दोलन कइले रहलीं। अब सब कुछ सपना हो गइल। तबके सज्जी ताकत अब हमरी पत्थर के मूरत में सीपा का मोती अस बन्द हो गइल बा। मूरत में मढ़ला आ फोटो में सजवला से आदमी करतबहीन, अब्बर आ देखाऊ शाह के डाल हो जाला।'' बाबा के बाति सुनि–गुनि–बूझि के कहली। हम एह बेरा राउरा दूत बनि के जा तानी। जनता–नेता अफसर आ पढ़वइन से रउरी सवाल के जवाब लेके आइब। अकेला चना भाड़ ना फोड़ेला। 'बाबा क समस्या ' सभा सोसाइटी में रखली महल्ला–महल्ला घुमलीं, सवचलीं विद्वानन के भाषण सुनि इसकूलन में झख मरलीं,' जेतना मुँह, ओतना बाति' । कत्तो मन ना भरल। बड़ा फेरा में पड़लीं। हारि थाकि के एक दिने फजिरे शहर के शहीद पार्क में चोहँपि के बाबा के मूरत के आंखि में आपन आंखि डालि के धेयान में डूबि गइलीं। जे दरद देले बा, उहे दवाई दी। चमत्कार भइल। बाबा के तीन गो के बाति याद आ गइल। बाबा अकसरूआ बाड़ो एही से एतना बाति सोचत बाड़े। बाउर ना बोलीं, ना सुनीं आ ना देखीं। अपना तीनों संघतियन के उनकर सवाल के जवाब मिलत रही। तीनिगो बानरन के मूरत उनुका लगे बइठावे के बाति सोचि के शहीद पार्क समिति के अध्यक्ष से आपन सुझाव रखलीं। ऊ कइसन दो मुँह बना के कहलें '' तहरा ईहे कुलि फितूर समाइल रहेला। खैर ई बात अब समिति क मीटिंग में रखाला पर सरबसहमति से नू पास होई । तले बाबा के ओहीं तरे कँहरे दऽ!!'' ●●●

गीत

बोलन लागे डारे डारे.......

❑ आनन्द संधिदूत

टप–टप चुए जइसे भरि मधु कोठिला
बोलन लागे डारे–डारे कूहु–कूहु कोकिला!

कहेली तपन जरि, कवन कहानी
सीता के बिरह, कि बिरह राधारानी
कान रोपि सुने जेके मथुरा से मिथिला!

कागा संगे दूध–भात इचिको न छुअली
राजा घरे सोना के पिंजरवा न बसली
कवन दरद हरे–हियरा के होसिला!

काहें मारे गभिया हुँकारी बोली–बरछी
बि हँसेली मैना कि सुगवा नकलची
कवना बिरोधी का बिबेखे चितबेहिला!

कइसन दिन रे, बन्हक परे सँसिया
बूँद–बूँद कहाँ जरे अगिन–पियसिया
कवना पिरितिया के सझुरे न ममिला!

पुस्तक -चर्चा

अथ लुकाठी कथा : (कविता संग्रह) बरमेश्वर सिंहः भोजपुरी संस्थान इन्द्रपुरी, पटना (बिहार): संस्करणः पहिला 2012, मूल्य एक सौ रूपया मात्र

बरमेश्वर सिंह व्यंग्य आ आक्रोश के सिद्धहस्त रचनाकार हवन। इनकर कविता संग्रह 'अथ लुकाठी कथा' में इनकर ई लुआठी तेवर वर्तमान बा। एहिजो दँत–चिआरी, टिपुना–चुआई आ रुढ़ियन के धूम स्वागत नइखे, ना विचारधारा के रेत पर सन बाथ करत लँगटे–उघार तन के बदमिजाज ढेंकार बा। एहिजा जवन बा ऊ खाँटी बा– कमजोर होखे तब, बरियार होखे तब –सब अपना 'ओरिजिन' आ 'ओरिजिनल' के संगे। 'अथ लुकाठी कथा' में घर, परिवार, नाता–रिश्ता, राजनीति, नीति, धर्म, कर्म–लोक व्यवहार सब आ गइल बा। आदमी आ जे आदमी ना कुछ अउर बा के अंतर के रेखाकिंत करे वाली कविता बरमेश्वर सिंह के पासे कम नइखे। 'परिचय', गिद्ध, 'हामासुमा के समय में' 'जंगल के बेटी' जसन कवितन में आज के समय के बरक्स मानुष आ अमानुष के गति, यति आ स्थिति के अभिव्यंजना बा। आदमी के लाचारगी पर कवि के दृष्टि ऑब्जेक्टिव बाः

बाकिर, जतना जे आदमी मिललें
ओह में / कुछ नपुंसक रहलें
कुछ उभयलिंगी
बाकी जे सही–सही आदमी बचलें
ऊ बहुत लाचार रहलें
जमाना के मार से
भा क्षुधा भार से। (आदमी पृ0–64)

'अथ लुकाठी कथा' के कविता अतुकांत बाड़ी स, लयहीन ना। इहाँ विचार– आचार, तोपल– प्रचार, सृजन–संहार– सब क बात कइलो पर आदमियत के संस्कार नइखे छुटत। झनकहवा बाबा (जिनकर मन हृदय अत्यंत मृदु बा) के अनुभव अस बरमेश्वर के कविता हर घरी आदमी के समझावत रहत बा कि ऊ शैतान मत बनो आ अइसन करत खा ऊ कबो–कबो खतरा के निशान पार करे के अछरँगो उठावे में नइखे हिचकत–

आ एगो हई हुसैन बाड़े
भोजपुरी खातिर पीड़ित
हुलकि–हुलकि के देखत बाड़े
हिन्दुअन के फुसरी
बाकिर, नइखे लउकत इनका
आपन भकन्दर/अल्लाह रहम करसु
एह नयनसुख पर (कइसन कइसन हुसैन पृ.99)

बोतलदास के बयानः रमाशंकर श्रीवास्वत : एजुकेशनल बुक सर्विस दिल्ली (भारत) : प्रथम संस्करणः 2013 मूल्यः 400.00 रूपये

डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव के भोजपुरी उपन्यास 'बोतलदास के बयान' एगो त्रासद व्यंग्य ह, जेकर व्यंग्यात्मकता एगो शिक्षा में समाप्त होता। उपन्यास के अंतिम पैरा द्रष्टव्य बा–'बाबुजी के बर्बाद जिंदिगी

से हमरा आपन जिनिगी के सँवारे के सीख मिल गइल। अब हमरा खानदान में केहू दोसर बोतलदास ना जनम लिहें। जे बोतल के ओर हाथ बढ़ाई ओकरा से कहल जाई कि शराब छुए के पहिले तू हई 'बोतलदास के बयान' पढ़ लऽ।' (पृ.138) किताब के अंत में 'ऐसी है शराब' शीर्षक से जवन जानकारी उपलब्ध करावल गइल बा ऊ बढ़िया से उपन्यास के उद्देश्य जाहिर कतर बा। विश्व–साहित्य में शराब के पृष्टभूमि पर कुछ क्लासिक रचना आ चुकल बाड़ी स। शरतचन्द्र के शराबी 'देवदास' के कथा जग जाहिर बा। लेव टॉल्सतोय के एगो कहानी 'छोटा शैतान आ किसान के रोटी' (The Imp And the Peasant's Bread) में शराब के बारे में कहल गइल बा कि 'पहिला कप में आदमी शराब के पिएला, दूसरा कप में शराब शराब के पिएले आ तिसरा कप से शराब आदमी के पीए शुरु क देले।' कहल जा सकत बा कि 'बोतलदास के बयान' जइसन रचना के आवश्यकता भोजपुरियो में रहे।

'बोतलदास के बयान' 'हम' शैली में लिखल गइल बा आ बाप के अधूरा लेखन उनकर बेटा पूरा करत बाड़े, एह से कथा प्रवाह में एकाध जगह उढुक लगला अस बुझाता, बाकिर अंत आवत–आवत कथा से पाठक क सहज सटाव हो जाता। उपन्यास के भाषा सहज आ लटका झटका से दूर बा। छपाई साफ सुथरा आ गेट अप नीक बा। वर्तनी के समरूपता पर ध्यान दिहल चाहत रहे।

● चर्चाकार– विष्णुदेव तिवारी

'बरमूदा तिकोन' (कहानी संग्रह) कृष्ण कुमार, मूल्य 200/–
सावित्री शिक्षा सदन, महावीर स्थान, करमनटोला आरा (बिहार)

एगारह गो भोजपरी कहानियन के संग्रह 'बरमूदा तिकोन' नारी विमर्श से जुरल गँवई परिवेश के जियतार अंकन करे वाला कहानी–संग्रह बा। पत्र –पत्रिकन में, कथालेखन के क्षेत्र में तेजी से उभरल कृष्ण कुमार के ई संकलन भोजपुरी कथा साहित्य में, नया संभावना जगावत बा। एमे शामिल हर कहानी के आपन खास कथाभूमि बा आ कथाकार के कहानी कहे के आपन खासियत। लिपिकीय आ टंकण के त्रुटियन के छोड़ के भाषा का बिनावट का दिसाईं कथाकार जागरूक बा। संग्रह के हर कहानी पढ़े–गुने जोगे बाड़ी सन।

'अनसोहातो (कविता–संग्रह) तैयब हुसैन 'पीड़ित मूल्य 125/– शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कालोनी, महेन्द्रू, पटना– 06

भोजपुरी के वरिष्ठ रचनाकार तैयब हुसैन 'पीड़ित' के कहनाम (भूमिका में) बा कि '' कविता अपना समय के सरोकार के मार्मिक ढंग से उठावेली, सामाजिक असंगतियन में हस्तक्षेप करेली। कविता कवनो घटना के तात्कालिक प्रतिक्रिया ना ह, ऊ ओकर निः संग आ कलात्मक सृजन ह।'' अपना कथन के कविता में उतारे के उनकर प्रयास ' अनसोहातो ' का छन्दबद्ध आ मुक्त कवितन में देखे के मिलल बा। दोहा बहुत सटीक बनल बाड़न स। भोजपुरी कविता पढ़े वालन खातिर ई किताब महत्व क बिया।

'पतझड़ के फूल' (कविता संग्रह), नन्द किशोर मतवाला मूल्य 125/– भोजपुरी परिषद, साहेबगंज, पो0 करनौल, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार)

मूलतः नाटककार नन्द किशोर मतवाला भोजपुरी में चार गो नाटक देले बानी। 'पतझड़ के फूल' उनकर अइसन कविता संग्रह हऽ जवन अबले प्रकाशित ना रहल ह। अपना जीवन काल के समय–सन्दर्भ से टकरात, उनका संवदेन के प्रतिक्रिया एह कवितन में देखे लायक बा। व्यंग्य में ठेठ अन्दाज बा। समाज

आ व्यवस्था के लेके कवि के आपन सीघा सरल टिप्पनी, अक्सर कवितन में उभरल बा। संगति आ आंतरिक कसाव से संग्रह अउर निखरल रहित।

'गाँव कऽ बात' (कहानी संग्रह) विजय शंकर पाण्डेय, मूल्य 150 पिलग्रिम्स पब्लिशिंग बी–27/98, ए–8, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

साफ सुथरा, आकर्षक गेट अप आ छपाई वाला एह कहानी संग्रह क बड़हन खासियत ई बा कि ई पढ़वइया के पढ़े बदे न्यौतत लउकत बाड़ी स। भोजपुरिया गँवई समाज के कठिनाई, पिछड़ापन, गरीबी, मानसिकता, अशिक्षा आ विंसगतियन पर नजर डालत, कहानीकार विजय शंकर पाण्डेय नकारात्मक पक्ष से बचे क कोसिस करत लउकत बाड़न। उनकर कहानी एह माने में रचनात्मक बाड़ी स कि ऊ भरसक 'ट्रीटमेन्ट में सकारात्मक पक्ष के चुने क प्रयास करत बाड़न। भोजपुरी के समृद्ध कथा–साहित्य में, 'गाँव कऽ बात' के स्वागत बा एह बदे कि पाण्डेय जी में कथा सिरिजे के संभावना बा।

भंडार घरः जयकान्त सिंहः राजर्षि प्रकाशन; मुजफ्फरपुर (बिहार): संस्करण प्रथम, 2013: मूल्य पचास रुपया

डॉ0 जयकांत सिंह के एह किताब में उनकर कुछ कहानी आ लघुकथा जे अस्सी नब्बे का दशक में भोजपुरी पत्र–पत्रिकन में छप चुकल बाड़ी स, संग्रहीत कइल गइल बाड़ी स। ई किताब लेखक अपना दिवंगत पुत्र ईशु के समर्पित कइले बाड़न।

'लिखल बा' (प्रहसन संग्रह) मदन मोहन श्रीवास्तवः जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद; झारखंड प्रथम संस्करण 2013 मूल्य : 75/— रूपये मात्र।

आठ गो प्रहसनन के संग्रह 'लिखल बा' भोजपुरी साहित्य में एह विधा के कमी दूर करत बा। मूलतः ई प्रहसन पारंपरिक आ श्रुति परंपरा से भोजपुरी लोक में कथा उपकथा के रूप में पहिले से मौजूद रहल बाड़े। लेखक इहनी के आधुनिक संदर्भन से, जोडे के कोशिश करत लउकत बा। 'मुरुख चेला', 'हम केकर मउसा हईं' आदि प्रहसन के कथा त बच्चा–बच्चा के जबान पर मौजूद रहल बा।

भोजपुरी संस्कृति के प्रतीक पुरुष रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' व्यक्तित्व आ कृतित्वः नितेश कुमारः राजर्षि प्रकाशन, मुजफ्फरपुर (बिहार) संस्करण प्रथम 2013: मूल्य 200/

ई किताब लेखक द्वारा स्नातकोत्तर अंतिम बरिस में लिखल लघु–शोध प्रबंध' के परिमार्जित आ संशोधित रूप ह। किताब मुख्य रूप से पाँच अध्याय में बँटल बा। अंत में भोजपुरी के कुछ विद्वानन के पत्र जवन ऊ लोग विकल' जी के लिखले रहल, प्रकाशित बा। भोजपुरी पत्र पत्रकारिता आ साहित्यकारन के पूर्ण प्रामणिक जानकारी के अभाव का बावजूद, 'विकल' जी का संदर्भ में उपयोगी पुस्तक बा।

भोजपुरी गद्य–साहित्य स्वरूप –सामग्री समालोचनाः डॉ जयकांत सिंहः राजर्षि प्रकाशन, मुजफ्फरपुर(बिहार): संस्करण प्रथम – 2013: मूल्य–250/

जयकांत सिंह के ई किताब भोजपुरी गद्य साहित्य के स्त्रोत, स्वरूप आ संभावना पर पारंपरिक ढंग से बात करत बिया। भोजपुरी साहित्य के उद्‌भव आ विकास में रूचि राखे वाला लोग के एह में नीक सामग्री मिल जाई।

भारतीय आर्यभाषा आ भोजपुरी :डॉ जयकान्त सिंहः राजर्षि प्रकाशन; मुजफ्फरपुर (बिहार) संस्करणः प्रथम 2013ः मूल्य 300/

एह पुस्तक में दस गो निबंध शामिल बाड़े स, जेकरा में संसार के भाषा–परिवार आ उहनी के आपसी सम्बन्धन के चर्चा कइल गइल बा। भोजपुरी के पड़ोसी भाषा मैथिली, मगही, अंगिका आ बज्जिका पर पढ़नउक सामग्री के साथे 'भोजपुरी आ छतीसगढ़ी के अर्न्तसम्बन्धो पर विद्वतापूर्ण विचार कइल गइल बा। भाषा–विज्ञान में रूचि राखे वाला लोगन खातिर ई किताब उपयोगी बा।

अंगना महुआ झरलः गंगा प्रसाद 'अरूण' जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर (झारखंड)ः प्रथम संस्करण 2010ः मूल्य :100/–

भोजपुरी के पैंतालीस गीतन के सुघर संग्रह 'अगना महुआ झरल' गंगा प्रसाद 'अरूण ' के काव्य विवेक, भाव–संवेदन आ रस– बोध क सहज प्रमाण बा। प्रेम, प्रकृति, समाज आ ओकरा विसंगतियन के एमे संकेतिक ढंग से उकेरल गइल बा।

जब तोप मोकाबिल होः डॉ0 अरुण मोहन 'भारविः अरूणोदय प्रकाशन, बक्सर (बिहार) संस्करणः पहिला, 2013ः मूल्यः स्पष्ट नइखे

ई किताब बक्सर के सांस्कृतिक आ साहित्यिक हलचलन के एगो सुघर दस्तावेज बा। एह में, भोजपुरी पत्रिकन में भिन्न–भिन्न समय पर छपल रपटन के चुन–बिन के संगेरल गइल बा। लेखक एह रपट–संग्रह के भोजपुरी के पहिला रपट–संकलन के संज्ञा देले बा । आगे आवे वाला समय में एह किताब के मूल्यवत्ता सिद्ध होई।

मुट्ठी भर भोरः डॉ0 अरुण मोहन 'भारवि' (कहानी संग्रह) अरुणोदय प्रकाशन, बक्सर (बिहार)ः संस्करण पहिला, 2013 मूल्य 300/– (सजिल्द)

एह किताब में डॉ0 भारवि के कहानी आ लघुकथा शामिल बाड़ी स। 'पासा पलट गइल' नाँव से एगो कहानी कहानीकार के सहधर्मिणी श्रीमत नीलम, भारवि के संग्रहीत बा। सहज सुभाविक भाषा में सृजित भारवि के कहानी भोजपुरी भाषा के बल– बेंवत के पहचान प्रस्तुत करता, खास कर एकरा अभिधेय संवेदना के।

'कथा– मंजूषा'; संपादक द्वय कन्हैया सिंह सदय/ विष्णुदेव तिवारीः जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद' जमशेदपुर (झारखंड)ः प्रथम संस्करणा 2013 मूल्य 200/ रूपये (साधारण संस्करण) आ 250/– रूपये (पुस्तकालय संस्करण)

21 कहानीकारन के कहानियन के ई संग्रह, नया आ पुरान दूनों तरह के रचनाकारन के सँगेरले बा। भूमिका लेखक कन्हैया सिंह 'सदय' 7 संकलित कहानियन के अर्थवत्ता सिद्ध कइले बाड़े, जबकि डॉ0 अशोक द्विवेद्वी 'प्रस्तावना' में कहानी विधा के रचना विधान पर शास्त्रीय रूप से विचार करत ना खाली एकरा के अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनावत बाड़े, बलुक सामान्य पाठक के सामान्य ज्ञान के बढ़ावत ओकरा के विस्तारो देत बाड़े।

● **चर्चाकार– सान्त्वना, सुशील कुमार तिवारी, हीरा लाल 'हीरा'**

सांस्कृतिक समाचार

भोजपुरी साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश के एगो गरिमामय आयोजन

बिहार–उत्तर प्रदेश के बड़ भूभाग क मातृ भाषा भोजपुरी के उत्तर प्रदेश में आजु ले अकादमी ना बनल बाकिर दिल्ली आ अब मध्य प्रदेश में कार्यरत भोजपुरी अकादमी, 'भोजपुरी' अस्मिता के महत्ता सकारत बिया।

भोपाल में आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक संगोष्ठी में, बोलावल गइल ''पाती'' पत्रिका के सम्पादक डा0 अशोक द्विवेदी का अनुसार, अकादमी के निदेशक श्री नवल शुक्ल अउर संयुक्त सचिव श्री राम तिवारी 'भोजपुरी भाषा–साहित्य आ भोजपुरी लोक– कला–संस्कृति से जुड़ल जवन आयोजन अपना समर्पित सहयोगियन का साथे मिलके कइल लोग ओकर जतना बड़ाई कइल जाव, कम्मे बा।

'' 15 सितम्बर 2013 से 16 सितम्बर 2013 तक दू दिन चलल वैचारिक, आ रचनात्मक विमर्श वाली संगोष्ठियन के तीन सत्र का अलावा कबीरदास के पद गायन आ दादरा ठुमरी कजरी के शास्त्रीय गायन से ई पूरा आयोजन अकादमिक आ गरिमापूर्ण लागल। कबीर पंथी साखी–पद गायक संत रामप्रसाद के मीठ–करुण उदबोधक गम्भीर स्वर, खँजड़ी आ झाल पर सुनला के एगो अलगे आनन्द रहे, जवन हर संगोष्ठी का पहिले सुने के मिलल। साँझि के रामप्रसाद जी पदगायन का बाद सुश्री रीता देव–के गायन भइल। उनका साथ हारमोनियम, तमूरा, तबला पर संगत करे वाला अउर साथी रहे लोग।

विचार संगोष्ठी के विषय रहे–''भोजपुरी साहित्य का परिदृश्य और विस्तार'', ''समकालीन भोजपुरी साहित्य'' अउर ''भोजपुरी लोकसंगीत एवं कलाएँ'' जवना में क्रमशः डॉ0 अरूणेश नीरन, डॉ0 ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, डॉ0 ज्योतिष जोशी, डॉ0 सदानंदसाही, अशोक द्विवेदी, तैयब हुसैन, हरिराम द्विवेदी, प्रकाश उदय, बद्रीनारायण, रवीन्द्र त्रिपाठी, मनोरंजन ओझा, सुश्री आशा सिंह आदि लोग विचार विमर्श कइल। कार्यक्रम का सुरूआत में बोलावल गइल एह अतिथियन के, शाल, नारियल, आ फूलन क गुलदस्ता से स्वागत सम्मान भइल। मध्यप्रदेश भोजपुरी अकादमी स्वागत–सत्कार, रहे खाये के साथ साथ ले आवे आ पहुँचावे के अति उत्तम बेवस्था कइले रहे।

भोजपरुी आ भोजपुरियन खातिर भोपाल अकादमी के ई सुरूचि संपन्न–अकादमिक आयोजन कई माने में अपना सांस्कृतिक निष्ठा आ समर्पन के छाप छोड़त नजर आइल।

●●●

Anjoria.com

पहिलका भोजपुरी वेबसाइट